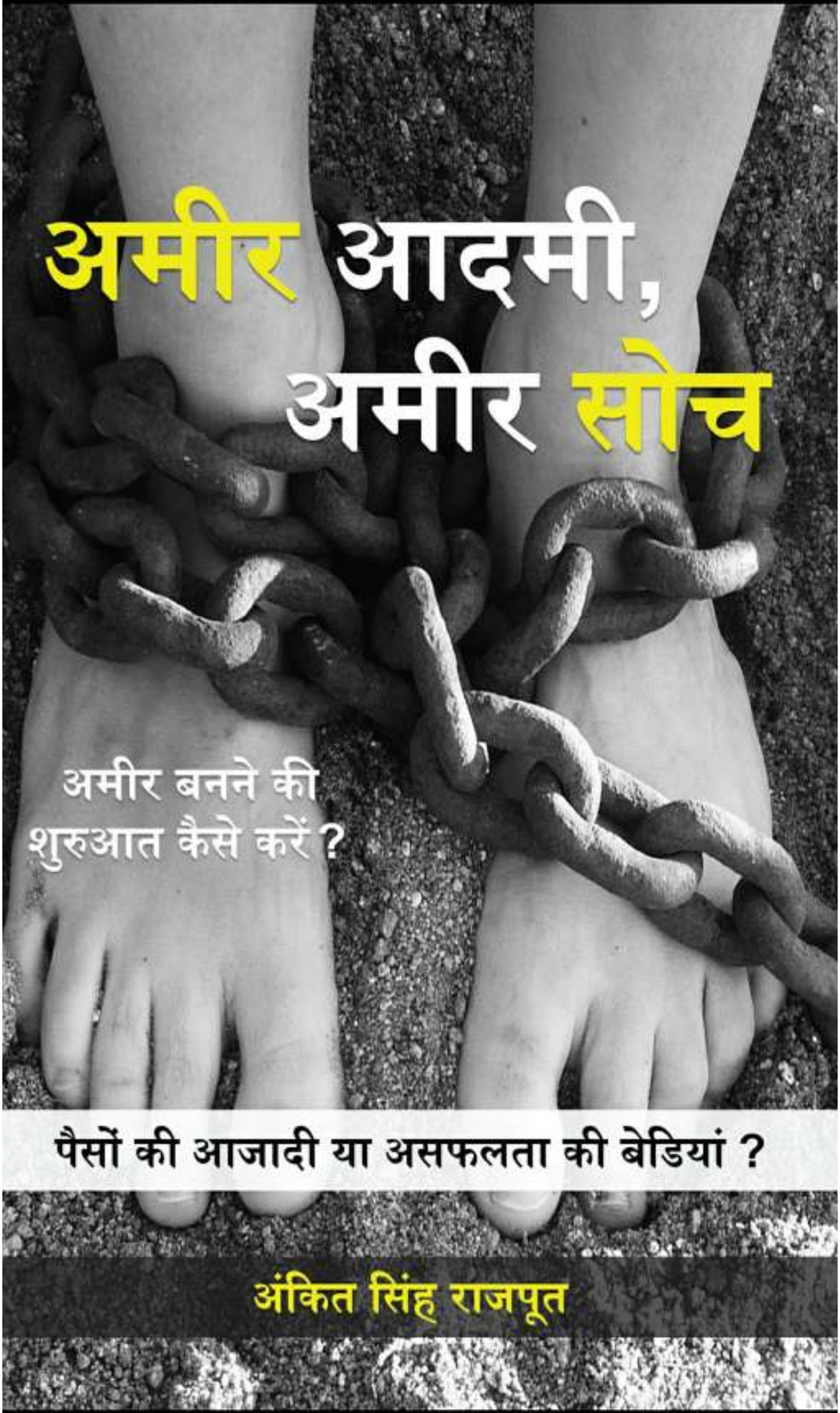
अमीर आदमी,
अमीर सोच
अमीर बनने की
शुरुआत कैसे करें ?
पैसों की आजादी या असफलता की बेडियां ?
अंकित सिंह राजपूत

अमीर आदमी,

अमीर **सोच**

अमीर लोग अमीर बनने के लिए शुरुआत कैसे करते है

जिससे वो आम आदमियों से ज्यादा पैसा कमातें है ?

अंकित सिंह राजपूत

अमीर आदमी, अमीर सोच (Rich Man, Rich Think)

Copyright © 2019 by Ankit Singh Rajpoot.

All rights reserved. No part of this book may be used or reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the author except in the case of brief quotations em- bodied in critical articles or reviews.

The Author specifically disclaim any liability, loss or risk whatsoever and to whomsoever, personal or otherwise which is incurred or likely to be incurred as a consequence, directly or indirectly of the use and/or application of any of the contents of this book.

For information contact :

Ankit Singh Rajpoot

Kesli, Sagar, Madhya Pradesh

First Edition: February 2019

Contents

समर्पण

प्रस्तावना

अध्याय - 1

अध्याय - 2

अध्याय - 3

अध्याय - 4

अध्याय - 5

अध्याय - 6

अध्याय - 7

अध्याय - 8

अध्याय - 9

अध्याय - 10

अध्याय - 11

अध्याय - 12

अध्याय - 13

अध्याय - 14

अध्याय - 15

जीवन का फलसफा

लेखक के बारे में

समर्पण

इस बुक के लिए मैं अपनी मम्मी का तहें दिल से आभारी हूँ | जिन्होंने इतनी मुसीबतों के बाद भी एक छोटे से शुरुआत कर जहाँ अपनी पहचान बनाई, वहीं मुझें भी इस काबिल बनाया कि आज मैं अपनें सपनों को वो पंख दे सकूं, जो उन्हें सफलता की राहों पर आगे उड़ने में मदद कर सकें |

लोगों को यह यकीन नहीं होता कि कैसे कोई शून्य से उठकर सफलता के मुकाम तक पहुँच सकता है लेकिन मुझे इस बात पर यकीन करनें की जरूरत कभी भी महसूस नहीं हुई क्योकि मैंने बचपन से ही अपनी मम्मी को लाख मुसीबतों के बाद भी छोटे - छोटे सपनों को सजोकर एक सफलता का महल बनाते देखा है |

लोग मुझसे पूंछते है, क्यों तू अपनें सपनें को जीता है उनकों क्या पता मैनें अपनी मम्मी को सारे सपनें पूरें करतें देखा है | तभी मुझे विश्वास है, लाख मुसीबतों के बाद भी जो आगे बड़ते जाता है, उसके सपनें पूरें करनें को पूरा कायनाथ काम में जुट जाता है |

प्रस्तावना

सफल या असफल, आप क्या बनना चाहतें है ? एक ऐसा इंसान जो जिंदगी का अधिकतर समय सोने, खानें, शिकायतें करनें, टीवी देखनें और मोबाइल पर बात करनें एवं नौकरी करनें में बिताता है या एक ऐसा इंसान जो दुनिया में एक खास जगह रखता है | जिसका जीवन दूसरों के लिए मिसाल होता है | जहाँ वो लोगों को रोजगार देता है, वहीँ दुनिया को और बेहतर करनें के लिए अपना योगदान देता है | जहाँ आम लोग अपनी रोज की चीजों के लिए एवं पैसों की किल्लत से परेशान रहतें है, वहीँ यह लोगों की मदद करकें आनंदित होते है |

अभी तक आपने काफी अमीर लोगों के किस्से सुने होगें और यह जरुर सोचा होगा कि कैसे कोई इंसान एक छोटी सी शुरुआत कर सफलता के उस मुकाम को हासिल कर लेता है जहाँ पर उसकी बातें, उसका जीवन एवं उसकी गलतियाँ दूसरों को मार्ग दिखाती है और यह सोचनें पर मजबूर करती है कि, जब एक इंसान अपने सपनें को साकार कर सकता है तो मैं क्यों नहीं ? लेकिन जैसे रास्तें की लंबाई का अंदाजा बिना उस पर चले नहीं लगाया जा सकता, वैसे ही सफल व्यक्ति की सफलता के मध्य आने वाली कठिनाईयों का अंदाजा उनके जीवन के किस्से सुनकर नहीं लगाया जा सकता |

अगर आपकों सफल होना है, अमीर बनना है तो आपकों उस रास्तें पर चलना होगा और उन तमाम कठिनाईयों का सामना करनें के लिए तैयार होना

होगा जिनका सामना करकें ही बिल गेट्स, मार्क ज़ुकरबर्ग, जैक माँ, वारेन बफे, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, जेफ बेज़ोस, आदि लोग सफलता के उस मुकाम तक पहुचें जहाँ तक पहुचने के लिए अरबों लोग सपना देखतें है, मगर पहुच नहीं पाते |

दुनिया ऐसे उदाहरणों से भरी पड़ी है जो हमें यह बताती है कि, ***किस्मत चाहें लिखी जैसी हो, मैं लिखूंगा किस्मत को कुछ ऐसा जैसी मर्जी मेरी हो*** | आप चाहें किसी भी अमीर इंसान को देख लों उन्होंने लाख मुसीबतों के बाद ही सफलता का स्वाद चखा है लेकिन सफलता का यह रास्ता इतना आसान भी नहीं होता जितना हम समझतें है, इसी कारण इस रास्तें पर चलतें बहुत है, मगर मंजिल तक पहुचते बहुत कम है |

अगर आप वो ही गलतियाँ नहीं दोहराना चाहतें जो अधिकतर लोग दोहराते है तो आपका स्वागत है, एक ऐसे सुनहरें भविष्य में जो आपकें आज से बेहतर होगा लेकिन आप इसे तभी बेहतर बना सकतें है, जब आप आज से और अभी से इसकी शुरुआत करें |

अमीर बनने की शुरुआत करनें से पहलें आप अपने दिल और दिमाग से यह पूंछे कि क्यों आप अमीर बनना चाहते है और क्यों आपकों लगता है आप सफल हो सकतें है ? क्योकि दुनिया में शायद ही ऐसा कोई इंसान होगा जो अमीर नहीं बनना चाहता लेकिन ऐसे बहुत कम होंगे जो अमीर बनने के लिए कुछ करना चाहतें है, यह बुक ऐसे ही लोगों के लिए है जो अपनें सपनें को साकार करना चाहतें है |

लोग आगे बढ़ना तो चाहतें है लेकिन उन्हें यह नहीं पता होता आख़िरकार वो शुरुआत कैसे करें ? कैसे अमीरी की तरफ कदम बढ़ाकर अमीर बनें ? उन लोगों को इस दुविधा से निकालनें के लिए यह बुक लिखी गई है जिससे वो वह गलतियाँ न करें जो अधिकतर लोग अपनें जीवन में करतें है एवं उन्हीं गलतियों का परिणाम उन्हें आर्थिक तंगी और असफलता के रूप में भुगतना पड़ता है |

बस सपनें पूरें करनें का हौसला होना चाहिए, सपनें तो अपनें आप पूरे होते है। मुकद्दर के चक्कर में तो सिर्फ वो रहतें है, जिनमें अपनें सपनें साकार करनें के हौसलें नहीं होते। यदि तुझमें हे हौसला तो उठ खड़ा हो अपने सपनें साकार करनें के लिए, मुकद्दर भी उठ खड़ा होगा तेरे सपनें साकार करनें के लिए।

- अंकित सिंह राजपूत

अमीर या सफल इंसान बनने की शुरुआत

अध्याय - 1

आपके लिए सफलता क्या है ?

आपनें काफी मोटिवेशन वाली पुस्तकें पढ़ी होगीं और उनमें से ज्यादातर में यह बतानें की कोशिश की जाती है कि आप सफल कैसे हो सकतें है ? आप ऐसा क्या करें जिससे आप सफल हो जाएं ? लेकिन यहाँ मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि आपकें लिए सफलता के मायनें क्या है ? आप क्यों सफल होना चाहते है ? आपकी नजरों में सफलता क्या है ? जब तक आप यह नहीं जान लेते कि असल में आपकें लिए सफल होनें का मतलब क्या है जब तक आप सफल नहीं हो सकते |

इस पुस्तक की शुरुआत करनें से पहलें हमें यह पता करना जरुरी है कि हम सफल क्यों होना चाहते है ? जब आप यह खोज लेगें कि आपके लिए सफलता का मतलब क्या है तब आप बेहतर तरीकें से यह समझ पाएंगे की आख़िरकार अमीर अमीर बनने के लिए शुरुआत कैसे करतें है और ऐसा क्या करतें है जो हम नहीं करतें उसकें ? बाद आप जानेगें अमीर बनने के लिए आपकों कौन – कौन से कदम उठाना जरुरी है और आप यह कैसे करेंगें ?

सबसे पहलें आपकों अपने अंदर झाकना होगा और यह खोजना होगा की आपकें लिए सफलता के मायनें क्या है ? इस काम को आसान करनें के लिए मैं दो कहानियां बताऊंगा जो आपकी जिंदगी के इर्दगिर्द ही होगीं लेकिन किसी के लिए सफलता क्या है यह बतानें की कोशिश करेंगी | जिससे आप आसानी से यह खोज सकतें है कि आपके लिए सफलता क्या है ?

कहानी – 1

राम नाम का एक लड़का एक गाँव में रहता था | वो पढनें में काफी तेज था लेकिन उसके घर की हालत इतनी अच्छी नहीं थी कि वो किसी अच्छे स्कूल में जा सकें तो वो अपनें गाँव के एक सरकारी स्कूल में पढने जाने लगा | स्कूल के बाद वो अपने पापा की मदद खेती करनें में करता और जो समय बचा वो पढनें के लिए खर्च करता लेकिन ज्यादा पैसे न होने के कारण वो दूसरें बच्चों जैसा अच्छे स्कूल में न ही जा सकता था और न हीं कोई कोचिंग लगा सकता था |

राम अपनें मम्मी – पापा को रोज दिन– रात मेहनत करतें हुए देखता था लेकिन इतनी मेहनत करनें के बाद भी वो घर कुछ पैसे ही लेकर आते थे | जिनसे बस दो वक्त की रोटी ही बन पाती थी | वहीं दूसरें बच्चों के पापा सुबह काम पर जातें और शाम को आ जातें फिर भी उनकें घर में वो तमाम सुविधाएँ थी जो राम सपनें में भी नहीं सोच सकता था |

राम हमेशा यह सोचा करता था मेरे मम्मी – पापा हमेशा कहतें है बेटा मेहनत कर तू जितनी मेहनत करेंगा उतना ही बड़ा आदमी बनेगा लेकिन उसे सामनें देखकर ऐसा लगता था की उसके पापा और मम्मी इतनी मेहनत करतें है तो वो बड़े आदमी क्यों नहीं है ? यदि मेहनत करनें से बड़े आदमी बनते है तो शंकर के पापा जो आठ – नौ घंटे काम करतें है वो उनसें अमीर क्यों है ? राम ने आखिरकार उनसे पूँछ ही लिया आप इतना ज्यादा पैसा कैसे कमातें है

जो आप हमसें अमीर है ? तो उन्होंने जवाब दिया मैं खुद का बिज़नेस करता हूँ जिससे मैं ज्यादा कमाता हूँ | राम ने उत्सुकता के साथ पूंछा यह बिजनेस करनें के लिए क्या करना होता है ? तो उन्होंने वोला बस अच्छें से पढाई करों जब तुम थोडा पढ़ लिख जाओंगे तब तुम मेरे पास फिर आना तब मैं तुम्हें यह बिजनेस कैसे करतें है यह बताऊंगा |

राम काफी खुश था अब उसे एक लक्ष्य मिल गया था की यदि वो अच्छे से पढ़ेगा तो शंकर के पापा उसे अमीर बनना बताएँगे | राम उसी छोटे से स्कूल में बड़ी लग्न के साथ पढनें लगा और धीरे – धीरे समय निकलता गया | अब राम पहलें से ज्यादा जहाँ समझदार था वहीं अपनी स्थिति सुधारनें के लिए ज्यादा अग्रसर |

राम फिर जाकर शंकर के पापा से उनकी अमीरी का राज जानने के लिए मिला और उनसे बड़ी उत्सकता के साथ वहीं सवाल किया जो उसनें पहले किया था- आप इतना ज्यादा पैसा कैसे कमातें है जो आप हमसें अमीर है ? शंकर के पापा ने उसे समझातें हुएं कहाँ तुम्हारें मम्मी - पापा कम पढ़े - लिखें है जिस कारण उनकें पास काम करनें के मौके सीमित थे इस कारण मैंने तुम्हें पढाई करनें के लिए प्रोत्साहित किया जिससे तुम्हारें सामने बहुत सारे मौके हो | अब तुम चाहें नौकरी कर सकते हो या मेरी तरह खुद का व्यवसाय | अब राम की समझ में यह बात साफ आ गई थी की उसे क्या करना है और एक लक्ष्य जिंदगी में कितना जरुरी होता है | उसने भी व्यवसाय करनें का निर्णय लिया और जो छोटा सा खेती का टुकड़ा था उसके पापा के पास जिससे आज तक उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं आया उसी को उसनें सफलता के लिए चुना |

राम के पापा अभी तक उसी तरीकें से खेती किया करतें थे जो उन्होंने अपने पापा को करतें हुए देखा था लेकिन राम ने उसे एक व्यवसाय की तरह लिया और छोटी सी शुरुआत कर पहलें तो अपनी माली हालत को ठीक किया फिर धीरे- धीरे वो अमीरी की तरफ कदम बढ़ाता गया |

सीख – आपनें इस कहानी में देखा होगा राम के लिए सफलता का मतलब था- अपनी गरीबी की हालत से बाहर निकलना और अमीर बनना | इसी तरह आप भी सोचे आप सफलता क्यों चाहते है ?

कहानी – 2

अनुराग और तपस्या एक ही मोहल्ले में रहतें है | वो एक – दूजे को पिछले पांच सालों से जानते है और एक – दूसरें को पसंद करतें है | तपस्या का परिवार एक समृद्ध परिवार था और अनुराग के पापा एक छोटी नौकरी करतें थे | अनुराग और तपस्या एक – दूजे को चाहतें बहुत है लेकिन वो यह भी अच्छें से जानते है कि तपस्या के पापा इस रिश्ते को कभी भी नहीं मानेगे तो दोनों छुप – छुपकर एक दूसरें से मिल तो लिया करते थे लेकिन वो अपनें परिवार वालों के लिए राजी कैसे करें उन्हें यह समझ नहीं आता था |

कभी उनके दिमाग में आता की भागकर शादी कर लें लेकिन वो अपने मम्मी – पापा को दुःख नहीं पहुचाना चाहते थे और न ही वो एक – दूसरे के बिना रह सकतें थे | अनुराग हमेशा सोचा करता था यदि वो तपस्या के परिवार जैसा बड़ा आदमी हो तो उसके पापा को फिर हमारें रिश्ते से कोई समस्या नहीं होगी और वो तपस्या का हाथ मेरे हाथ में दे देगें लेकिन समस्या यह थी की बड़ा आदमी बना कैसे जाएँ ? न उसके पास लगानें को पैसे थे और न हीं घर से उसे पैसे मिलने थे और वो तपस्या से दूर भी नहीं होना चाहता था |

अब अनुराग और तपस्या रोज घंटो बैठकर यहीं सोचते रहतें की वो शुरुआत कैसे करें ? अनुराग ने एक छोटी सी नौकरी ज्वाइन कर ली जिससे उसके पास थोडें पैसे आ जाएँ और उन पैसो को जोड़कर वो कोई व्यापार चालू कर सकें | अनुराग दिन भर नौकरी करता और जितनें पैसे उसके पास होते उन्हें वो निवेश करनें के तरीकें खोजता रहता, वहीँ तपस्या भी अनुराग की मदद करनें के लिए बच्चों को कोचिंग पढ़ाने लगी और अपनें पापा के साथ

उनकें बिज़नेस में हाथ बटानें लगी जिससे वो उनसें बिजनेस की बारीकियां सीख सकें |

अनुराग और तपस्या अपनें प्यार को पानें के लिए दिन – रात मेहनत करनें में लगे थे और आखिरकार इनकी मेहनत धीरे – धीरे दिखनें लगी | अनुराग ने जहां इन्वेस्ट करनें के लिए कुछ पैसे जमा कर लिए वहीं तपस्या अब अपने पापा से बहुत कुछ सीख चुकी थी | दोनों ने मिलकर अब अपना छोटा सा कारोबार चालू किया जो देखतें – देखतें लोगों की नजरों में आ गया | तपस्या के पापा अब दोनों की लगन से प्रभावित थे वहीं अनुराग के पापा भी अनुराग की कामयाबी को देखकर बहुत खुश थे |

अनुराग और तपस्या को अब लग रहा था की यहीं सही समय है अब वो अपनें परिवार को अपनें बारे में बता सकते है लेकिन मन में डर भी था यदि उन्होंने इस रिश्ते को मना कर दिया तो ? फिर भी दोनों ने हिम्मत करके अपने दिल की बात अपने परिवार को बता दी | तपस्या के पापा के पास अब कोई कारण भी नहीं था जिससे वो अनुराग को मना कर सकें क्योकि अब उसनें और तपस्या ने साबित कर दिया था कि वो दोनों एक – दूसरें के लिए परफेक्ट है और उनकें परिवार वालें भी यह बात अब समझ गए थे और अनुराग तपस्या भी |

सीख – यहाँ अनुराग और तपस्या के लिए सफलता का मतलब अपना प्यार पाना था और उनकें इसी कारण ने उन्हें अपनें क़दमों पर खड़े होनें और अमीर बननें के लिए ताकत दी जिससे वो अपना प्यार पा सकें |

ऊपर बताई गई कहानियों में आपनें महसूस किया होगा कि दोनों में सफलता का मतलब अलग – अलग था | जहां एक में अपनी गरीबी से निजात पाना था वहीं दूसरी में अपनें प्यार को पानें के लिए अमीर बनना था जिससे उनकें परिवार वालें उन्हें अपना सकें | ऐसे ही हमें भी यह जानना जरुरी है कि हमारें लिए सफलता क्यों जरुरी है ? यह आप ही बेहतर बता सकतें है कि आप

अमीर क्यों बनना चाहते है या आप सफल क्यों होना चाहते है ? जब तक आप कारण का पता नहीं लगा सकतें तब तक आप सफल नहीं हो सकते |

मैं इसलिए अमीर बनना चाहता हूँ क्योकि मैं उन लोगों की तरह बिना कुछ करें नहीं मरना चाहता जिनका कोई पता ही नहीं होता कब पैदा हुएं और कब निकल लिए | मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जिससे मैं भी उन लोगों के साथ खड़ा हो सकूं जिन्हें मैं हमेशा देखता हूँ और सोचता हूँ जब वो ऐसा कर सकते है तो मैं क्यों नहीं ?

यदि किसी काम को कोई एक इंसान कर सकता है तो उस काम को हर कोई कर सकता है | जब एक इंसान चाय बनाने वाले से उठकर हमारे देश के प्रधानमंत्री बन सकते है | जब पेपर बेचने वाला इंसान हमारे देश के राष्ट्रपति बन सकते है | जब एक कॉलेज ड्रॉपआउट दुनिया के सबसे अमीर आदमी बन सकते है तो हम क्यों नहीं कर सकते ? लेकिन घूम फिर कर एक सवाल मन मैं आ जाता है, हम करें तो कैसे करें ? हम शुरुआत कैसे करें ? इन्हीं सवालों के जवाब मैंने इस बुक में देने की कोशिश की है |

यह बुक ऐसी नहीं है कि बिना कुछ करें आपको अमीर बना दे | बिना कुछ करें आपकों अमीर कोई नहीं बना सकता उसके लिए आपकों कुछ करना होगा | मैं यहाँ यह नहीं कहूँगा कि आपको बहुत मेहनत करनी होगी या आपको बहुत पढना होगा यदि ऐसा होता तो दुनिया के सबसे अमीर इंसान वो मजदूर होते जो दिन भर लोगो का बोझा उठाते है या जो दिन – रात घरों को बनाने के लिए गारा उठाते है या वो शिक्षक होते जो हमसे काफी ज्ञान वालें होते है या वैज्ञानिक होते जो बहुत ही इंटेलिजेंट होते है लेकिन ऐसा कुछ नहीं है |

अमीर बनने की शुरुआत करनें से पहलें आप अपने दिल और दिमाग से यह पूंछे कि क्यों आप अमीर बनना चाहते है और क्यों आपकों लगता है आप सफल हो सकतें है ? यह आपका आज का होम वर्क है जिसे आप ईमानदारी से पूरा करें | इसका उत्तर आपकों मुझे नहीं खुद को बताना है |

मैं आपकों पहले ही बता चुका हूँ हर किसी के लिए सफलता के मायने और अमीर बनने के पीछे के कारण अलग - अलग होते है लेकिन वो कारण इतने ताकतवर जरुर होने चाहिए जो आपकों हमेशा आगे बड़ने के लिए प्रोत्साहित करें | जब आप गिरतें हो तो आपकों दोबारा उठनें की ताकत दे | आपकों कठिनाईयों को छोड़कर आप क्या पाना चाहते है उसको सोचने पर मजबूर करें |

जब आपकों कोई ऐसा कारण मिल जाएं जो आपकें हारनें के डर से बड़ा हो तो आप आगें बड सकते है और जो कोई ऐसा कारण अभी तक नहीं खोज पाएं है तो वो दोबारा प्रयास करें क्योकि उनकें पास एक सबसे बड़ा कारण पहलें से ही और वो कारण है कि आप अपनी इस स्थिति को बदलना चाहतें है | आप चाहतें है कि आप भी आगें बड़े और अपने सपने को हकीकत में बदले यदि आप अपनी आज की स्थिति में खुश होते तो यह बुक नहीं पढ़ रहें होते तो इसका सीधा मतलब है आप एक शुरुआत करना चाहते है |

आप शुरुआत कैसे करें ? यह जानने से पहलें आप आराम से बैठे और नीचे पूंछे गए सवालों के जवाब खोजे |

अपने आप से सवाल करें

नोट – *यह कोई आपका टेस्ट नहीं है और यह आपकों ईमानदारी से सोचना है की ऐसा आप क्यों करना चाहते है ?*

1. आप के लिए सफलता के मायने क्या है ?

उत्तर

-...

....

....

....

....

....

2. आप सफल क्यों होना चाहते है ? (एक वाक्य में उत्तर दें)

उत्तर

- ....

....

3. आप अमीर क्यों बनना चाहते है ? (एक वाक्य में उत्तर दें)

उत्तर

- ....

....

4. आपको क्यों लगता है आप सफल होगें ? (एक वाक्य में उत्तर दें)

उत्तर

- ....

....

5. अभी तक आपनें अमीर बनने के लिए क्या - क्या किया है ?

उत्तर

- ....

....

....

....

....

....

6. जब आप अमीर बन जाएंगे तो सबसे पहलें क्या करेंगे ? (एक वाक्य में उत्तर दें)

उत्तर

- ....

....

अध्याय - 2

खुद की कद्र करना सीखें

जब तक आप अपनी इज्जत नहीं कर सकते तब तक आप किसी ओर से इज्जत पा भी नहीं सकते |

यदि सबसे पहले आपकों कुछ सीखना है तो अपनी इज्जत करना सीखें | मैनें बहुत से लोगों को यह कहतें हुए सुना है- वह इंसान मेरे से बेहतर है या मैं उतनी अच्छी या अच्छा नहीं लगता या भगवान ने मुझे दिमाग दिया ही नहीं है या मैं किसी लायक नहीं हूँ | ऐसा क्यों होता है आप हमेशा अपने आप को दूसरों से नीचा दिखातें रहते है ? किसी न किसी बात पर अपने आपकों दूसरों से कमतर नापते है ?

हर इंसान किसी न किसी चीज में बेहतर तो किसी न किसी चीज में कम बेहतर तो किसी चीज में बुरा होता है और ऐसा हर किसी के साथ होता है | हो

सकता है आप पढाई में बहुत अच्छे हो लेकिन आपने यह भी नोटिस किया होगा कि स्कूल में आप बहुत सारें बिषय पढतें है लेकिन कोई एक विषय आपकों ज्यादा अच्छा लगता होगा और आप उसमें ज्यादा अच्छे होगें तो दूसरें विषय में कम और कुछ में एवरेज होगे ऐसा ही हमारी जिंदगी में होता है | कई लोग पढाई में अच्छे होते है, तो कई लोग ड्राइविंग में, तो कई लोग खेती करनें में माहिर होते है, तो कई लोग वाहनों को ठीक करनें में लेकिन योग्यता सब में होती है और इसी योग्यता को हमें अपने अंदर खोजना है |

अपनें अंदर छुपी प्रतिभा को खोजने के लिए सबसे पहलें अपने आपकों दूसरों से कम्पेयर करना बंद करें नहीं तो आपका दिमाग इसी में हमेशा लगा रहेगा की आप दूसरों से नीचे कैसे है और आप कभी भी अपने अंदर छुपी प्रतिभा को नहीं खोज पाएंगे | हर इंसान विशिष्ट या स्पेशल होता है, ऐसे ही आप है और हर इंसान के अंदर लाखों प्रतिभाएं छुपी होती है जिसे बस शांत बैठकर खोजनें या निखारने की जरुरत होती है |

मैं पढाई में अच्छा हूँ लेकिन जब मेरी कार ख़राब होती है तो उसे मैं ठीक नहीं कर सकता इसलिए मुझे अपनी कार को रिपेयर कराने के लिए मैकेनिक की जरुरत होती है | जब मुझे अपने घर में कोई भी फर्नीचर ठीक कराना होता है तो भले ही मैं पढाई मैं अच्छा हूँ फिर भी मुझे बढ़ई को बुलाना पड़ता है | हर दूसरें काम के लिए भले ही मैं अच्छा कमाता हूँ फिर भी मुझे दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है लेकिन क्यों ?

वो इसलिए क्योकि जो प्रतिभा उनकें अंदर है वो मेरे अंदर नहीं है इसलिए मैं वो काम नहीं कर सकता जो वो कर सकतें है और जो प्रतिभा मेरे अंदर है वो उनकें अंदर नहीं है इसलिए वो अपनें काम तो कर सकतें है लेकिन वो काम नहीं कर सकतें जो मैं बेहतर कर सकता हूँ | ऐसे ही हमें अपने आपकों दूसरों से कम्पेयर करने से पहलें यह देख लेना चाहिए क्यों हम उनसे अलग है |

आप जैसे हो वैसे अच्छे हो यह बात अपने मन में बैठा लेना चाहिए और आप अपने को और बेहतर कर सकतें है इसके लिए अपने दिमाग को खर्च करना चाहिए न की फिजूल की बातों में | वो मुझे इज्जत क्यों नहीं देता ? वो मुझसें अच्छे से बात क्यों नहीं करता ? यह सवाल हम में से ज्यादातर के मन में कभी न कभी जरुर आया होगा - मेरा कजिन मुझसे अच्छा है तभी तो सभी उसकी इतनी तारीफ करतें है | वो देखनें में भी अच्छा है और पढाई में भी और अच्छा कमाता भी है लेकिन मैं किसी लायक नहीं |

मैं आपसे एक चीज पूछना चाहूंगा क्या आपने कभी भी बैठकर यह सोचा कि यदि आप दूसरों जैसे होते तो आप क्या होते ? मेरा मतलब आप चिंटू जैसे स्मार्ट होते और बंटी जैसे पढ़ाई में अच्छे और सुप्रिया जैसे अच्छी जॉब करतें तो हर चीज में आप दूसरों जैसे होते तो उसमें आप कहाँ होते ? यदि भगवान आपकों दूसरों की कार्बन कॉपी बनाना चाहता तो आपकों उन लोगों जैसा बनाता जो आपकों आप से बेहतर लगते है लेकिन भगवान ने ऐसा नहीं किया क्योकि कही न कही वो भी चाहता है आप अपने अंदर की प्रतिभा को पहचानें और कुछ ऐसा करें जिससे दूसरें आप जैसा बनना चाहें |

हम दूसरों जैसा क्यों बनना चाहते है क्योकि वो हमसे बेहतर है ? ऐसा नहीं है आप भी बेहतर हो लेकिन आपनें अपनें अंदर झाककर देखा ही नहीं और अपनें दिल से ये कभी पूंछा ही नहीं क्यों आप दूसरों से अलग है ? आपनें अपने दिमाग को हमेशा दूसरों जैसा बनने के लिए प्रेरित किया है लेकिन जैसे आप हों वैसा बनने के लिए नहीं | मानों आप जिसकें जैसा बनना चाहतें है वैसे बन भी गए तो क्या ? इस बात की कोई गारंटी है कि यदि आपकों उस इंसान से कोई बेहतर इंसान दिखेगा तो आप उस जैसा बनने की कोशिश नहीं करेगें ? मेरे ख्याल से नहीं | मैंने ऐसे बहुत से लोग देखें है जो दूसरें इंसान से इतना प्रभावित हो जाते है कि बिल्कुल उस जैसा बनने के लिए चल पड़ते है |

यह बात आप इस उदाहरण से बेहतर समझ सकतें है- एक राज नाम का लड़का था जो एक सभा में कही गया हुआ था | वहां पर एक 26 - 27 साल का लड़का आता है जो अभी - अभी पुलिस में एस.पी. बना है | उसके आते ही सारें पुलिस वालें उसके आगें पीछे होने लगते है उसकी सभी इज्जत करतें है और वो कमाता भी अच्छा है तो राज के मन मैं ख्याल आया कि काश मैं भी एस.पी. होता और वो UPSC की तैयारी चालू कर देता है | राज नें कोचिंग भी ज्वाइन कर ली है और दिन - रात मेहनत करते हुए उसको दो साल हो गए है | अब राज पर से एस.पी. का बुखार धीरे - धीरे कम होता जा रहा था उसे अब एक बिजनेस मेन बनना था क्योकि उसकी मौसी का लड़का भी बिजनेस करता था और उससे मिलने के बाद उसे पता चला कि बिजनेस में कितना फायदा है जिससे राज ने भी एस.पी. बनने का सपना छोड़कर अब बिजनेस करने का ठान लिया |

यहाँ पर जैसे राज ने किया वैसा ही कभी न कभी हम भी करतें है | हम भी किसी से इतना प्रभावित हो जाते है कि उसके जैसा बनने के लिए या उसकी जैसी नौकरी पाने के लिए तैयारी चालू कर देते है और जब उस रास्तें में मुश्किलें आती है तो हमें समझ आता है हमने गलत रास्ता चुन लिया है इसलिए हमें अपने अंदर की योग्यता के अनुसार अपना रास्ता चुनना चाहिए और वो तभी होगा जब आप अपनी कद्र करना सीखें नहीं तो हमेशा ही राज की तरह दूसरों से प्रभावित होते रहेगे और अपना रास्ता चुनतें रहेंगें |

हम हमेशा चाहतें है कि लोग हमारी इज्जत करें लेकिन हम कभी भी खुद की इज्जत नहीं करते | फिर कैसे हम दूसरों से इज्जत पाने की आशा कर सकतें है?

जब तक आप अपनी इज्जत नहीं करोगें तब तक कोई आपकी इज्जत नहीं करेगा | अमीर लोगों में अपने प्रति स्वाभिमान कूट - कूट कर भरा होता है और जब इस स्वाभिमान पर कोई आंच आए तो वो जी - जान लगा देते है अपने स्वाभिमान को बचानें के लिए लेकिन यदि आप अपनी कद्र नहीं करेगें तो अपने स्वाभिमान की रक्षा कैसे करेंगें ?

आपकें मन में आ रहा होगा की अमीर बनने और खुद की कद्र करनें का क्या संबंध है लेकिन मेरा यकीन मानिए यदि आप अपनी कद्र करना सीख गए तो आप अमीर बनने की तरफ एक कदम आगे बड जाएंगे |

अब सवाल आता है, खुद की कद्र करना कैसे सीखें ? इसकें लिए कुछ ज्यादा करनें की जरुरत नहीं है, सबसे पहलें अपने लिए कुछ समय निकालिए और वो समय मोबाइल चलानें या टीवी देखनें में न लगाकर अपनें मन के किसी काम में लगाएं | कोई ऐसी चीज जो आपकों बहुत पसंद हो और जिसे आप काफी समय से करना चाहतें थे लेकिन किसी कारण बस या व्यस्त होने या किसी बहानें से टाल देते थे लेकिन अब आपकों रोज उसी समय जिस समय को आपनें फिक्स किया है उस समय अपने मन के काम के लिए कुछ समय निकालना है और यह आपकों रोज करना है | साथ ही साथ आपकों यह सोचना है, आप दूसरों से अलग कैसे है ?

आपको अपने समय में से कुछ पल अपने लिए निकालने है और रोज निकालने है | इस समय में वो काम करना है जो आप करना चाहतें है लेकिन अभी तक लोग क्या कहेंगे या दूसरें लोग क्या सोचेगें मेरे बारे में यह सोचकर आप कर नहीं पातें थे लेकिन अब आपकों करना है और एक कागज पर या एक डायरी में या मोबाइल नोटपैड में रोज की तारीख डालें और उसके सामने लिखें आज आपनें क्या किया और आपकों कैसा लगा ? अच्छा या बुरा ? साथ में आप यह भी लिख सकतें है आपनें क्या सीखा और आप दूसरों से अलग क्यों है ?

ये एक छोटा सा टास्क है जो आपकों रोज करना है कम से कम 15 दिनों तक | मैं तो चाहता हूँ यह आप हमेशा करें लेकिन कम से कम 15 दिनों तक हर हाल में करें और रोज एक ही समय से प्रारंभ करें | मेरा मतलब है कि आपनें आज 6 बजें का समय निश्चित किया है तो कल भी इसी समय से प्रारंभ करें न की कभी आठ तो कभी पांच बजें |

ध्यान दें :- *रोज अपनें लिए समय निकालें और वो करें जो आप करना चाहतें हैं |*

<u>टास्क चार्ट</u>

दिन	दिनांक	समय	आज आपनें क्या किया ?	आपकों कैसा लगा ?
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				

अध्याय - 3

इच्छा का ही सब खेल है

"हमेशा याद रखिये कि सफलता के लिए किया गया आपका संकल्प किसी भी और संकल्प से ज्यादा महत्व रखता है |" - अब्राहम लिंकन

इच्छा शक्ति या कुछ करने की इच्छा मानव की वह ताकत है जिसे यदि सहीं तरीकें से उपयोग किया जाएं तो कुछ भी असंभव नहीं और यदि इसका उपयोग नहीं किया जाए तो कुछ भी संभव नहीं |

इच्छा, जो होती सब में है लेकिन इसका महत्व कम ही लोग समझ पातें है |

यदि आपकी सफलता के बीच सबसे बड़ी कोई रुकावट है तो वो है इच्छा शक्ति की कमी क्योकि बिना इच्छा शक्ति के आप कुछ भी नहीं कर सकतें | हर काम को करनें से पहलें आपकें मन में यह संशय हमेशा बना रहेगा कि यह काम सफल होगा की नहीं ? मैं इस काम को कर सकूंगा की नहीं ? मैं इस लायक हूँ क्या ? और सबसे बड़ा डर हारने का |

आप किसी भी सफल व्यक्ति को देख लें उनमें आपकों इच्छा शक्ति की कोई कमी नहीं दिखेंगी लेकिन वहीं आप मध्यम वर्ग या गरीब व्यक्तियों को देखें तो उनमें आपकों किसी काम को टालने की आदत आराम से दिख जाएंगी | ज्यादातर लोग इस बात को समझ ही नहीं पातें कि किसी भी काम की सफलता और शुरुआत आपकी इच्छा शक्ति पर निर्भर करती है | जब तक आप अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत नहीं करेंगे, तब तक आप हर काम को शुरु करनें से पहलें टाल - मटोल करतें रहेंगे और यही काम को टालने की आपकी आदत हमेशा आते हुए उन मौको को भगाती रहेंगी जिसका इंतजार आप हमेशा से कर रहें थे या एक ऐसा बड़ा मौका जो आपकी स्थिति को बदलनें की ताकत रखता था लेकिन आपने उसे देखें बिना ही भगा दिया |

किसी काम को पूरा करनें की इच्छा शक्ति ही आपकी सफलता की कुंजी होती है और यदि यहीं इच्छा शक्ति कमजोर है तो आप सफलता के दरवाजें को बस खटखटाते रहेंगे लेकिन बिना इच्छा शक्ति रुपी कुंजी के वो दरवाजा कभी भी नहीं खुलने वाला |

आप क्या चाहतें है और कितना चाहतें है ? उसकों पाने के लिए आप क्या कर रहें है ? यह सब आपकी इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है | ज्यादातर लोग इसीलिए सफल नहीं हो पातें क्योकि वो बस सहीं मौके का इंतजार करतें रहतें है लेकिन वह सहीं मौका कभी नहीं आता | सही मौके को हम पूरी लग्न के साथ मेहनत करके अपनें पास लातें है लेकिन जितनी अधिक चाह होगी आगें बड़ने की उतने ही अधिक सफल होने के आसार होगें |

कमजोर इच्छा शक्ति वाला इंसान चाहता तो बहुत है लेकिन उसके लिए कोई शुरूआत नहीं करता और बिना शुरूआत के चाहने बस से कुछ नहीं होता | जैसे, भोजन मुंह में डालने भर से पेट में नहीं चला जाता उसको चबाना भी पड़ता है, वैसे ही चाहने भर से काम पूरें नहीं हुआ करतें उनकों पूरा करनें के लिए संकल्प या इच्छा शक्ति की जरुरत होती है |

कमजोर इच्छा शक्ति वाला इंसान बस सफल होने के सपनें देखता है, थोडा ज्यादा इच्छा शक्ति वाला इंसान उसके लिए थोडा मेहनत करता है लेकिन थोड़ी ही कठिनाई आने से भाग खड़ा होता है, उससे थोड़ी ज्यादा इच्छा शक्ति वाला इंसान कठिनाईयों के दो - चार थपेड़े तो सह लेता है लेकिन ज्यादा समय तक टिक नहीं पाता और हार मानकर बैठ जाता है लेकिन वो इंसान बार - बार गिरने के बाद भी उठ खड़ा होता है जो मन में जीतनें के लिए ठान चुका है | उसकी जीतनें की इच्छा उसे बार - बार गिरकर भी खड़े होनें और आगें बड़ने के लिए मजबूर करती है और आख़िरकार ऐसे ही इंसान बिल गेट्स, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, मार्क ज़ुकरबर्ग आदि बनते है |

यदि किसी चीज को पाने की चाहत उस चीज को पानें के रास्तें में आने वाली कठिनाईयों से भी ज्यादा हो तो आपकों उस चीज तक पहुचने से कोई नहीं रोक सकता |

जैसे, अच्छी डिश बनाने के लिए सभी मसालें और सब्जियों आदि का महत्व होता है वैसे ही अमीर बनने की शुरुआत करनें से पहलें जरुरी सभी चीजों का महत्व भी उतना ही होता है | इच्छा शक्ति भी उनमें से एक है और देखा जाएं तो सबसे जरुरी | यदि किसी चीज को आप पाना चाहतें है तो अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत करें और मन में ठान ले जब तक मैं सफल नहीं होऊंगा तब तक हिम्मत नहीं हारुगा |

फेसबुक को आज हममें से ज्यादातर लोग जानते है और उसका उपयोग करतें है लेकिन क्या होता जब इसको बनाने वाले मार्क जुकरबर्ग ने अपने आईडिया को आगें ले जानें के लिए संकल्प नहीं किया होता ? क्या बिना इच्छा शक्ति के वो अपने इस आईडिया को इस ऊंचाई तक पंहुचा पातें ? या वो अपनी सफल होने की इच्छा शक्ति के बिना फेसबुक को कभी भी चालू कर पातें ? मेरे अनुसार नहीं | यदि उनकी इच्छा शक्ति या संकल्प कमजोर होता तो फेसबुक उनके सपने में होती हकीकत में नहीं |

हममें से ज्यादातर को यह लगता है कि उन्होंने फेसबुक बनाया और रातोंरात वो अरबपति बन गए लेकिन ऐसा नहीं था | शुरुआत में मार्क ज़ुकरबर्ग को भी बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन इन कठिनाईयों से ज्यादा उन्हें अपने आईडिया से प्यार था जिसे वो बहुत ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए कुछ भी कर गुजरनें के लिए तैयार थे इसलिए उन्होंने हावर्ड यूनिवर्सिटी को भी बीच में ही छोड़ दिया जिससे वो फेसबुक को ज्यादा से ज्याद समय दे सकें | यह वह समय था जब फेसबुक आज की तरह इतनी फेमस नहीं थी या कहें अभी वो शुरूआती दौर में थी लेकिन कुछ कर गुजरनें की इच्छा ने उन्हें इतना कठिन फैसला लेने की ताकत दी | वो भी अपनी स्टडी पूरी कर अच्छा पैकेज पाकर नौकरी कर सकते थे लेकिन उन्होंने वो रास्ता चुना जिसकी मंजिल सफलता और असफलता दोनों हो सकती थी |

आप मार्क की जगह होते तो आप क्या चुनते ? एक मल्टीनेशनल कंपनी में करोडो का पैकेज या एक ऐसा सपना जिसकी मंजिल कुछ भी हो सकती है | कमजोर इच्छा शक्ति वाले जॉब वाला आसान रास्ता ही चुनतें लेकिन कुछ कर गुजरनें वालें शायद यही करतें जो मार्क ज़ुकरबर्ग ने किया | भलें ही उन्हें बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ा लेकिन आज वो करोड़ों लोगो के लिए एक आदर्श है और अरबों लोग उनके सोचे सपनें को आज उपयोग कर रहें है |

आप अपना कैसा भविष्य बनाना चाहेंगे ? एक ऐसा जिसमें आप अरबों लोगों की भीड़ में हमेशा के लिए खो जाएं या मार्क ज़ुकरबर्ग जैसा, जो अरबों लोगों की भीड़ में भी एक हीरें जैसा अलग ही प्रकाश फैला रहें है | यह आपकों सोचना है कि आपकों कौन सा रास्ता चुनना है | ऑप्शन्स हमारें सबके पास होते है लेकिन आपकी कमजोर इच्छा शक्ति उस रास्तें को चुनने के लिए प्रोत्साहित करती है जो दिखनें में तो आसान लगता है लेकिन चलतें - चलतें जब हम पीछें मुडकर देखतें है तो पता चलता है यह एक गलती थी, जिसे कास किया नहीं होता |

आप भी उन अरबों लोगों की भीड़ में शामिल हो जातें है, जो रोज एक ही रूटीन फॉलो करतें है- सुबह जल्दी उठना जॉब पर या दुकान पर जाना, शाम को आना दोस्तों के साथ गप्पें मारना फिर टीवी देखकर सो जाना | उनका यह रूटीन जिंदगी भर चलता रहता है एवं हमेशा इतनी मेहनत करने के बाद भी पैसों की कमी हमेशा बनी रहती है, उसी पर अचानक एक - दो खर्च आ गए या किसी को कुछ हो गया तो हमारें पास इतना भी नहीं होता जिससे कुछ दिन बिना काम किए निकल जाएं |

आप अपने दिल से पूंछे वो आख़िरकार चाहता क्या है ? जिंदगीभर पाई - पाई के लिए परेशान रहना या एक ऐसा रास्ता चुनना जो शुरुआत में भले ही कठिन हो लेकिन जैसे - जैसे आप कदम बडाते जाएगे वैसे - वैसे दृढं इच्छा शक्ति के साथ रास्तें आसान होते जाएंगे |

जीतनें की इच्छा हारने के डर से जब तक अधिक नहीं होगी, तब तक हारने का डर आपकों वो ही रास्ता चुनने को मजबूर करेंगा जो ज्यादातर लोग चुनतें है और रोज बैठकर अपनी किस्मत को कोसते है- हें भगवान पिछलें जन्म में हमनें का पाप किए थे जो ऐसे कष्ट मिलें | या हें भगवान बस काम बना दें मैं 2 किलो शुद्ध घी के लड्डू चढाऊंगा | या ये भगवान बस ये बार पास करा दें अगली बार पक्का पढ़के आऊंगा और यदि मैं पास हो गया तो 50 रुपयें का प्रसाद चढाऊंगा |

जब आप कुछ बोलतें हो या भगवान से मन्नत मांगते हो तो आप अपने मन को यह विश्वास दिलातें हो कि इस काम में भगवान आपकी मदद करेंगे लेकिन वो काम करना आपकों ही पड़ता है, भगवान उस काम को करनें नहीं आने वाले फिर भी हम मन्नत मांगते है और हमारा यहीं विश्वास हमारी इच्छा शक्ति को ताकत देता है कि अब मैं तो हार ही नहीं सकता, स्वयं भगवान मेरी मदद करेंगे | जिससे आपके हारनें का डर कम हो जाता है और आपकी सफल होनें की इच्छा शक्ति बड जाती है |

यहाँ इस बात का उल्लेख करनें का मतलब ये ही है कि आपकी इच्छा शक्ति ही वो कारण है जो किसी काम को प्रारंभ करनें और उसकों सफलता तक पहुचाने में आपकी मदद करती है | चाहें आप उस इच्छा शक्ति को भगवान से काम के सफल होनें की मन्नत मांग कर बढाएं या ऐसे ही अपनें ऊपर विश्वास करकें लेकिन आपकी इच्छा शक्ति जितनी ताकतवर होगी उतनें ही सफल होनें के आपके पास मौके होगें |

आपनें यह कई बार नोटिस किया होगा कि किसी काम को जब हम करतें है तो उसका रिजल्ट कुछ और होता है और उसी काम को कोई और व्यक्ति करें तो रिजल्ट कुछ और होता है लेकिन ऐसा क्यों ? वहीं उसी काम को कुछ लोग इसलिए नहीं कर पातें क्योकि वह काम उन्हें बहुत मुश्किल लगता है | एक ही काम के लिए सभी लोगों की अलग - अलग राय क्यों होती है ? इसका सीधा

जवाब यह हो सकता है कि कुछ की इच्छा शक्ति कम तो कुछ की ज्यादा ताकतवर होती है इसलिए कुछ उस काम के पीछे कठनाईयां देखतें है तो कुछ मौके |

हटके काम करनें का मेरे अनुसार यह फायदा होता है कि कमजोर इच्छा शक्ति वालें इंसान उस काम को कभी नहीं करेंगे इसलिए उस काम को करनें वालों की संख्या आसान काम करनें वालों की संख्या से हमेशा बहुत कम रहेंगी | आपनें ज्यादातर देखा होगा नौकरी देनें वालों की संख्या हमेशा कम रहतीं है, वहीं नौकरी मांगने वालों की संख्या हमेशा बहुत ज्यादा रहती है | यह आपकों निश्चित करना है की आप किस केटेगरी में आना चाहतें है, काम मांगने वालों में या काम देनें वालों में ?

कभी मत सोचिये कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है. ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है. अगर कोई पाप है. तो वो यही है; ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं | - स्वामी विवेकानंद

यदि स्वामी विवेकानंद की इस बात पर गौर किया जाएं तो यह हमें बताती है- जब - जब हम यह कहतें है यह मेरे बस का काम नहीं है या यह मैं नहीं कर सकता तब - तब हम अपनी इच्छा शक्ति को कमजोर करने का काम करतें है और अपनें दिमाग को यह समझानें की कोशिश करतें है कि हम निर्बल है, हमारें बस का कुछ नहीं है |

मानव दिमाग, जिसकी न कोई सीमा है और न ही अंत | वो कुछ भी कर सकता है लेकिन हम कभी भी अपनें दिमाग को यह समझातें ही नहीं है कि यह हम कर सकतें है, बस उसकों यह सोचनें पर मजबूर करतें है कि यह अपने बस

का नहीं है | अपने बस का बस यहीं है की दोस्तों के साथ गप्पे मारें, टीवी देखें, मोबाइल चलाएं और अपना समय फिजूल उडाएं |

यदि आपकों अपनी इच्छा शक्ति को बड़ाना है तो अपने दिमाग को यह यकीन दिलाएं कि चाहें जितनी भी मुश्किलें क्यों न आएं लेकिन मैं इस काम को पूरा करकें रहूँगा और जब तक मैं आज का काम ख़त्म नहीं करूँगा तब तक मैं इस काम को करता रहूंगा और मैं कोई भी काम कल के लिए नहीं टालूगा | जब आप यह ठान लेते है तो थोड़ी दिक्कत तो होगी लेकिन धीरे - धीरे आपकों इसमें मजा आनें लगेगा और आप देखेंगे की कल के लिए आपकें पास कोई पेंडिंग काम ही नहीं है लेकिन यह रास्ता इतना आसान भी नहीं होगा |

आपकें दोस्त आपकों समय बर्बाद करनें के लिए बुलाएंगे | यदि आप नहीं गए तो आपकों बुलानें के लिए नए - नए बहानें खोजे जायेगें, वहीँ दूसरी तरफ आपका फेवरिट टीवी सीरियल आपका इंतज़ार कर रहा होगा, तभी आपको याद आयेंगा- अरें आज उस सीरियल में हीरो मरनें वाला है, वहीँ मोबाइल भी कैसे पीछें रहेगा उस पर हो सकता है किसी का कॉल आ जाएं या किसी ने अभी - अभी न्यू फेसबुक पर पिक अपलोड की है लेकिन यदि हम लाइक नहीं करेंगें तो वो फेसबुक फ्रेंड बुरा मान जाएंगा | ऐसे कैसे ? यदि हम लाइक न करें ऐसा कभी हो सकता है ? हम तो लाइक करेंगे जैसे ही हमनें लाइक किया तब तक किसी का प्यारा सा मैसेज आ गया लेकिन यदि हम मैसेज रिप्लाई न करें तो दुनिया रुक नहीं जाएगीं तो हम मैसेज भी रिप्लाई करेंगे | ऐसे हजारों कारण आपकें बीच में आएगें लेकिन यहाँ आप क्या चुनतें है यह आप पर निर्भर करता है |

आपकी इच्छा शक्ति ही वो शक्ति है, जो आपकों कुछ कर गुजरनें की ताकत देतीं है |

अपनी इच्छा शक्ति को जितना हो सकें उतना बढ़ाए | यदि आपने अपनी इच्छा शक्ति को मजबूत कर लिया तो आप अमीर बनने की तरफ दूसरें पड़ाव को पार कर लेंगे |

ध्यान दें:- *अपनी इच्छा शक्ति को बढाएं |*

4

प्यार की ताकत

जहाँ प्रेम है वहाँ जीवन है | - महात्मा गाँधी

प्यार कहनें को तो एक छोटी सी भावना है लेकिन मैंने अक्सर यह देखा है, यहीं छोटी सी भावना इंसान से वो काम करा जाती है जिसे वो अब तक सपनें में भी करनें को राजी नहीं था |

प्यार एक ऐसी भावना है जो आपकों आगें बड़ने के लिए ताकत भी दे सकतीं है और आपकों पीछे आने पर मजबूर कर सकतीं है लेकिन यह भावना जितनी छोटी नजर आती है उतनी ही आपकें जीवन को बदलनें की ताकत रखतीं है |

मैंने अक्सर यह सुना है कि अपनें काम से प्यार करों लेकिन ऐसे बहुत ही कम लोग देखें है जो हकीकत में अपने काम से प्यार करतें हो | आपकों ज्यादातर लोग वो मिलेंगें जो किसी न किसी बहाने अपनें काम को कोस रहें होगे लेकिन फिर भी वो वो ही काम कर रहें होते है |

मुझे अभी तक समझ नहीं आया जो काम आपकों पैसा देता है, आपकें घर खर्च और जिंदगी जीने में बहुत उपयोगी है, उसी काम से मिलनें वाले पैसो से आप अपना घर खर्च, मोबाइल, कार आदि ले पाते है या सीधे शब्दों में कहा जाएं जो काम आप करतें है उसी से मिलनें वाली तनख्वाह से आप जी रहें है और अपनी जरूरत की चींजो को खरीद रहें है फिर भी आप उसी काम से हमेशा दुखी रहतें है, ऐसा क्यों ? जब आपकों वो काम पसंद नहीं है तो आप उसे करतें क्यों है और छोड़ क्यों नहीं देते ?

आप ऐसा नहीं कर सकतें क्योकि उस काम के अलावा आपकों दूसरा काम खोजनें में परेशानी होगी और जब तक काम नहीं है तब तक अपना और अपनें परिवार का खर्च कैसे चलाएंगे ? हर काम करनें वाले इंसान में से ज्यादातर अपने काम से संतुष्ट नहीं है और इसी कारण अपने दिल की भड़ास निकालनें के लिए वो अपने तर्क बनातें रहतें है और देते रहतें है | जब आपकों पता है वो काम आपके लिए कितना जरुरी है तो उस काम को अपनी गलती मानने के सिवाय उसे प्यार से करें लेकिन कैसे ? भला कोई काम से भी प्यार करता है ?

अपने काम से प्यार करें | आपनें कई बार सुना होगा लेकिन बहुत ही कम लोग इस बात को मानते होगें और विश्वास करतें होगे लेकिन यह बात सहीं है, जब आपकों कोई काम करना ही है तो उसे आधे मन से क्यों करें ? उस काम को दिल लगाकर करें | आपको अपनें काम से उतना ही प्यार करना चाहिए जितना आप उस इंसान से करतें हो जो आपकें दिल के सबसे करीब है एवं अपनें काम को और बेहतर करनें की कोशिश हमेशा करतें रहें |

आप जिसे बहुत प्यार करतें है या आपका परिवार जिसकें लिए आप दिन - रात मेहनत करतें है उनके साथ भी आप इतना समय नहीं बिताते जितना की अपने काम के साथ, अपने काम को करतें हुए बिताते है तो जरा सोचिए क्या आप ऐसे शख्स या चीज के साथ समय बिताना पसंद करेगें जिसे आप बिल्कुल भी पसंद नहीं करतें फिर भी आपकों उसकें साथ रहना है तो कैसा लगेगा

आपकों ? चिढचिढ़े, बात - बात पर गुस्सा आना, अपने काम को अच्छे से न करना, दिनभर दूसरों में कमी निकालते रहना और ज्यादातर समय टेंशन में रहना, कुछ ऐसा स्वभाव हो जाएगा आपका | आप ऐसे इंसान बनते जाएंगे जो न खुद खुश रहता है और न ही दूसरों को खुश रहनें देता है | जिन्हें आप सबसे ज्यादा चाहते है उन्हीं लोगों को आपके इस बर्ताव से सबसे ज्यादा परेशानी होगी अगर आपनें अपने बर्ताव को नहीं बदला तो |

जब आप अपने समय का सबसे ज्यादा भाग अपने काम को करतें हुए निकालतें है तो उस काम से प्यार करना भी सीखें |

प्यार में वो ताकत होती है जो मरती हुई उम्मीद को भी जान दे सकती है, एक रोतें हुए इंसान को भी आशा की किरण दिखा सकतीं है अगर आपनें प्यार की ताकत को नहीं समझा तो आपनें कुछ नहीं समझा |

अभी आप अपनें काम को नहीं खुद को भला - बुरा कह रहें है क्योंकि आप जानतें है वो काम आपकों करना ही है तो उसे अच्छे से करनें की कोशिश क्यों न की जाएं ?

ज्यादतर लोग नौकरी करना पसंद करतें है लेकिन सीमित आमदनी होनें के कारण बैठकर इंतजार करतें है कि कब सरकार या उनका मालिक पैसे बढाएं जिससे थोडा ही सहीं उन्हें पैसो की किल्लत से निजात मिलें, वहीं अमीर आदमी यह अच्छे से जानता है कि उसका काम ही उसकी रोजी - रोटी का सहारा है तो वो अपनी आमदनी बढानें के लिए एक तरफ जहाँ मेहनत करता है वहीं अपने काम को प्यार करता है एवं कोशिश करता है कि अपनें काम को और बेहतर कैसे किया जा सकें |

नौकरी करनें वालों और खुद का काम करनें वालों में एक महत्वपूर्ण अंतर होता है- नौकरी करनें वालें एक सीमित आय में ही अपना गुजारा करतें है और चाहें कितनी भी उन्हें पैसो की किल्लत क्यों न हो लेकिन उनका पैसा समय - समय पर ही थोडा - थोडा बढ़ाया जाता है और तब तक वो सिर्फ इंतजार कर

सकतें है, वहीं खुद का काम करनें वालें अपने स्वयं के मालिक होतें है उन्हें जब पैसों की किल्लत होती है तो वो अपनें काम को और मेहनत को बढाकर अपनी पैसों की कमी को कभी भी दूर कर सकतें है, न ही वो सरकार के मोहताज होते है और न ही किसी मालिक के इसलिए जब तक आपकों मौका नहीं मिला तब तक थोडें पैसे कमानें के लिए आप नौकरी करें लेकिन जैसे ही आपकें पास निवेश के लिए या अपना व्यवसाय शुरू करनें के लिए पैसे हो तो कोशिश करें आप जितना जल्दी हो सकें अपना खुद का काम करें |

यदि आपकों हकीकत में अमीर बनना है तो सबसे पहलें वो काम करें जो करना आपकों पसंद हो चाहें जितनी भी मुश्किल क्यों न आएं जिस काम से आपकों प्यार है वो काम करें क्योकि जिसे हम प्यार करतें है उसे हम कभी भी खोना नहीं चाहतें ऐसा ही कुछ काम के बारें में है, जिस काम से हम प्यार करतें है उस काम को हम हमेशा बेहतर करनें की कोशिश करतें रहते है और दिल लगाकर अपने काम को पूरा करतें है |

आपनें किसी नौकरी करनें वालें इंसान को ज्यादा अमीर नहीं देखा होगा और न ही मैं अब तक ऐसे किसी इंसान से मिला हूँ जो केवल नौकरी करता हो और अपनें काम से खुश हो | मेरे कहनें का मतलब है, आप अपनी आमदनी को बढानें का कोई दूसरा रास्ता भी देखिए | यदि आप सोचते है केवल आप नौकरी करनें से अमीर हो जाएंगे तो यह आपकी गलतफहमी है | जब तक आपकें पास आपकी आमदानी को बढानें के अन्य तरीकें नहीं होगे तब तक आप अपनी स्थिति से बाहर नहीं आ सकतें |

अपने काम से प्यार करिएं | मैं बार - बार एक ही बात कों इसलिए दोहरा रहा हूँ क्योकि इस पुस्तक में मैंने उन छोटी - छोटी चीजों को लिया है जो हकीकत में किसी इंसान को आगें बड़ने में जहाँ मदद करती है, वहीं पीछे खीचने का काम भी करती है | यदि आपनें इन भावनाओं और आदतों पर काबू कर लिया तो आपकों आगे जाने और सफल होने से कोई नहीं रोक सकता लेकिन यदि आपने इन को छोटा समझकर नजरअंदाज कर दिया तो आपकों

कोई सफल नहीं कर सकता इसलिए यदि देखा जाएं तो अमीर और गरीब में कुछ खास अंतर नहीं होता क्योकि अमीर को भी भगवान ने वहीं सब दिया है जो गरीब को लेकिन फर्क इतना है कि उन चीजों का आप उपयोग कैसे करतें है ? अपनें को ऊपर ले जानें में या अपनी हालत को बिगाड़ने में |

मेरा मानना है कि, अक्सर जो चीज हमें छोटी लगती है उसी को करनें में हमें ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है |

अपनें काम से प्यार करनें की आदत को अपनाने के लिए आपकों रोज थोड़ी - थोड़ी कोशिश करनी होगी तभी आप यह समझ सकेंगे कि आख़िरकार काम से प्यार क्यों करें ?

रोज आप भलें ही आधा घंटा वो काम करें जिसे आप करना पसंद करतें है और यह आपकों ध्यान से रोज करना है एक महीनें तक फिर आपकों महीनें की आखरी तारीख को खुद से कुछ सवाल पूछने है और उनका उत्तर एक लाइन या एक वाक्य में देना है |

अपने आप से सवाल करें

नोट – यह कोई आपका टेस्ट नहीं है और यह आपकों ईमानदारी से सोचना है की ऐसा आप क्यों करना चाहते है ?

1. एक महीनें तक अपनी पसंद का काम करनें का आपका अनुभव कैसा रहा ? (एक वाक्य में)

उत्तर

- ....

....

2. आप और अपनी पसंद का काम करना चाहतें है या नहीं ? यदि हाँ या नहीं तो क्यों ? (एक लाइन में उत्तर दें)

उत्तर

- ....

....

3. कोई तीन अनुभव बताएं-

1. पिछलें काम का

2. एक महीनें अपनी पसंद के काम का

उत्तर

- ....

....

अध्याय - 5

सफलता की राह में कमजोर कड़ी: विश्वास

आपको किसी न किसी चीज में विश्वास करना ही होगा- अपने गट्स में, अपनी किस्मत में, अपनी जिंदगी में या फिर अपने कर्म में | - स्टीव जॉब्स

विश्वास कहनें को तो एक छोटा सा शब्द है लेकिन किसी का विश्वास पानें में जहाँ जिंदगी लग जाती है, वहीं किसी का विश्वास तोड़ने के लिए एक सेकेंड ही काफी है | वहीं खुद पर विश्वास जहाँ हमें सफलता की ओर ले जाता है, वहीं खुद पर अति विश्वास हमारी सफलता को असफलता में बदलने की ताकत रखता है | वहीं खुद पर विश्वास चीजों को आसान बना देता है, वहीं विश्वास की कमी छोटी सी चीज को डर बना देता है | वहीं खुद पर विश्वास जहाँ आगे बड़ने की ताकत देता है, वहीं अति विश्वास अभिमान को जन्म देता है | कहनें को तो विश्वास एक छोटा शब्द है लेकिन जहाँ यह हमें बना सकता है, वहीं हमें तबाह करनें की ताकत भी रखता है |

हमनें अपनी जिंदगी में किसी न किसी पर ज्यादा तो किसी न किसी पर कम और किसी पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं किया होगा | विश्वास जिंदगी का एक शातिर खिलाडी है जिसकी कमी भी नुकसानदायक है, वहीं उसकी अधिकता भी नुकसानदायक है, वहीं उसका महत्व जितना अधिक है उतनी ही अधिक हमें इसकी जरूरत पड़ती है | चाहें किसी काम को लेने से पहलें खुद पर विश्वास करना हो या किसी काम पर लोगों को लगाने के लिए उन पर विश्वास करना कि वो इस काम को बेहतर कर सकतें है या किसी व्यवसाय में अपने कर्मचारियों पर विश्वास करना या एग्जाम से पहलें पढ़ते समय खुद पर विश्वास करना की मेरा एग्जाम अच्छा जाएगा |

विश्वास की जरूरत हमें हमेशा पड़ती रहतीं है लेकिन यहाँ सवाल यह आता है कि आप अपनें पर कितना विश्वास करतें है, कम या ज्यादा या अति ज्यादा ?

इस सवाल का उत्तर आपके अनुसार क्या होना चाहिए जरा सोचकर देखिए और खुद से सवाल पूंछिए आप किस कैटेगरी में आते है ?

यदि आपकों खुद पर विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूँ तो आप कर सकते है भलें ही आप उस काम को करनें में कुछ बार सफल न हो लेकिन आपका खुद पर विश्वास यदि अभी भी कायम है तो आप जरुर सफल होगें |

अमीर बनने के लिए या अपनें सपनें को पूरा करनें के लिए लोग शुरुआत तो करतें है और खुद पर विश्वास भी रखतें है यह मैं कर सकता हूँ लेकिन यहीं उनका कर सकता या सकता शब्द ही उनकें विश्वास में कमी को इंगित करता है और थोड़ी ही कठिनाई आनें पर उनका विश्वास डगमगा जाता है जो उनकें सपनें को कभी भी हकीकत में नहीं आने देता |

आधी लड़ाई तो हम तभी हार जाते है जब हम **शायद** या **सकता** शब्द का उपयोग करते है | जब हम कहतें है, यह काम मैं शायद कर लूँगा या मैं

अमीर बन सकता हूँ तो उसका सीधा - सीधा मतलब ये है कि मेरे बस का कुछ नहीं है | वो तो आप अपनें मन को मनाने की कोशिश कर रहें है कि ये मैं कर सकता हूँ | **शायद** और **सकता** से आप हारनें के डर को छुपानें की कोशिश करतें है इसलिए हम ज्यादातर कामों में सकता या शायद का उपयोग करतें है |

यदि आपकों अपनें विश्वास पर अडिग रहना है तो सबसे पहलें अपनी डिक्शनरी से **शायद** और **सकता** शब्द को निकाल फेकिए क्योकि कहनें को तो यह शब्द बहुत ही उपयोगी लगतें है लेकिन वास्तव में यह शब्द हमारे विश्वास को कम करनें का काम करतें है |

मान लीजिए आपसे पूंछा जाएं की आपकों पहाड़ पर चढना है तो आपका जवाब क्या होगा ? और यदि आपसे कहाँ जाएं की आपकों पहाड़ पर चढना है तो आपका जवाब क्या होगा ? सुनने में तो दोनों सवाल एक से है लेकिन यदि ध्यान दिया जाए तो पहलें सवाल में आपसे पूंछा गया है और दूसरें सवाल में आपकों कहाँ गया है, जिसका मतलब है आपकों हर हाल में यह काम करना है तो अब आपका जवाब क्या होगा ?

पहलें सवाल के अनुसार आप कह सकतें है- शायद मैं पहाड़ पर चढ़ सकता हूँ और पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश कर सकतें है लेकिन यहाँ पर आप शुरूआत तो करेंगे और यदि एक बार में नहीं चढ़ पाए तो एक - दो बार और कोशिश करेंगे और फिर भी नहीं चढ़ पाएं तो आपनें पहलें ही बच निकलनें का रास्ता **शायद, कोशिश, सकता** आदि शब्दों का उपयोग करकें बना लिया था, वहीं दूसरें सवाल के अनुसार आपके पास कोई उपाय नहीं है | यहाँ पर आपको करना ही है, तो अब आप फिर शायद, कोशिश, सकता आदि शब्दों का उपयोग करेगें या बार - बार ऊपर जाने का प्रयास करेगें क्योकि बिना सफल हुए लौटनें का कोई रास्ता नहीं है तो अब आप क्या करेगें ? मेरे अनुसार अब आप खुद को विश्वास दिलाएंगे कि मैं यह करकें **रहूँगा** और जब तक पूरा नहीं **करूगां** तब तक बार - बार कोशिश करता **रहूँगा** क्योकि अब आपकें पास सफल होनें के सिवाएँ लौटने का कोई रास्ता नहीं है |

यदि हम खुद पर विश्वास करकें आगे बड़ने की अपने मन में ठान लें तो आधा काम हम तभी कर चुकें होते है, बस आधा काम रह जाता है सफलता की ओर कदम बढानें का इसलिए **शायद** या मैं **कोशिश** करूँगा शब्द का उपयोग कभी न करें अगर आप अपनें सपनें को साकार करना चाहतें है तो अन्यथा अपनें सपनें को भूल जाएं |

जिंदगी में हमें हर कदम पर विश्वास की जरुरत पड़ती है, चाहें कोई काम शुरु करना हो या उसे अच्छे से करना हो या किसी को पैसे देने हो या गाड़ी से सफर करनें पर भी हमें ड्राइवर पर विश्वास रखना होता है कि वो अपने काम में निपुण है और हमें अच्छे से हमारें गंतव्य तक पंहुचा देगा तो फिर हम अपनें आप पर विश्वास क्यों नहीं करतें ? हम अपनी काबिलियत पर विश्वास क्यों नहीं करतें ? अपने सपनें को हम साकार कर सकतें है यह विश्वास क्यों नहीं होता हमें ?

विश्वास करनें का ये मतलब नहीं है कि आप अपनी कमियों को भी न देखें और बिना तैयारी के जंग में कूंद जाएं | सही या कहें अंदर से विश्वास तभी आता है जब हम किसी काम की तैयारी को अच्छे से कर लेते है | बिना तैयारी के न आप विश्वास कर सकतें है और न ही सफल हो सकतें है और इसे ही हम अतिविश्वास कहतें है जिसका सीधा - सीधा मतलब है कि जिस काम को हमें करना है उसको कैसे किया जा सकता है यह तो हमनें सोचा नही और चल पड़े है काम को करनें के लिए तो क्या होगा ? न वो आपका काम होगा और न ही आप अपनी काबिलियत पर विश्वास कर पाएगे |

अगर आप धोखा नहीं खाना चाहतें तो किसी पर भी या अपने आप पर तब तक विश्वास न करें जब तक उस चीज के लिए अपनी काबिलियत को जांच न ले, वहीं किसी और पर विश्वास करनें से पहलें यह जांच ले कि वो व्यक्ति आपके विश्वास के लायक है कि नहीं या उस पर विश्वास किया जा सकता है कि नहीं ? किसी व्यक्ति पर अंधा विश्वास भी असफलता की या धोखे खानें की

निशानी होता है इसलिए विश्वास करना अच्छी बात है लेकिन बिना आजमाएं किसी पर विश्वास करना आपकें लिए खतरनाक हो सकता है | बिना तैयारी के किसी काम को पूरा करनें का विश्वास भी कभी न कभी आपके लिए मुसीबत बन सकता है इसलिए विश्वास करना अच्छी बात है लेकिन अति विश्वास गलत बात है |

जिंदगी में आगे बड़ने के लिए विश्वास करना जरुरी होता है चाहें आप खुद पर करें या ईश्वर पर या किस्मत पर या कर्म पर लेकिन आपकों किसी न किसी पर विश्वास करना ही होगा तो आज से ही अपने ऊपर विश्वास करना चालू करें | हाँ मैं यह करूँगा | हाँ मैं अपनी स्थिति को और बेहतर करके रहूँगा |

जब एक इंसान किसी काम को कर सकता है तो इसका यही मतलब होता है कि उस काम को और लोग भी कर सकतें है | जब एक इंसान अपनी स्थिति को और बेहतर कर सकता है तो हम क्यों नहीं ? जब एक इंसान अपने सपनें को हकीकत में पूरा कर सकता है तो हम क्यों नहीं ? भगवान ने हमें भी दिमाग दिया है, हमें भी दो हाथ दिए है, हमें भी दो आँखें दी है और हम भी इंसान है तो हम भी अपने सपनें पूरें करेंगे |

अगर कोई कर सकता हैं, तुम भी कर सकते हो, अगर कोई नहीं कर सकता तो तुम्हें जरुर करना हैं | - जापानी कहावत

अपने आप पर विश्वास रखिएं और अपने काम पर | यदि आपकों लगता है कि आप कर सकतें है तो आप कर सकतें है फिर दुनिया की कोई भी ताकत आपकों नहीं रोक सकती | अगर आपकों लगता है कि यह आपकें बस का नहीं है, आप नहीं कर सकतें तो अपनें आपको विश्वास दिलाएं और जो करना चाहतें है वो करें चाहें कितनी भी मेहनत क्यों न करना पड़े |

एक पुरानी कहावत है जो आपमें से काफी लोगों ने सुनी होगी- "जितनी चादर है उतने पैर फैलानें चाहिए नहीं तो चादर फट जाती है |" लेकिन मेरा एक सवाल है आपसे- यह कौन बताएगा आपकों कि कितनी चादर है आपकी या आपकों कितने पैर फ़ैलाने चाहिए ? मेरे ख्याल से यह हमें निश्चित करना होगा कि हम कितना आगें जाना चाहतें है क्योंकि आप खुद को सबसे अच्छा जानते है तो क्यों अपने बारें में दूसरों की बातें सुनकर पीछे हट जाते है और यह सोचनें लगतें है की यह मेरे बस का नहीं है | यह कौन निश्चित करेंगा कि क्या आपकें बस में है और क्या नहीं ? आप या आपके रिश्तेदार या आपके पडोसी ? जब जिंदगी आपकी है तो आपकें बारें में फैसला कौन लेगा- आप या कोई और ? उस फैसलें को भुगतना किसकों होगा- आपकों या किसी और को ? आप जो फैसलें लेते है उसका फायदा और नुकसान आपकों है न की पडोसी को और न की रिश्तेदारों को तो वो करें जो आप करना चाहतें है |

आप क्या कर सकतें है और क्या नहीं यह सब आपका अपनें ऊपर विश्वास ही निश्चित करता है और वहीं यह बताता है कि आपकी काबिलियत क्या है ? आपनें बहुत से अमीरों के बारें में सुना होगा कि कुछ ने अपनी स्नातक तक पूरी नहीं की फिर भी उनकी कंपनी में दुनिया के मास्टर माइंड लोग काम कर रहें है | यदि उन लोगों की काबिलियत देखी जाएं तो नौकरी देने वालों से ज्यादा नौकरी लेने वालें काबिल है फिर भी वो नौकरी देने नहीं लेने के लिए आएं हुए है | यह आपकों अपनें आपकों विश्वास दिलाना है कि, मैं नौकरी लेने वाला नहीं देने वाला बनूगा |

विश्वास हमारें लिए कुछ - कुछ वैसा ही है जैसा किसी वाहन के लिए बैटरी | यदि वाहन की बैटरी चार्ज है तो वाहन बस चाबी घुमातें ही चालू हो जाता है और यदि बैटरी डिस्चार्ज है तो गाड़ी चालू करनें के लिए बार - बार धक्का लगाना पड़ता है जब जाकें गाड़ी चालू होती है और यदि फिर रुक गई तो फिर धक्के की जरूरत होगी |

आप क्या बनना चाहतें है- विश्वास वाली गाड़ी जो बिना धक्के के आगे बडती जाती है या एक ऐसी गाड़ी जिसमें जितना धक्का लगा उसी हिसाब से चलेंगी ? जैसे गाड़ी में लगी बैटरी तभी चार्ज होती है जब गाड़ी चलती है वैसे ही हमारें अंदर किसी भी काम को करनें का विश्वास तब आता है जब हम किसी काम को करना प्रारंभ करतें है | तभी आप जहाँ बहुत कुछ नया सीखतें है, वहीं आप अपनी खामियों को पहचानते जाते है इसलिए यदि आपकों आगे बड़ना है तो शुरूआत करें फिर देखें और सुधार करें |

खुद पर विश्वास क्या होता है यह आप अलीबाबा ग्रुप के संस्थापक "जैक मा" के जीवन संघर्ष से समझ सकतें है | जैक मा के बारें में आज बहुत कम ही लोग होगें जो नहीं जानते होगें लेकिन उनका बचपन आज के जैसा नहीं था | जैक मा का जन्म चीन के एक छोटे से गाँव में हुआ था | उन्हें बचपन से इंग्लिश को बोलना और सीखना पसंद था लेकिन चीन में उस समय इंग्लिश का ज्यादा महत्व नहीं था तो वो टूरिस्ट गाइड की नौकरी करनें लगे जिससे वो विदेशियों से बात करकें अपनी टूटी - फूटी इंग्लिश को अच्छा कर सकें |

जैक मा पढाई - लिखाई में ज्यादा होशियार नहीं थे इसलिए जहां वो प्राथमिक विद्यालय में दो बार, तो माध्यमिक विद्यालय में तीन बार एवं कॉलेज की परीक्षा में तीन बार फेल हुए जिस कारण वो अपनें दोस्तों से पढाई में काफी पीछे हो गए | कम नंबर होने के कारण उन्हें एक छोटे से कॉलेज से स्नातक करना पड़ा | जैक मा का संघर्ष बचपन से लेकर अभी तक चल रहा था | जैक मा ने 25 से ज्यादा जॉब्स के लिए आवेदन किया लेकिन किसी भी जॉब में उन्हें नहीं लिया गया |

"जब KFC कंपनी चीन में आयी तो जॉब पाने के लिए 24 लोग इंटरव्यू देने गए लेकिन उनमें से सिर्फ मुझे रिजेक्ट कर दिया गया बाकी 23 को कंपनी ने चुन लिया |" - जैक मा

जैक मा ने काफी बार जॉब्स के लिए आवेदन किया लेकिन हर बार रिजेक्ट होने पर भी उन्होंने हार नहीं मानी और विश्वास को डगमगाने नहीं दिया | आख़िरकार उनकी एक स्कूल में अंग्रेजी टीचर के रुप में जॉब लग गई | एक बार उनका अमेरिका जाना हुआ जहाँ पर उन्होंने पहली बार इंटरनेट को देखा और कंप्यूटर पर बियर सर्च किया जहाँ पर उन्होंने देखा कई देशो के रिजल्ट थे लेकिन चीन के बारे में कुछ भी रिजल्ट शो नहीं हो रहा था | यह देखकर उन्हें दुःख हुआ और उन्हें लगा चीन अभी टेक्नोलॉजी में अन्य देशों से काफी पीछे है |

जैक मा इंटरनेट की ताकत को देखकर दंग थे | पहलें उन्होंने चीन की जानकारी उपलब्ध करानें के लिए एक वेबसाइट बनाई फिर अपनी पत्नी और दोस्तों की मदद से 20000 डॉलर जमाकर एक कंपनी बनाई जो कंपनियों के लिए वेबसाइट बनाने का काम करती थी लेकिन ज्यादा लाभ न मिलनें के कारण उनको अपनी कंपनी बंद करना पड़ी | कुछ दिन सरकारी काम करनें के बाद फिर उन्होंने अपने दोस्तों को इन्वेस्ट करनें के लिए राजी किया इस तरह "अलीबाबा" कंपनी की उन्होंने नीवं रखीं |

अलीबाबा में निवेश के लिए उन्होंने निवेशकों से बात करना चालू किया लेकिन यहाँ पर भी उन्हें असफलता ही हाथ लगी फिर भी उन्होंने अपने विश्वास को कम नहीं होने दिया और न ही अपने सपनें को टूटने दिया | जल्द ही दो बड़ी कंपनियों ने अलीबाबा में 25 मिलियन डॉलर का निवेश किया | इतने निवेश के बाद भी कोई लाभ न होते हुए जैक मा ने 'ताओबाओ डॉट कॉम' नाम से एक नीलामी के लिए वेबसाइट बनाई जिस पर सामानों की नीलामी करना फ्री था |

जैक मा ने अपने सपने को पूरा करने के लिए कई उतार - चढावो का सामना किया लेकिन उनकें दृढ संकल्प और अपने सपनें को पूरा करने की ललक ने उन्हें 800 रुपए महिना कमाने वालें इंसान से एशिया के सबसे अमीर इंसान बनने तक का सफर तय करनें की हिम्मत दी | जब अलीबाबा 2013 में 10 लाख करोड़ का आईपीओ न्यू यॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में लाई तो बड़ी से बड़ी

कंपनिया यह देखकर दंग रह गई क्योकि यह आईपीओ अब तक का सबसे बड़ा आईपीओ था जो उस इंसान का था जिसे लोग मूर्ख, कमजोर और न जाने क्या - क्या कहतें थे | जब वो रिजेक्ट हुए और किसी लायक नहीं समझे गए तब यदि उन्होंने हार मान ली होती तो शायद उनका यह सपना सपना ही बनकर रह जाता |

हममें से बहुत से लोग यह सोचतें है कि असफलता केवल हमें ही मिलती है अमीर आदमियों को नहीं तो उन्हें जैक मा के बारे में जानकार यह जरुर पता चलेगा की बार - बार असफल होना भी सफल होने के लिए मेहनत करनें की निशानी होती है क्योकि असफल वो ही होते है जो कुछ करतें है नहीं तो बिना गलतियों को किए आप कुछ नया नहीं कर सकतें |

जैक मा का अपने ऊपर दृढ विश्वास ही उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहा भलें ही लोगों ने उन्हें तानें मारें, नालायक समझा फिर भी वो अपने सपनें को पानें के लिए बार - बार असफल होने के बाद भी लगे रहें |

यदि आप कभी हार नहीं मानतें तो आज नहीं तो कल आप सफल होकर रहेंगे इसलिए तब तक आराम से न बैठे जब तक सफलता न मिलें |

लोगों में आम धारणा है, यदि मैं स्कूल में कमजोर हूँ तो मैं कुछ नहीं कर सकता या मुझे यह विषय नहीं आता तो मैं कुछ नहीं कर सकता उन्हें जैक मा से सीखना चाहिए क्योकि जैक मा जहाँ पढाई में कमजोर थे जिस कारण न उन्हें अच्छा कॉलेज मिला और न ही जॉब फिर भी दृढ संकल्प और अटूट विश्वास के कारण आज वो ऐसे हजारों लोगो को रोजगार दे रहें है जो उनसे कई गुना पढ़े - लिखें और होशियार है फिर भी वो अपने से कम पढ़े - लिखें व्यक्ति के यहाँ जॉब कर रहें है |

मेरा मानना है, कमजोरी कहीं होती है तो वो हमारें विश्वास में होती है जिस कारण हम हमेशा अपने को दूसरों से कमजोर समझते रहतें है | हमें यह लगता

है सब हमसे अच्छे है और हम नंबर वन के गधे है या हमारें बस का यह काम नहीं है क्योकि मुझे वह चीज नहीं आती |

किताबी ज्ञान से यदि काबिलियत को नापा जाता तो आज टीचर ही दुनिया के सबसे अमीर इंसान होते क्योकि उन्हें हमसे ज्यादा नॉलेज होता है लेकिन ऐसा नही है, उनकें पढाए लोग उनसे आगें निकल जाते है या जिस छात्र को वो सबसे अच्छा छात्र मानते थे, जो पढाई में अच्छा था वो कही जॉब करता हुआ दिखता है और जिसे वो ताना मारा करते थे, बिल्कुल नालायक समझा करतें थे वो आगे निकल जाता है |

यहाँ यह बात कहनें का यही मतलब है की एग्जाम में आपकें नंबर यह गारंटी नहीं दे सकतें कि आप नौकरी करेंगे या नौकरी देंगे |

असल जिंदगी में जहाँ एग्जाम के नंबरों की कीमत नहीं होती वहीं हम स्कूल और कॉलेज लाइफ में एग्जाम के नंबरों को ही अहिमियत देते है बजाएं सीखनें के | नंबरों के लिए समझनें के बजाएं रटने पर जोर दिया जाता है जो कुछ काम का नहीं रहता लेकिन देर अब भी नहीं हुई है नई शुरुआत कभी भी की जा सकती है | उठिए और आगे बढिए यदि आपकों अपने आप पर विश्वास है तो आप बड़ते जाएगें और सीखतें जाएँगे |

आगें बड़ने की ललक, सीखनें की चाह और खुद पर अटूट विश्वास सफलता का मूल मंत्र है |

जब मैंने अपनी पहली बुक लिखीं थी उस समय मुझे यह नहीं पता था कि क्या मैं यह कर पाऊंगा ? क्योकि पहले कभी भी न मैंने ऐसा कुछ किया था और न ही इसके बारे में कभी भी सोचा था | वहीं मैं ऐसा कुछ लिखनें वाला था जिसकें बारे में न ही मैं किसी से बात कर सकता था और न ही कोई उस बात को समझ पाता और उससे अधिक वो मेरी जिंदगी का एक ऐसा पल था जिसकें बारे में मैं

खुद भी नहीं बात करना चाहता था फिर भी मन में विश्वास था कि मैं यह करूंगा और जो बात अब तक किसी से भी नहीं बांटी वो बुक के पेजों पर ही सहीं दिल की गहराईयों से बाहर तो आएगी |

जैसे मेरे विश्वास ने और कुछ नया करनें की इच्छा ने मेरी एक नई खूबी को खोज निकाला वैसे ही दृढ विश्वास और कुछ करनें की ललक हमारें सामने नए रास्तों को लाकर खडा कर देती है, बस उसे पहचाननें और उस पर चलनें की देरी होती है और रास्तें खुद व खुद मिलतें जाते है लेकिन उसकें लिए शुरुआत करना जरुरी है |

फर्क नहीं पड़ता कि कितने लोग आप पर यकीन करते हैं या नहीं करते. आपको खुद में यकीन होना चाहिए | - पैब्लो

आप पर कोई यकीन करें या न करें यह मायनें नहीं रखता लेकिन आप अपने आप पर यकीन करें या न करें यह मायनें रखता है | यदि लोग आप पर यकीन न करें तो आपका कोई नुकसान नहीं होने वाला लेकिन यदि आप खुद पर यकीन न करें तो यकीन मानिए आपका आगे बड़ने और कुछ करनें का सपना महज सपना बनकर रह जाएगा जो सिर्फ आपके दिमाग में ही जिंदा रहेगा लेकिन असल जिंदगी में कभी भी नहीं आ पाएगा |

यदि लोग आप पर विश्वास करतें है तो इसका ये मतलब नहीं कि आप सफल हो जाएगे | आप सफल तभी होगे जब आप खुद पर यकीन करेंगे और खुद को यकीन दिलाएंगे जो मैं कर रहा हूँ वो सही है और यह मैं करकें रहूँगा | यदि आप उस काम को करनें की योग्यता नहीं रखतें तो कोई समस्या की बात नहीं है क्योकि सभी लोगों में कोई न कोई योग्यता तो कोई न कोई कमी होती है लेकिन इसका ये मतलब नहीं होता कि हम अपनी कमी को ताकत नहीं बना सकतें |

दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं होगा जिसमें कोई कमी न हो चाहें अमीर इंसान हो या गरीब लेकिन किसी काम में सफल होना कहीं न कहीं उस काम को करनें के पीछे छिपे अटूट विश्वास पर निर्भर करता है |

आपने ऐसे कई अमीर लोगों के बारें में सुना होगा जो बार - बार असफल होने के बाद भी सफल हुए लेकिन कैसे ? यदि असफलता मिलनें पर उन्होंने भी हार मान ली होती तो वो भी अरबों लोगों की भीड़ में कहीं खो जाते और आज हम उनकें बारें में बात नहीं कर रहे होते तो सोचना आपकों है कि, आप उन गिने चुनें सफल लोगों में आना चाहतें है या उस भीड़ में जो अपनी समस्याओं में ही उलझी हुई है |

अध्याय - 6

जीत या हार का उत्तरदायी कौन ?

<u>आपका नजरियाँ</u>

सफलता के लिए नजरिया उतना ही जरुरी है जितनी कि काबिलियत | - वाल्टर स्कॉट

नजरियाँ या दृष्टिकोण के बारें में आपनें बहुत कुछ सुन रखा होगा लेकिन कहीं न कहीं हमारें मन में एक सवाल होता है कि क्या सच में नकारात्मक और सकारात्मक नजरियें का हमारें जीवन में इतना फर्क पड़ता है ? यदि मैं अभी तक के अपने एक्सपीरियंस से कहूं तो हाँ हमारें दृष्टिकोण का हमारें जीवन में और हमारें विचारों पर बहुत फर्क पड़ता है |

जब - जब मैं किसी काम को करनें से पहलें उसकों लेकर चिंता करता हूँ तो तब - तब उस काम को करनें में मुझे कठिनाई महसूस होती है, वहीं उसी काम को करनें से पहलें यदि मैं यह सोचता हूँ कि मैं क्यों यह करना चाहता हूँ

और इसको कैसे कर सकता हूँ ? तब मुझे उस काम को करनें में मजा आता है | काम वहीं है लेकिन दोनों बार फर्क सिर्फ नजरियें का है |

पहली बार मैं केवल उस काम में परेशानियाँ देख रहा था तो मेरा दिमाग यह मानकर चल रहा था वो काम कठिन है या मेरे बस का नहीं है, वहीं दूसरीं बार मैं परेशानियों पर ध्यान न देकर केवल उस काम को और बेहतर तरीकें से करनें की कोशिश कर रहा था तो मेरा दिमाग उस काम को और बेहतर करनें के लिए मेरी मदद कर रहा था | दोनों काम एक ही है और काम को करनें वाला इंसान भी एक और दिमाग भी एक लेकिन नजरियें अलग - अलग और काम के रिजल्ट भी अलग - अलग |

सकारात्मक और नकारात्मक नजरियें को हम इस उदाहरण से समझ सकतें है- सकारात्मक नजरियाँ कुछ ऐसा है जैसे फूलों का एक बगीचा जिसमें तरह - तरह के बहुत ही अच्छे फूल लगें है, जिनकी महक चारों ओर फ़ैल रहीं है और लोगों एवं पक्षियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहीं है | इस महक और फूलों की सुंदरता की ओर लोग खिचें चलें आ रहें है | वहीं नकारात्मक नजरियाँ कुछ ऐसा है जैसे एक कूड़े - कचरें का घूरा या ढेर जिसे हमनें गाँवो या शहरों में कई बार देखा होगा | जिस पर मक्खियाँ भिनभिना रहीं होती है और सड़ें - गलें कचरें की महक चारों ओर फ़ैल रहीं होती है जो बीमारी फैलानें वालें कीटों और सुअरों को अपनीं ओर आकर्षित करतीं है |

ऐसे ही इंसान के लिए नजरियाँ होता है, जहाँ सकारात्मक नजरियाँ इंसान को फूलों का बगीचा बना देता है जो अच्छे लोगों को आकर्षित करता है वैसें ही नकारात्मक नजरियाँ इंसान को कूड़ें का ढेर बना देता है जहाँ सिर्फ शिकायतों का ढेर लगा होता है | जैसे कूड़ें के ढेर बीमारियों वालें कीटों को आकर्षित करते है वैसे ही नकारात्मक व्यक्ति ऐसे ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते है जो खुद शिकायतों का ढेर है |

आप किसी काम में सिर्फ गलतियाँ निकाल सकतें हों या उन गलतियों को ठीक करनें की कोशिश कर सकतें हो ये सब सिर्फ आपकें नजरियें पर निर्भर करता है |

हमारा नजरियाँ कैसा होना चाहिए ? इसकों थोडा और विस्तार से जानने के लिए हम इसे दो भागों में बाँट देते है- पहलें में सभी इंसानों को लेते है और दूसरा जब हम लोगों से काम करायेंगे तब हमारा नजरियाँ कैसा होना चाहिए | काम करनें और काम देनें वालें इंसान के नजरियें में बहुत बड़ा फर्क होता है इसलिए हम दोनों लोगों के नजरियें को यहाँ समझनें का प्रयास करेंगे | यदि हम दोनों लोगों के सोचनें - समझनें के नजरियें को समझ जातें है तो काम करना और काम कराना दोनों ही बड़ा आसान हो जाता है |

आपकें दिमाग में आ रहा होगा कि जब मुझे काम देने वाला एक सफल इंसान बनना है तो क्यों मैं काम करनें वालें इंसान के नजरियें को जानू ? आपका सवाल कहीं न कहीं बिल्कुल सही है लेकिन जैसे किसी से अपनें लिए काम कराना एक कला है वैसे ही हम किसी व्यक्ति से उसकी पूरी योग्यता और मन से तभी काम करा सकतें है जब हम उसकें काम के प्रति नजरियें को समझ सकें | भलें ही हम किसी व्यक्ति पर दवाब डालकर काम करा लें लेकिन अच्छे तरीकें से किसी काम को पूरा करानें के लिए उस काम को करनें वालें का मन होना चाहिए और वो तभी होगा जब वो अपनी इच्छा से काम करें और व्यक्ति इच्छा से तभी काम करता है जब वो उस काम को करना चाहें | हम इतना इंतजार तो नहीं कर सकतें कि सामनें वालें व्यक्ति का मन जब तक न करें काम करनें का तब तक हम इंतजार करतें रहें | इसकें लिए हमें उस व्यक्ति के नजरियें को समझनें की जरूरत है जिससे हम उसकों ऐसा माहौल दे सकें जिसमें वो अपनें काम को बेहतर तरीकें से कर सकें |

नजरियें का आसान मतलब यहीं होता है कि किसी काम को या किसी चीज को देखनें का हमारा दृष्टिकोण | हम किसी चीज को कैसे देखतें है और

उसकें बारें में क्या सोचतें है यहीं हमारा उस चीज के प्रति नजरियाँ कहलाता है जो यह निश्चित करता है कि उस चीज को या इंसान को हम पसंद करेंगे या नहीं |

यह आपनें अक्सर देंखा होगा कि ज्यादातर लोग बैठकर सिर्फ हर चीज में कमियां निकालतें रहतें है लेकिन यदि उन्हीं लोगों से यह कह दिया जाएं कि जाईयें और जहां आपकों कमीं दिख रहीं है उसकों ठीक कर दो तो एक ही पल में जहाँ उनकें मुंह के रंग उड़ जाएंगे वहीं दूसरें पल जो अभी कमियां दिख रहीं थी वो सब गायब हो जाएंगी | इसका सीधा - सीधा मतलब यहीं होता है बहुत सी कमियां लोग बिना मतलब की निकालतें रहतें है |

ज्यादातर लोगों का कमियां निकालना कुछ ऐसा होता है जैसे नुक्कड़ पर बैठे कुछ लोग जो रोज सडक के गड्डे को लेकर प्रधानमंत्री से लेकर चपरासी तक को कोसतें रहतें है लेकिन जमीनी स्तर पर कुछ नहीं करना चाहतें है बस उनकें लिए एक मुद्दा चाहिए जो गप्पे मारनें के लिए माहौल बना सकें तो ऐसे लोगों की राय पर ध्यान न देना ही समझदारी है | इन लोगों को अपना समय पास करनें के लिए एक मुद्दा चाहिए तो वो बैठकर हर चीज में कमियां निकालते रहतें है |

मैंने पहलें भी कहा है अब भी कह रहा हूँ कि दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जिसमें कोई न कोई कमी न हो तो हमें अपनी हर कमी को दूर कर भगवान बनने की कोशिश नहीं करनी बस जो कमी सफलता के बीच रुकावट बन रही है, उस कमी को दूर करना है न कि जिसनें जो कहाँ वो मानकर चल पड़ें है महात्मा बनने की ओर | यदि आप ऐसा करेंगे तो शायद आपकों यह जिंदगी कम न पड़ जाए क्योकि लोग कमियां निकालना बंद नहीं कर सकतें इसलिए उस पर ध्यान देना ज्यादा अच्छा है जो जरुरी है |

ऐसा ही कुछ काम के प्रति हमारा नजरियाँ है यदि वो काम पहलें करनें की कोशिश की जाएँ जो ज्यादा महत्वपूर्ण है तो आपकें पास पेंडिग कामों की कमी आ जाएँगी | ज्यादातर लोगों को हमेशा शिकायत होती है कि मैं हमेशा

कोशिश करता हूँ अपनें काम सही वक्त पर करनें की और समय बचानें की लेकिन हर बार असफल हो जाता हूँ | वो इसलिए क्योकि आप उन कामों को ज्यादा समय दे देतें है जो आपकों आगें बड़ाने के लिए बहुत कम महत्व या बिल्कुल भी महत्व नहीं रखतें तो सबसे पहलें जरुरी कामों को ऊपर रखों और बाकी को यदि करना जरुरी है तो ठीक नहीं तो अपनी लिस्ट में से हटा दो |

वारेन बफे के बारे में आपमें से ज्यादातर लोगो ने सुन रखा होगा | एक दिन की बात है, वारेन बफे एक मीटिंग में जाने के लिए अपनी कार में बैठे तो उनकी नजर अपने ड्राइवर पर पड़ी जो काफी परेशान लग रहा था तो वारेन ने उससे पूंछा क्या बात है आज तुम इतने परेशान क्यों लग रहें हो ? ड्राइवर यह बात सुनकर दंग रह गया क्योकि उसको लगा इतना बड़ा आदमी जिसनें कभी भी उससे ऐसे बात नहीं की वो आज उसकी परेशानी पूँछ रहा है तो ड्राइवर ने थोड़े हकलाते हुए कहाँ सर मैं हमेशा कोशिश करता हूँ कि अपनी पसंद के सारे कामों को समय पर कर संकू और इसके लिए दिनचर्या भी बनाता हूँ लेकिन मैं चाहकर भी वो काम कभी भी पूरा नहीं कर पाता |

यह बात सुनकर वारेन बफे ने ड्राइवर को कार साइड में लगाने को कहाँ तो ड्राइवर ने पूंछा लेकिन सर आपको तो एक जरुरी मीटिंग में जाना है ? बफे हाँ जाना तो है लेकिन जब तक तुम्हारी यह समस्या नहीं सुलझती तब तक हम दोनों मिलकर यह समस्या सुलझाएँगे | ड्राइवर को एक पल के लिए लगा वारेन बफे उसके साथ मजाक कर रहें है लेकिन जब उन्होंने कार साइड में लगाने के लिए दोबारा कहाँ तो उसे यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वारेन इतनी जरुरी अपनी मीटिंग को छोड़कर उसकी समस्या सुनना चाहते है |

वारेन ने ड्राइवर से कहाँ एक काम करों पेन और कागज लो और उस पर वो 25 सबसे जरुरी काम लिखों जो तुम करना चाहते थे लेकिन कर नहीं पा रहें थे | ड्राइवर ने कुछ समय लिया और सबसे जरुरी कामों की एक लिस्ट बना ली और वारेन को दे दी तो वारेन ने उस लिस्ट को ड्राइवर को लौटा दिया और कहाँ कि एक काम करों इस लिस्ट को दोबारा देखो कुछ ऐसा तो नहीं है जो तुम बाद

में कर सकतें हो तो उसकों पेन से काटते जाओं | ड्राइवर ने ऐसा ही किया और जो कम जरूरी काम थे उसको काट दिया और बाद में देखा तो अब उसके पास सबसे जरूरी 25 कामों में से केवल 5 ऐसे काम थे, जो ज्यादा जरुरी थे |

ड्राइवर ने इन कामों की लिस्ट फिर वारेन बफे को दी | लिस्ट लेने के बाद बफे मीटिंग में जाने के लिए निकल गए जैसे ही वो ऑफिस के बाहर पहुचें तो ड्राइवर को वो लिस्ट फिर लौटा दी और बोला कि अपना समय लो और देखों कि क्या अभी भी इस लिस्ट में कुछ ऐसे काम है जिसे बाद में किया जा सकता है और यह कहतें हुए मीटिंग के लिए चले गए | वारेन की यह बात सुनकर ड्राइवर थोडा मायूस हो गया और सोचने लगा जब लिस्ट देखनी ही नहीं थी तो क्यों मेरा इतना समय ख़राब किया लेकिन बॉस ने कहा है तो वो फिर से उस लिस्ट को देखने लगा और लगभग 2.5 घंटे के बाद उसनें उस लिस्ट में से दो काम और काट दिए | अब उसके पास जो लिस्ट थी उसमें केवल तीन काम ही ऐसे थे जिसे उसे करना था |

वारेन बफे मीटिंग से लौटकर आते है और ड्राइवर से लिस्ट के बारे में पूंछते है तो ड्राइवर लिस्ट उन्हें दे देता है उस लिस्ट को देखकर वो उसे लौटा देते है और कहते है ये वो काम है जो तुम्हारें लिए बहुत जरूरी है लेकिन तुम अपने सारे कामों को करने के चक्कर में उन महत्वपूर्ण कामों को भी नहीं कर पा रहें थे जो हकीकत में तुम्हारें लिए महत्वपूर्ण है | तुम्हारें लिए महत्वपूर्ण कामों को करने से वो काम रोक रहें थे जो कम महत्वपूर्ण थे और जिन्हें बाद में किया जा सकता था लेकिन तुम उनको भी साथ में करनें की कोशिश कर रहें थे |

वारेन बफे द्वारा ड्राइवर को दी गई सीख से हमें किसी काम को करनें के नजरियें के बारे में एक महत्वपूर्ण बात सीखनें को मिलती है कि हम सभी में यह आदत होती है कि हम कुछ करने की शुरुआत तो करना चाहतें है लेकिन वो शुरुआत नहीं कर पाते क्योकि ज्यादातर समय हम उन कामों को करनें में व्यस्त रहते है जिन्हें बाद के लिए टाला जा सकता था या जो कम महत्वपूर्ण थे लेकिन उन कामों के कारण महत्वपूर्ण काम रह जाते है |

किसी काम के प्रति वारेन का नजरियाँ हमें भी यह बतलाता है कैसे हम उस ड्राइवर की तरह फिजूल कामों में फसे रहतें है और नई शुरुआत करनें से कतराते रहतें है यदि कुछ पल बैठकर हम यह समझ पायें कि हमें ज्यादा जरुरी क्या है तो हम उन फिजूल कामों पर अपनी ऊर्जा बर्बाद न करकें पूरी ताकत से उन कामों को कर सकतें है जो हमें और आगे ले जाने में सहायक हो |

काम के प्रति आपका नजरियाँ आपकें लिए बहुत से रास्ते खोल सकता है और बंद भी कर सकता है | आपनें हमेशा सुना होगा कि अमीर लोग वो काम नहीं करतें जो आम लोग करतें है इसलिए वो अमीर है और हम आम लेकिन ऐसा कुछ नहीं है वो भी वैसा ही करतें है जैसा हम, बस अंतर इतना है कि अमीर लोग ज्यादातर उन कामों में संभावनाएं देखतें है जिन कामों को करनें से अधिकतर लोग बचतें है |

मैं एक आपसे सवाल पूंछना चाहता हूँ- आपके पास तीन काम है, एक काम थोडा आसान है लेकिन उसका मुनाफा भी थोडा कम है, वहीं दूसरा काम थोडा सा मुश्किल है लेकिन उसका मुनाफा पहलें काम से थोडा अधिक है, वहीं तीसरा काम बहुत ही कठिन है लेकिन उसका मुनाफा भी पहलें काम से पांच गुना और दूसरें काम से तीन गुना अधिक है तो आप कौन सा काम करना पसंद करेंगे ? तीनों काम निम्नानुसार है-

पहला काम - आपकों ट्रक के माध्यम से पास ही के गाँव में जो वहां से 70 किमी. है तक गेहूं और जौ लेकर जाना है फिर उस गाँव से 20 किमी. आगें सोयाबीन लेकर जाना है | यह काम आपको दो दिन में करना है |

दूसरा काम - आपकों ट्रक के माध्यम से पास ही के गाँव में जो वहां से 40 किमी. है तक अलसी और ज्वार लेकर जाना है फिर उस गाँव से 20 किमी. पीछे सोयाबीन लेकर जाना है लेकिन रास्ता थोडा ख़राब होनें के कारण आप ट्रक को 60 की स्पीड से तेज नहीं चला सकतें | यह काम आपको एक दिन में करना है |

तीसरा काम - आपकों ट्रक के माध्यम से पास ही के गाँव में जो वहां से 18 किमी. है तक तिल और ज्वार लेकर जाना है फिर उस गाँव से 20 किमी. आगें गेहूं लेकर जाना है फिर गन्ने लेकर आपकों वापिस आना लेकिन रास्ता कच्चा होने के कारण और काफी गड्डे होनें के कारण आप ट्रक को 30 की स्पीड से तेज नहीं चला सकतें | यह काम आपको सात घंटे से पहलें पूरा करना है |

आप किस काम को करना चाहेंगे ? जल्दी सोचिए | काम पहला, जिसमें समय भी ज्यादा है और सडक भी अच्छी है या दूसरा काम, जिसमें दूरी कम है और पैसा ज्यादा या तीसरा काम, जिसमें सडक भी ख़राब है और समय भी कम लेकिन पैसा सबसे ज्यादा | तो आप कौन सा काम करना पसंद करेंगे ?

सभी लोगों ने सोच लिया होगा कि वो कौन सा काम करेंगे | किसी का जवाब पहला तो किसी का दूसरा तो किसी का तीसरा होगा और सबके अपने - अपने तर्क होगें लेकिन अब जरा यह सोचिए कि क्यों आपनें यह काम चुना है और क्यों आपनें दूसरें काम नहीं चुनें ? सबके जवाब अलग - अलग होगे लेकिन मेरा सवाल है आप सबसे, क्या आपमें से किसी ने तीनों कामों को करनें का निर्णय लिया ? यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों ?

यदि आपनें सवाल पर गौर किया होगा तो मैंने कहीं भी यह नहीं कहा कि आपको कोई एक काम करना है तो यदि आपने तीनों कामो को करने का निर्णय लिया था तो बहुत अच्छी बात है लेकिन नहीं तो यह गलत बात है |

इन सवालों को पूछनें का कारण सिर्फ यहीं था कि हम अपनी जिंदगी में वो मौकें नहीं देखतें जो हम देख सकतें थे | जैसे यदि आप यहाँ पर तीनों कामों को चुनते तो जहाँ आपको ज्यादा आमदनी होती वहीं आपका काम करनें का खर्च कम होता और रहा सवाल समय का तो आप समय को अपनी जरूरत के हिसाब से काम को पहलें या दूसरें या तीसरें नंबर पर करके अपने समय को बचा सकते थे | मेरा कहनें का मतलब है जो काम ज्यादा जरूरी था उसकों पहले और बाकि को बाद में किया जा सकता था |

इन सवालों से आपकों यह नहीं जानना था कि आप कठिन को चुनते है या सरल को | इन सवालों को पूंछने का कारण यही था कि आप समझ सकें कैसे एक ही मौके से ज्यादा से ज्यादा फायदा लिया जा सकें |

आपने लोगों को यह कहतें जरुर सुना होगा कि बस मौके मिलनें की देर है जैसे ही मौका मिला तो आगे बड़ने से कोई नहीं रोक सकता या यदि किस्मत में होगा तो फिर मौका मिलेगा या शायद किस्मत में ही नहीं था | हम में से कई लोग जिंदगी भर सहीं मौके का इंतजार करतें रहते है लेकिन समस्या यह नहीं है कि अब तक उन्हें मौके नहीं मिले लेकिन कोई काम आपके लिए बड़ा मौका होगा या नहीं यह कैसे पता चलेगा ? यदि काम या जीवन के प्रति आपका नजरियाँ नकारात्मक है तो मौके का खटखटाना आपको शोर ही लगेगा क्योकि आप केवल उस शोर को ही सुन पा रहें है जो आपके पास बार - बार मौके आने के कारण हो रहा है | यदि आप उस शोर के पीछे छिपे मौके को देख पातें तो स्थिति कुछ और होती |

अधिकतर लोग उस समय घबरा जातें है जब उनकों अपनी जिंदगी में एक बड़ा मौका मिलता है जिसे देखकर वो समझ ही नहीं पातें क्या यह वो ही मौका है जिसका वो बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहें थे ? जब हमारी जिंदगी में कोई अच्छा मौका आता है तब वो अपनें साथ बड़ी कठिनाइया लेकर आता है जिससे हम आने वालें मौके को पहचान न सकें और उन कठिनाईयों को देखकर डर जाए एवं उनसें बचनें की कोशिश करें | आप सोच रहें होगे, जब मौका हमारें लिए आया हुआ है तो क्यों वो हमारें सामनें ऐसे रुप में आता है जिससे हम उसे पहचान न सकें ? इसका जवाब बड़ा ही आसान है | जैसे हर चीज हमारा टेस्ट लेती है कि हम उसकें लायक है कि नहीं, वैसे ही मौका भी हमारा टेस्ट लेकर यह सुनिश्चित करना चाहता है कि वो जिस व्यक्ति के पास गया है वो उसकें लायक है कि नहीं |

कुछ लोग उस समय सबसे ज्यादा डरे - सहमें रहतें है जब मौका उनका दरवाजा अंदर आनें के लिए खटखटा रहा होता है लेकिन यह लोग समझ ही नहीं पाते कि यह जो आवाज है उनकी जिंदगी को बदलनें के लिए एक सुरीला आगाज है | ऐसे लोग तब तक रजाई में छुपकर सोते रहेंगे जब तक उनकें जीवन में आने वाला सुनहरा मौका थक - हारकर लौट न जाए और जैसे ही मौकें ने लौटनें के लिए कदम बढाया वैसे ही इनकी नींद खुली और जैसे ही इनकी नींद खुली तो कुछ लोग बड़े आराम से लेटे - लेटे मौके को जाते हुए देखते रहतें है, वहीँ कुछ बिना पानी की मछली जैसा छटपटाने लगते है उस मौके को पकडनें के लिए लेकिन काफी तेजी से वो मौका हम से दूर चला जाता एवं हमारें पास रहता है केवल पछतावा और उस मौके का इंतजार |

जिंदगी में कभी न कभी हम सभी को एक न एक ऐसा मौका मिलता है जो हमारी जिंदगी को बदलने की ताकत रखता है लेकिन हम उसको पकड़ते है या जानें देते है यह हमारें ऊपर निर्भर करता है | या तो आप मौके को पकड़कर अपना सबसे बड़ा मौका बना सकते है या फिर जिंदगीभर बैठकर दूसरें मौके का इंतजार कर सकतें है | सोचना आपकों है- शुरुआत या इंतजार ?

यदि जिंदगी के प्रति आपका नजरियाँ सकारात्मक है और आप जिंदगी की हर कठिनाई को पूरे जोश के साथ लेते है तो चाहें आप अपने जीवन में आने वालें मौके को पहचान पाएं या नहीं लेकिन वो मौका जरूर आपकों पहचान लेगा और वहीँ किसी काम को करनें के प्रति आपका सकारात्मक नजरिया उस मौके के शोर को भी अपना संगीत बनाकर उसके पीछे छिपे मौके को पहचानने में आपकी मदद करेंगा |

अभी तक मैंने जितने अमीर लोगों के बारें में पढ़ा और जाना है उससे मुझे यही समझ आया कि ऐसा कोई अमीर व्यक्ति नहीं होगा जिसकों आसानी से आगें बड़ने का मौका मिला हो क्योकि अधिकतर अमीर लोगों को बहुत कड़ी मेहनत के बाद ही सफलता मिली है | उन्होंने जितनी मेहनत की है उसी से उन्होंने

बहुत सीखा है | चाहें असफलता ही क्यों न मिली हो लेकिन वो असफलता भी उनकी सफलता के लिए एक शिक्षक ही रहीं है |

आप जिंदगी में आने वाले मौको का इंतजार कर सकतें है या अपने सकारात्मक नजरियें से हर कठिनाई को अपना शिक्षक बना सकतें है जिससे जिन मौको का आम आदमी सारी जिंदगी बैठकर इंतजार करते रहतें है उस मौके को आप खुद बना सकों | किसी अच्छे मौके का बैठकर इंतजार करनें से अच्छा है अपनी लगन, कड़ी मेहनत और कभी न ख़त्म होने वाले विश्वास एवं सकारात्मक नजरियें से उस मौके को खुद बनाया जाए जिससे आपके पास औरो से अधिक मौके होगें, वहीं यदि कुछ मौके छूट भी गए तो जिंदगी भर बैठकर नये मौको का इंतजार नहीं करना पड़ेगा |

जहाँ एक असफल व्यक्ति आगें बड़ने के लिए मौकों का इंतजार करता है. वहीं एक सफल व्यक्ति अपने मौके खुद बनाता है और आगे बड़ता जाता है |

सफल या असफल, आप क्या बनना चाहतें है ? एक ऐसा इंसान जो जिंदगी का अधिकतर समय सोने, खानें, शिकायतें करनें, टीवी देखनें और मोबाइल पर बात करनें एवं नौकरी करनें में बिताता है या एक ऐसा इंसान जो दुनिया में एक खास जगह रखता है | जिसका जीवन दूसरों के लिए मिसाल होता है | जहाँ वो लोगों को रोजगार देता है, वहीँ दुनिया को और बेहतर करनें के लिए अपना योगदान देता है | जहाँ आम लोग अपनी रोज की चीजों के लिए एवं पैसों की किल्लत से परेशान रहतें है, वहीँ यह लोगों की मदद करकें आनंदित होते है |

यह आप पर निर्भर है कि या तो आप किसी चीज में समस्या देख सकतें है या उस चीज में एक मौका | यह बिल्कुल वैसा ही है, जैसे पानी से भरें आधे

गिलास को जहाँ कुछ लोग आधा खाली देखतें है, वहीं कुछ आधा भरा | बस फर्क सिर्फ नजरियें का है क्योंकि गिलास भी समान है और उसमें भरा पानी भी लेकिन देखनें का नजरिया अलग - अलग |

या तो आप समस्या देख सकतें है या उस समस्या का उपाय दोनों बाते निर्भर आप पर करती है, न कि मुझ पर या किसी और पर | आप अपनें लिए रोज अच्छा या बुरा दोनों में से कुछ भी कर सकतें है और उस काम का फल आपकों ही भुगतना है, न कि पड़ोस के कालू चाचा को जिनकी बातों में आकर उस काम को छोड़ दिया था जो तुम्हें करना था या न कि पिंकी दीदी को और न कि किसी रिश्तेदार या पडोसी को | जो आप करोगें, वो आप भुगतोगें इसलिए जब भुगतना हमें ही है तो क्यों न वो काम किया जाएं जो हम करना चाहतें थे | जो काम हमें सफलता की राह पर लें चलें फिर देखतें है क्या होता है ? और दो ही चीजें होती है- सफलता या असफलता |

सफलता और असफलता के साथ अच्छी और बुरी चीज यह होती है जहाँ सफलता केवल रास्ता है न कि मंजिल | जैसे- रास्तें में एक स्टॉप आता है उसके बाद दूसरा वैसे ही एक सफलता के बाद दूसरी सफलता आती है क्योकि आप एक बार सफल होनें के बाद उस सफलता पर रुक नहीं सकतें नहीं तो वो सफलता आपकी असफलता बन जाएँगी, वैसे ही असफलता के साथ अच्छी बात यह है कि आप फिर से शुरुआत करकें और असफलता से सीख लेतें हुए इसे सफलता में बदल सकतें है | जहाँ ये दोनों चीजें बदली जा सकती है, वहीं क्षणिक है लेकिन अमीर बनने के लिए दोनों का महत्व है |

सफल या असफल होनें के लिए सबसे पहलें आगे बडना जरुरी है | यदि आप आगे बड़ेंगे नहीं तो बस वहीं के वहीं खड़े रहेंगे जहाँ अभी खड़े है | अगर आपको जिंदगीभर मौके का इंतजार करना है तो करिए क्योकि बिना चलें न ही मंजिल मिलती है और न ही सफलता | आपकों बस देखनें का नजरियाँ बदलना है, नजारें तो अपने आप बदल जायेंगे |

आप गुलाब में कांटो के बीच फूलों को भी देख सकतें है और फूलों के बीच कांटो को बस फर्क नजरियें का है तो आप क्या चुनेंगे- सकारात्मक नजरियाँ या नकारात्मक नजरियाँ ? आप जो भी चुनेगें उसका भुगतान आपकों ही करना है बस फर्क इतना है, जहाँ नकारात्मक नजरियाँ आपकी खुशियाँ भी खा जाता है वहीं सकारात्मक नजरियाँ आपसे कुछ नहीं लेता केवल आपकों देता है लेकिन नकारात्मक नजरियाँ उन बुराईयों जैसा है जिसे हम सब मानतें है, यह हमारें लिए बुरा है फिर भी हम उस तरफ अच्छी चीजों से ज्यादा आकर्षित होते है |

सकारात्मक नजरियाँ अपनाओं और अमीरी की तरफ कदम बड़ाओं |

बहुत से लोगों को हमेशा यह दुविधा रहतीं है कि सकारात्मक नजरियाँ कैसे अपनायें ? यहाँ सकारात्मक नजरियें से मतलब ये नहीं है कि आप सकारात्मक नजरियें के कारण गलतियों पर भी ध्यान देना बंद कर दें नहीं तो ऐसा करें यदि रास्तें में गड्ढा है तो उसे न देखें क्योकि यदि गड्ढे को देखेंगे तो यह नकारात्मक नजरियाँ होगा और अंकित सर ने अपनी बुक में कहाँ है- सकारात्मक नजरियाँ अपनाना है, तो अब से हम केवल सकारात्मक नजरिया ही अपनाएंगे | अब से हम नकारात्मक चींजे नहीं देखेंगें तो ऐसे में क्या होगा ? ज्यादा कुछ नहीं आप उस गड्ढे में गिर जाएंगे इसलिए जहाँ कमी है जो आपके सफलता के बीच में आ रहीं है तो उसकों देखना नकारात्मक नजरियाँ नहीं है क्योकि वो समस्या इसलिए आपनें देखी है जिससे उसे दूर किया जा सकें |

ज्यादातर लोग सकारात्मक नजरियें को समझें बिना ही अपने जी - जान से इसे अपनाने में लग जाते है और अपनी कमियां भी यह कहते हुए देखना बंद कर देते है कि यदि हम कमी पर ध्यान देंगे तो यह नकारात्मक नजरियाँ होगा अपने प्रति और हम तो सकारात्मक नजरियें वाले इंसान है, यदि हम अपनी कमी

के बारे में सोचेगें तो हमारा खुद पर विश्वास कम होगा इसलिए हम ऐसा नहीं करेंगे | ऐसा नजरियाँ भी कई बार नकारात्मक नजरियें से भी ज्यादा घातक सिद्ध होता है इसलिए मैं बार - बार इस बात पर जोर दे रहा हूँ कि अपने को और बेहतर करनें के लिए हमें अपनी कमियों पर ध्यान देना भी उतना ही जरूरी है जितना कि सकारात्मक नजरियाँ |

यदि हम अपनी या अपने स्टाफ या टीम की गलतियों पर ध्यान नहीं देगें तो वो अपने काम में वह दक्षता हासिल नहीं कर पाएंगें जो उनके आगे बडने के लिए आवश्यक है और यदि आप उनकी गलतियों को यह कहतें हुए नजरअंदाज कर देंगे कि यह तो नकारात्मक नजरियाँ है तो जरा सोचिएं, यदि स्कूल में जब आप किसी सवाल को गलत करतें थे तो टीचर आपकों बतलाता था कि नहीं यह आपने गलत किया है और इसे ऐसे किया करों ? यदि टीचर आपकी उस समय इस गलती को नहीं पकड़ता तो क्या आप अपनी इस गलती को सुधारतें ? ऐसा ही कुछ उन लोगों या आपके साथ होगा यदि वक्त रहतें गलतियों को न सुधारा जाएं |

कई बार किसी चीज में दक्षता हासिल करनें के लिए अपनी गलतियों को ठीक करना पड़ता है नहीं तो यह आप भी नहीं चाहेंगे कि आपका कोई काम गलत हो और उस गलती के कारण आप सफलता से दूर रह जाओं इसलिए जहाँ बेहतर बनने और करनें की बात आती है तो थोडा आलोचनात्मक होना अच्छा है लेकिन उन आलोचनाओं पर भी प्रतिक्रिया देना जो आवश्यक नहीं है, यह गलत है |

कई बार सकारात्मक और नकारात्मक नजरियें के बारें में लोग अपने अनुसार ही समझतें है | जैसे- कुछ लोग जो सिगरेट पीतें थे वो एक क्लास में जाते है जहाँ सकारात्मक नजरियाँ कैसे अपनाएं यह बताया जा रहा था तो वो भी खाली जगह देखकर बैठ जाते है और बड़े ध्यान से सुनने लगते है | जब क्लास ख़त्म हो जाती है तो लेक्चर देने वाले सर सभी से पूंछते है- कोई एक ऐसी सकारात्मक चीज बताईये जो अभी तक आपने की हो ? सब लोगों के अलग

- अलग विचार और काम थे तभी उन सिगरेट पीनें वालों का नंबर आता है तो उनसे भी यहीं सवाल पूंछा जाता है- कोई एक ऐसी सकारात्मक चीज बताईये जो अभी तक आपने की हो ?

एक सिगरेट पीनें वाला बोलता है- सर मैनें अभी तक तो कुछ ऐसा नहीं किया लेकिन आज से मैं अपनी सिगरेट की बुरी आदत को छोड़कर एक नई शुरुआत करूँगा | फिर दूसरें का नंबर आया तो उससे भी यही सवाल पूंछा गया- कोई एक ऐसी सकारात्मक चीज बताईये जो अभी तक आपने की हो ? उसने थोडा सोचा और बोला हाँ सर, मैं सिगरेट पीता हूँ और यही मेरा सकारात्मक काम है | उसके इस जवाब को सुनकर थोड़े देर के लिए सभी लोग चुप हो गए और सोचने लगे एक सिगरेट वाला बोल रहा है कि वो सिगरेट पीना छोड़कर एक सकारात्मक कदम उठाएंगा, वहीँ ये कह रहा है कि वो सिगरेट पीता है यह उसका सकारात्मक कदम है | ऐसा कैसे हो सकता है- एक काम, एक के लिए बुरा है और दूसरें के लिए अच्छा ?

लेक्चर देने वालें सर ने उससे पूंछा सिगरेट पीना कैसे तुम्हारें लिए एक सकारात्मक काम है ? वह व्यक्ति बोला- सर, मैं सिगरेट इसलिए नहीं पीता कि मुझे पसंद है, वो तो इसलिए पीता हूँ जिससे आस - पास और मेरे अंदर के कीटाणु सिगरेट के धुंए के कारण दम घुटने से मर जाएं और मैं स्वस्थ रहूँ |

यहाँ दोनों को एक ही बात समझाने की कोशिश की गई लेकिन जहाँ एक शख्स ने यह समझा कि सिगरेट पीना उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, वहीं दूसरें ने अपने अनुसार ही अपनी गलत आदत को यह कहतें हुए सहीं ठहराया कि सिगरेट पीनें से वो स्वस्थ्य रहेंगा | ऐसा ही कुछ कभी न कभी आपने भी किया होगा अपनी गलत आदतों या गलतियों को छुपाने के लिए कई बार आपनें भी गुस्से या तर्क का सहारा लिया होगा | जिससे सामनें वाले व्यक्ति या अपने आपकों यह समझा सकें कि जो आपने किया वो सहीं था |

किसी बात को समझना कुछ हद तक आपके नजरियें पर भी निर्भर करता है | जैसे दिया गया लेक्चर समान था और समझानें वाला भी और सुनने वालें भी साथ ही लेक्चर को सुन रहें थे लेकिन जहाँ सकारात्मक नजरियें वाले इंसान ने उसको सकारात्मक रूप में लिया, वहीं दूसरें व्यक्ति ने उसके मतलब को ही अपने पक्ष में घुमाकर अपनी गलत आदत को यह कहते हुए सही ठहरानें की कोशिश की, यदि वो सिगरेट पीयेंगा तो वो स्वस्थ्य रहेंगा और इससे उसके शरीर के कीटाणु सिगरेट के धुंए के कारण ख़त्म हो जाएंगे लेकिन हम सभी जानतें है कि सिगरेट हमारें स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकारक है |

यहाँ आपकों केवल यही करना है कि नजरियाँ ऐसा अपनाना है जो सकारात्मक हो, कुछ ऐसा जो आपकों आगे ले जाने के लिए प्रेरित करें न कि पीछे खींचे | हमेशा किसी काम में समस्याओं को देखना या शिकायतें करना बहुत ही आसान काम है लेकिन उन समस्याओं को दूर करना उतना ही कठिन |

कई बार हमें लगता है, दुनिया की जितनी भी समस्याएं है वो भगवान ने केवल हमारें खातें में ही डाल दी है इसलिए हम इतनें परेशान है और बगल के बंगले में रहने वाले शर्मा जी खुश या मेरे चाचा के लड़के को अच्छी नौकरी मिल गई है और वो अच्छा कमाता भी है और हम क्या इतनी सी फालतू नौकरी कर रहें है जिसमें काम ज्यादा और पैसे कम है | ऐसी तमाम शिकायतें और किसी चीज को करनें से पहले जीवन में आने वाली तमाम समस्याएं जो आपको परेशान करती है कभी आप उनकें बारे में बैठकर सोचेंगे तो आप पायगे, ज्यादातर समस्याएँ फालतू होती है जिन्हें हमनें अपने आलसीपन या गुस्से के कारण खड़ा किया है |

ज्यादातर समस्याओं के बारें में मुझे लगता है- समस्या आने से पहलें उस समस्या को दूर करनें के उपाय आ जातें है लेकिन फर्क इतना है कि हम उस उपाय को देख नहीं पाते | कई बार समस्या का उपाय आपके सामनें होता है या हो सकता है आपके ऑफिस की सामनें वाली चाय की दुकान पर चाय पी

रहा हो या आपसे रास्तें में टकरा जाएं या हो सकता है आपके साथ क्रिकेट मैंच देख रहा हो या हो सकता है जब आप अपने मोबाइल पर गेम खेल रहें हो तब वो आपके दिमाग की डोर बेल बजा रहा हो |

मेरे कहनें का मतलब है- हर समस्या का उपाय अक्सर हमारे पास ही होता है लेकिन हम उसे पहचान नहीं पाते, भलें ही वो उपाय दूर बैठा आपको देख रहा हो लेकिन हम अपनी समस्याओं में इतना व्यस्त रहतें है कि उस समस्या के उपाय पर ध्यान ही नहीं देते और बेचारा उपाय आपका इंतजार करते - करते थककर चला जाता है और जब वो चला जाता है तो आप उस उपाय को खोजनें निकल पड़ते है लेकिन समस्या का उपाय फिर मिले कैसे वो तो काफी दूर जा चुका है | जब तक पास था तब तक उसको देखा नहीं केवल समस्याएं ही देखी और जब वो थोडा दूर चला गया तो उपाय खोजनें में थोड़ी मेहनत तो करनी ही पड़ेगी |

अपने देखनें के नजरियें को बदलियें, समस्याएं और उपाय दोनों ही बदल जाएंगे | बस देखनें का तरीका तो बदलो, बुरा तो बुरा हे ही अब अच्छे को भी देखों | हर शख्स में अच्छाई और बुराई दोनों होती है, आप क्या देखतें है ? यदि आप उसमें अच्छाई देखेंगे तो वो इंसान आपके लिए अच्छा है और बुराई तो वो बुरा है |

आप सब्जी और फल खातें ही होगें ? तो ये बताइए, यदि कोई सब्जी या कोई फल हल्का सा ख़राब हो जाता है तो आप उसके साथ क्या करतें है ? क्या उस फल को फेंक देते है या बस उस सड़ें हिस्से को काटकर अलग करकें फिर अच्छे हिस्से का उपयोग कर लेते है ? ज्यादातर लोग शायद पूरा फल न फेककर केवल सड़े हिस्से को ही फेकते होगे तो ऐसा ही नजरियाँ आप अपनी जिंदगी के बारे में भी रख सकतें है | जो चीज काम की है या जो बात जरुरी है, जिससे हम कुछ अच्छा सीखतें है उसको उपयोग करों और बाकि भगवान ने दो कान किस लिए दिएं है ? इसलिए ना जो उपयोगी है उसको एक कान से सुनो

और दिमाग में रख लो और जो बकवास है उसको एक कान से सुनो और दूसरें से निकाल दों |

यदि आप अच्छे लोगों की संगति में है तो आपका नजरियाँ अच्छा ही होगा और यदि संगति बुरी है तो आपकों शायद बचपन में पढ़ा कबीर का दोहा तो याद होगा ही, यदि नहीं तो दो पढ़ लीजिए -

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध |

कबीर संगत साधु की, कटै कोटि अपराध ||

- संत कबीर

व्याख्या:- एक पल, आधा पल या आधे का भी आधा पल ही संतों की संगत करने से मन के करोड़ों दोष मिट जाते हैं |

सज्जन सो सज्जन मिले, होवे दो दो बात |

गदहा सो गदहा मिले, खावे दो दो लात ||

- संत कबीर

व्याख्या:- सज्जन व्यक्ति किसी सज्जन व्यक्ति से मिलता है तो दो - दो अच्छी बातें होती हैं लेकिन यदि गधे से गधे मिलतें है तो परस्पर दो - दो लात खातें है |

कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से यह समझानें का प्रयास किया है, यदि हम अच्छे लोगों के साथ उठते बैठते है तो भलें थोडा ही सही लेकिन अच्छी संगति का प्रभाव हम पर अच्छा ही पड़ेगा, वहीं आप बुरें लोगों के साथ उठते बैठते है

तो उनका प्रभाव हम पर बुरा ही पड़ेगा इसलिए बुरी संगति करनें से लाख गुना अच्छा है अकेला रहना |

आपनें अपनें घर पर अपनी मम्मी - दादी को यह कहतें हुए कई बार सुना होगा कि ख़राब सब्जी को अच्छी सब्जी से अलग कर दो नहीं तो अच्छी सब्जी भी सड़ जाएगी | जैसे- एक सड़ी सब्जी बाकि अच्छी सब्जियों को सडा सकती है उसी तरह एक बुरा इंसान या नकारात्मक इंसान सारे लोगों को नकारात्मक कर सकता है इसलिए संगति ऐसी रखिए जो अच्छी हो नहीं तो अच्छे बनने में सालों लग जातें है, वहीं केवल एक बुरा काम ही आपकों बुरा बनाने के लिए काफी है |

आजकल युवाओं में एक आम धारणा सी बन गई है नजरियें *(Attitude)* को लेकर, आज का युवा ऐटिटूड (नजरियें) को अपनी अकड या टशन के रूप में देखनें लगा है | उनके लिए ऐटिटूड का मतलब सिर्फ, अकड में रहने से है | अकड में रहों थोडा ऐटिटूड में तो अच्छा प्रभाव पड़ता है लेकिन ऐसा नहीं होता, यदि आप लोगों से विनम्रता से मिलोगे तो उसका प्रभाव आपकी अकड वाले बर्ताव से ज्यादा अच्छा पड़ेगा और विनम्रता में रहनें वाला इंसान बड़ी आसानी से लोगों से अपने काम निकाल सकता है |

जरा सोचिएं, आपके पास कोई ऐसा इंसान आता है जो आपसे थोड़ी अकड में बात करता है और उसकें कुछ ही देर बाद दूसरा इंसान आता है जिसका नजरियाँ भी सकारात्मक है और उसकी बातों में जहां विनम्रता है, वहीं सकारात्मक नजरियाँ झलकता है तो आपको कौन सा इंसान ज्यादा अच्छा लगेगा ? अकड वाला या विनम्रता वाला ? मेरे अनुसार सबसे पहलें जो चीज आपकों प्रभावित करेंगी वो होगी उसकी विनम्रता क्योकि विनम्रता एक अक्लमंद इंसान की निशानी होती है |

आपनें बचपन में पढ़ा होगा- विनम्रता पानी की तरह होती है, जैसे पानी का नल जितना नीचें होता है उतनी ही तेजी से पानी बहता है और नल जितना

ऊंचाई पर होता है उतना ही पानी का बहाव धीमा होता है | लोग अक्सर विनम्रता को कमजोरी मानते है और अक्सर यही समझतें है कि विनम्र व्यक्ति कमजोर होता है लेकिन उन लोगों को नदी या समुद्र पर गौर करना चाहिए क्योकि अक्सर पानी जहाँ शांत होता है वहीं पर उसकी गहराई सबसे ज्यादा होती है | पानी जब तक शांत बहता रहता है तब तक वो जीवन देने वाला होता है, वहीं उसका उग्र रूप बड़े से बड़े भवनों को धूल में मिलाकर कीचड़ बना देता है इसलिए जैसे पानी की कोमलता को देखकर यह अंदाजा लगा पाना कठिन है कि पानी का कहर कितना भयानक हो सकता है, वैसे ही विनम्र इंसान की गहराई का अंदाजा लगा पाना थोडा कठिन है |

> *नम्रता से वह कार्य भी बन जाते है जो कठोरता से नहीं बन पातें | - महात्मा गांधी*

यदि आप अकड को ऐटिटूड या नजरियाँ मानकर चल रहें है तो ये आपकी बहुत बड़ी भूल है क्योकि नजरियाँ वो है जो आप देखकर समझतें हो या आपके देखनें का दृष्टिकोण एवं विनम्रता आपका खुद पर विश्वास है जो कि तभी आता है जब आपकों अपनी योग्यता पर विश्वास हो | ज्यादातर वो लोग अकड में रहतें है जो अपनी कमियों को छुपाकर केवल अपने एक पक्ष को लोगों के सामनें रखना चाहते है क्योकि उनकों पता है यदि हम ऐसा नहीं करेगे तो हमारें पास कुछ है भी नहीं जिस पर हम गर्व कर सकें |

अकड की सबसे बड़ी एक समस्या यह है कि लोग अपनी योग्यता, नॉलेज पर इतना अभिमान करतें है कि वो कुछ नया सीखना नहीं चाहते क्योकि उनको लगता है वो सर्वज्ञाता है और दूसरें लोग तुच्छ | यदि आपका ऐसा नजरियाँ है तो मैं यकीन से कह सकता हूँ कि आपको यह बहुत ही घातक सिद्ध होगा | दुनिया में सीखनें के लिए बहुत कुछ है और आप जितना सीखतें जायेंगे उतना ही और सीखनें के लिए आता जाएगा इसलिए कोई यह नहीं कह सकता मुझे सब कुछ आता है और जो यह कहता है वो दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख है | यदि

आप अभिमान में रहेंगे तो आप कुछ नया नहीं सीख पायेंगे इसलिए अकड़ को अभी से जाने दो और विनम्रता को आनें दो |

जो विनम्र है वहीं विश्व विजयी है | - चाणक्य

7

जीवन के तीन इक्के

सपने, धैर्य एवं चरित्र

दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं होगा जिसनें सपने न देखें हो, चाहें वो रात में सोते समय आने वाले सपने हो या अपनी जिंदगी में कुछ करनें या कुछ बनने का सपना हो | चाहें जैसे भी सपनें हो देखें तो हम सबनें है, बस फर्क इतना है कि नींद के समय आने वाले सपनें केवल जागनें तक ही जिंदा रहतें है और कुछ बनने के सपनें कुछ लोगों में थोडा ज्यादा समय तक तो कुछ में तब तक जब तक वो उन सपनें को पाने वाले रास्तें में आने वाली कठिनाईयों से नहीं टकराते |

सपनों से हर शख्स बाकिफ होगा लेकिन यहाँ हम नींद के समय आने वाले सपनों पर चर्चा नहीं करेगें क्योकि वो सपने तब तक ही महत्व रखते है जब तक आप सो रहें हो, आपके उठतें ही वो सपनें हमेशा के लिए सो जाते है | लाखों सपनें हम सोते समय देखतें होगे लेकिन उन में से कुछ ही सपनें हमें शायद ही नींद से उठनें के बाद याद रहतें होगे | ऐसे सपनोँ का हमारें जीवन में महत्व भी उतना ही है, जितनी की उन सपनों की उम्र |

कुछ सपनें वो होते है जो इंसानों के दिल में बसते है और हर हाल में हम उन सपनों को साकार करना चाहतें है चाहें लाख मुसीबते क्यों न आयें | ऐसे ही सपनें आपकी जिंदगी को और बेहतर करनें की ताकत रखतें है लेकिन निर्भर इस पर करता है कि, क्या आप हकीकत में उस सपनें को साकार करना चाहतें है की नहीं क्योकि सपनें भर देखनें से कुछ नहीं होता, यदि सपनें देखनें भर से वो पूरें हो जाते तो आज बात ही कुछ और होती, न कि आप यह बुक पढ़ रहें होते और न ही अपनें सपनें को पूरा करनें के लिए मेहनत कर रहें होते केवल बैठकर सपनें देखतें और वो पूरे हो जाते |

सपनें देखना आसान काम है लेकिन उन्हें पूरा करना कठिन | इसी कारण आपकों ऐसे तमाम लोग मिल जायेंगे जो आज तक तो अपनें सपनें पूरें कर नहीं पायें और लोगों को बैठकर यह राय दे रहें है कि सपनें अपनी औकात में देखना चाहिए तभी पूरें होते है | मेरा सवाल है आपसे, यह कौन निश्चित करेंगा कि आपकी औकात क्या है और आप यह नहीं कर सकतें ? यदि आप सपनें देख सकतें हो तो आप उसे पूरा भी कर सकतें हो लेकिन बिना धैर्य और मेहनत के नहीं |

हमारें आस - पास ज्यादातर वो लोग ही भरें पड़े है जिन्होंने अपनी जिन्दगी में कुछ नहीं किया और सलाह ऐसे देते है जैसे ये सर्वज्ञाता हो और इन्होने पूरी दुनिया देख रखीं हो | अगर दुनिया देख भी रखीं हो तो, यह कैसे आपके बारें में बता सकतें है की आप यह नहीं कर सकतें ? माना कि वो वह नहीं कर पायें जो करना चाहतें थे लेकिन इसका यह मतलब नहीं की दुनिया में कोई भी इंसान न कर पायें |

मैनें अभी तक सपनें के बारें में कुछ जाना है तो वह यह कि सपनें भी लोगों को उनकी औकात के हिसाब से ही आते है क्योकि सपनें भी आने से पहलें यह पक्का कर लेते है कि सामनें वाला व्यक्ति उस लायक है कि नहीं, जो वो मुझे पूरा कर पायें |

आपने देखा होगा और कई लोगों से मिलें भी होगे एवं उनसे बातें भी की होगी लेकिन यदि उनकें सपनें के बारे में पूंछा जाएँ तो उन सभी लोगों के सपने अलग - अलग होगे | कोई डाक्टर बनना चाहता होगा, तो कोई सरकारी नौकरी करना चाहता होगा, तो कोई इंजीनियर बनना चाहता होगा, तो कोई बिज़नेस मेन बनना चाहता होगा, आदि | मेरा कहनें का मतलब है कि जितनें लोग उतने प्रकार के सपनें और सभी के सपनें अलग - अलग |

सपनें भी योग्यता के अनुसार ही लोगों को चुनतें है इसी कारण आपकी जिस चीज में रुचि होगी उसी के अनुसार आपका सपना होगा, चाहें आप कुछ भी करना चाहें | जब सपना आपकों आपकी योग्यता के अनुसार ही चुन रहा है तो आपका अपनें आप पर सफलता को लेकर शक कैसा ?

आप जो सपना देख सकतें है उस सपनें को केवल आप ही पूरा कर सकतें है न कि कोई और, क्योकि वो सपना सिर्फ आपका है, किसी और का नहीं | किसी और की बात मानकर अपने सपनें को पूरा करनें से पीछे हट जाना उन अरबों असफल लोगों की निशानी है जिन्होंने अपनी जिन्दगी में कुछ नहीं किया और अब बैठकर दूसरों को गलत सलाह देकर, वहीं गलती उसको करनें के लिए प्रेरित कर रहें है जिसका फल पैसो की किल्लत के रूप में खुद भुगत रहें है |

जिन्दगी में लोगों के पास हमेशा चुनाव होते है, निर्भर आप पर करता है आप क्या चुनते है ? एक ऐसा रास्ता जिसमें सडक अच्छी दिख रही है, सडक की लंबाई भी कम है और रास्ते में कठिनाइयाँ भी कम है, वहीं दूसरा रास्ता जिसमें सडक है ही नहीं, रास्तें की लंबाई का सिर्फ अंदाजा ही लगाया जा सकता है और रास्तें में कठिनाइयाँ आपका इंतजार कर रही है | बस दोनों रास्तो में फर्क इतना है- पहला रास्ता जो ज्यादातर लोग चुनते है वो जिंदगीभर पैसो की किल्लत और सुख - सुविधाओं के अभाव में जीते है, वहीं दूसरा रास्ता बहुत कठिन है जिस पर बस कुछ ही लोग चलने का हौसला रखतें है और उनमें से भी गिनें - चुनें लोग ही इस रास्तें को पार कर पाते है लेकिन उनकी जिंदगी दूसरों

के लिए मार्गदर्शक का काम करती है और वो जहाँ ऐशोआराम से जीते है, वहीं लोगो के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभातें है | आप क्या चुनते है, पलभर की ख़ुशी और जिंदगीभर का रोना या कांटो का रास्ता लेकिन खुशनुमा जिंदगी ?

सपनें आते सबको है लेकिन सपनों का महत्व कम लोग ही समझ पाते है, वहीं अपने सपनें को पूरा करनें की कोशिश और कम लोग करतें है एवं सपनें को पूरा सिर्फ कुछ ही कर पातें है, तो आप इनमें से किस प्रकार के इंसान है- केवल सपनें देखनें वाला या सपनें को पूरा करनें के लिए कोशिश करनें वाला या सपनें को पूरा करनें की राह में आनें वाली मुसीबतों से डरकर सपनें को छोड़ने वाला या हर - हाल में अपने सपनें को पूरा करनें वाला ?

अभी तक आप जिस भी केटेगरी में हो लेकिन अब से यदि आपको कुछ ठानना है तो वो यह कि आपने जो सपना देखा है उसे हर हाल में पूरा करना है चाहें कुछ भी हो | शांत बैठकर सोचिए क्यों आपको ही वो सपना आया और आप क्या अपने सपने को सिर्फ सपना ही बना रहने देना चाहते है या उस सपनें को हकीकत बनाना चाहते है ? जरा सोचिए, यदि आप अपनें सपनें के लिए मेहनत नहीं करेंगे तो क्या होगा और यदि सपनें को साकार करनें के लिए मेहनत करेंगे तो क्या होगा ?

दुनिया में जितनें भी आविष्कार या कुछ भी नया बनाया गया है वो सब केवल किसी न किसी का एक छोटा सा सपना ही होगा जो केवल इसलिए ही साकार हो पाया क्योकि उन्होंने अपने उस छोटे से सपनें को अपने दिमाग से बाहर निकालकर हकीकत में लाने के लिए जी - जान से मेहनत की नहीं तो सोचिए क्या गूगल, फेसबुक, एप्पल, माइक्रोसॉफ्ट, ताजमहल, हवाई जहाज, आदि बन पाते ? नहीं न क्योकि अगर वो इंसान जिसनें इन्हें बनाया या खोज की यदि अपने सपने को केवल अपने तक ही सीमित रखता और उसके लिए मेहनत न करता तो दुनिया में कुछ भी नया नहीं होता और हम आज भी आदिमानव के दौर में होते जहाँ न कारें, न ही मोबाइल, न ही कंप्यूटर, न ही लाइट और न ही ये तमाम सुख - सुविधाएं होती |

आज तक जितने भी आविष्कार हुए है वो कभी न कभी, किसी न किसी का एक छोटा सा सपना ही रहा होगा लेकिन यदि वो उस सपनें को साकार नहीं करते तो मुझे नहीं लगता वो चीज कभी भी हकीकत में आ पाती | जरा सोचिए, यदि गूगल या हवाई जहाज बनाने का विचार इन के आविष्कारक के मन में नहीं आया होता तो क्या आज ये चीजें हमारें सामनें होती ? नहीं न, तो ऐसा ही कुछ आपका सपना है जो भले ही अभी सिर्फ आपके दिमाग में है लेकिन यदि आप उस सपनें को साकार करनें का हौसला रखते है तो वो ही छोटा सा सपना एक बड़ा रूप ले सकता है, बस उस सपने को चाहिए तो सिर्फ आपका हौसला |

हर काम को करनें से पहले मुसीबतें आती है चाहें काम बड़े हो या छोटे लेकिन अपने सपनें को साकार करनें की जिद यदि उस सपनें को पूरा करनें के बीच में आने वाली रुकावटों से भी बड़ी हो तो आपको अपनें सपने पूरें करनें से कोई नहीं रोक सकता चाहें लाख मुसीबतें क्यों न आये बस आपको धैर्य के साथ आगे बड़ते जाना है और जैसे - जैसे आप बड़ते जायेंगे वैसे - वैसे अपने सपने की ओर कदम बडाते जायेंगे |

आपने अमीर लोगो को यह कहतें हुए सुना होगा- सपने देखिए और अपने सपने को बड़ा रखिए लेकिन मेरा मानना है- *जितना बड़ा सपना, उतनी ज्यादा मेहनत |*

केवल बड़े सपने देखने से साकार नहीं होते और सभी सपने पूरें करनें लायक नहीं होते |

हम अपनी जिंदगी में काफी सपने देखते है लेकिन उनमें से कुछ या कहें एक ही सपना ऐसा होता है जो हमें सोचने पर मजबूर करता है और हमें न ही सोने देता है और न ही चेन से बैठने देता है | यदि आपके दिमाग में भी कोई ऐसा सपना हो जो लोग क्या कहेंगे के डर एवं रास्तें में आने वाली तमाम मुसीबतों से भी न

डगमगाए तो ऐसा सपना ही आपको वो ताकत दे सकता है जो उस सपने को साकार करने के लिए जरूरी है |

सपना देखना तब तक कोई बड़ी बात नहीं है, जब तक आप उस सपनें को साकार नहीं कर लेते |

सपनें सब देखते है और भूल जाते है लेकिन कुछ ही उस सपनें को हकीकत में लानें की कोशिश करते है और थोड़ी ही मुसीबत से डरकर अपना रास्ता बदल लेते है, वहीं चंद लोग हर हाल में अपने सपने को पूरा करनें के लिए जुट जाते है ऐसे ही लोग एक छोटे से सपने को जमीन पर ला पाते है |

कुछ लोग जब सफलता की कगार पर होते है, तभी हार मानकर लौट आते है अगर वो लोग धैर्य के साथ थोड़ी और कोशिश करते तो आज शायद उनकी असफलता सफलता के रुप में जानी जाती |

सपनें दुनिया को कुछ लौटाने और भविष्य को और बेहतर करनें के लिए इंसान के पास एक ऐसी ताकत है जो सब में होती है लेकिन उसका उपयोग आप कैसे करतें है यह आप पर निर्भर करता है | या तो आप भविष्य को और बेहतर करनें के लिए योगदान दे सकते है या तो आप आराम से सपनें देखनें की इस ताकत को जाया कर सकतें है, सोचना आपको है इसलिए सपनें देखें और उसे हर हाल में पूरा करकें दिखाएं |

लोग क्या कहेंगे, पड़ोसी क्या कहेंगे, रिश्तेदार हँसेगे, आदि भावनाओं से बाहर आकर अब अपने सपनों के लिए जीना सीखो | यदि आप अपने सपनें को जीना सीख गए तो मानों आपनें सपनों को साकार करना भी सीख लिया |

सपनों को साकार करने के लिए उस सपनें पर यकीन करना और उस सपनें को जीना ही सपनें साकार करनें की ओर एक बहुत बड़ा कदम है जो बहुत ही कम लोग उठा पाते है क्योंकि ज्यादातर लोग सपनें तो देखतें है लेकिन उस पर

यकीन नहीं करतें और जब आप खुद अपने सपनें पर यकीन नहीं करेगें तो कभी न कभी आपका भरोसा जरूर डगमगाएगा और जैसे ही सपनें पर से भरोसा उठा वहीं आपका वह सपना सिर्फ एक असफलता की इबारत लिखेगा न कि सफलता की इसलिए सपनें देखो और उस सपनें को अपना सब कुछ मानकर उसे तब तक न छोडो जब तक वो पूरा न हो जाए |

धैर्य (Patience)

धैर्य की कमी सफलता की राह में सबसे बड़ी रुकावट में से एक है क्योकि इंसान चाहें कितना भी योग्य क्यों न हो लेकिन यदि वो धैर्य नहीं रख सकता तो वो आज नहीं तो कल अपने काम को बिगाड़ लेगा क्योकि बिना धैर्य के इंसान एक बिना ब्रेक की ऐसी गाड़ी जैसा है जिसकी केवल रफ़्तार बड़ाई जा सकती है लेकिन जरूरत के समय यदि गाड़ी की रफ़्तार को कम नहीं किया गया तो दुर्घटना होना पक्का है, ऐसा ही कुछ ऐसे इंसान के साथ होता है | जो इंसान हर काम जल्दी - जल्दी करना चाहता है चाहें वो काम अच्छे तरीकें से किया जाए या नहीं बस उसको करना है और काम को जल्दी करनें की हडबडाहट में वो उस काम को बिगाड़ लेता है |

कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती, ऐसा इंसान जहां काम को लेकर जल्दबाजी करता है वहीं काम के रिजल्ट को लेकर भी उसमें उत्सुकता होती है और इसी उत्सुकता के कारण कभी - कभी सफलता के पास जब बस पहुचने वाले होते है उससे कुछ कदम पहले ज्यादातर लोग उस काम को छोड़ देते है क्योकि वो अब और रिजल्ट का इंतजार नहीं कर सकते इसलिए अपने सपनें को पूरा करनें की कोशिश बहुत लोग करते है लेकिन जब सफलता सिर्फ मिलनें वाली ही होती है उससे पहले वो पीछे हट जाते है और जो उनकी सफलता हो सकती थी अब केवल वो असफलता होती है |

दुनिया में बहुत सारे लोग इसलिए गरीब या असफल नहीं है क्योकि उन्होंने मेहनत नहीं की. वो तो इसलिए असफल है क्योंकि उनमें धैर्य की कमी थी जिस कारण से उन्होंने सफलता तक पहुचने के पहलें ही अपने पैर पीछे खीच लिए |

कहतें है, रात में सबसे ज्यादा अँधेरा उस समय होता है जब केवल सुबह होने को कुछ ही समय शेष हो लेकिन ज्यादातर लोग सुबह से पहलें इस अँधेरे को देखकर डर जाते है और पूरी मेहनत से भले ही उन्होंने पूरी रात काट दी लेकिन जब सुबह होने वाली थी उसके पहले ही उनका धैर्य डगमगा जाता है और उनके दिल में सफलता की जो उम्मीद थी वो टूट जाती है इसलिए जब - जब आपके सपनें के बीच में मुसीबतें आये तो उसका मतलब यही होता है कि वो सपना आपका टेस्ट लेना चाहता है कि क्या आप उस सफलता के लायक हो की नहीं ? अगर नहीं तो थोडा और मेहनत करनी पड़ेगी और यदि हाँ तो सफलता बस मिलने ही वाली है लेकिन जितनी बड़ी सफलता उतनी गहरी काली अँधेरी रात |

जैसे सुबह से पहले गहरी अँधेरी रात होती है वैसे ही सफलता से पहलें आने वाली सबसे बड़ी कठिनाई ही आपका सबसे कठिन टेस्ट लेती है जो यह जानना चाहती है कि, क्या आप अब इस लायक हो की इस सफलता को संभाल सकों ? यदि सफलता की राह में कठिनाई बहुत बड़ी है तो इसका मतलब है सफलता केवल कुछ कदम दूर है बस आपको धैर्य के साथ आगे बड़ते जाना है |

चाहें अमीर बनना हो या अपने सपनों को साकार करना हो, आपकों धैर्य रखना सीखना ही पड़ेगा अगर आपमें धैर्य नहीं है तो आप सफल नहीं हो सकतें |

आप इतिहास उठाकर देख लीजिए चाहें राज्य के लिए युद्ध हो या भारत देश को आजाद करनें के लिए महापुरुषों द्वारा कियें गए आंदोलन या कुछ नया सीखना हो या कोई पुस्तक पढना हो या चाहें अमीर लोग ही क्यों न हो उन्होंने भी अपने सपने को पूरा करनें के लिए धैर्य के साथ तमाम कठिनाईयों को दूर करकें ही सफलता को प्राप्त किया है क्योकि तुक्के से सफलता कम ही लोगों को मिलती है और यदि तुक्के से सफलता मिल भी गई तो वो भी क्षणिक ही होती है |

बिना धैर्य का इंसान अपने लिए तो समस्या हे ही, वो दूसरों के लिए भी एक समस्या से कम नहीं होता |

बिना धैर्य के इंसान के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता क्योकि उसका पता ही नहीं होता वो कब अपना धैर्य खो दे और आपके लिए समस्या बन जाए | ऐसे इंसान चलतें फिरते बम जैसे होते है उन्हें बस थोडा सा उकसाने की देर है और वो उसी तरह फट पड़ते है जैसे किसी बम में जलती तीली लगानें से बम फट जाता है |

धैर्य से काम लेना जहाँ आपके व्यवसाय, नौकरी में उपयोगी होता है वहीं आपके रिश्तो एवं परिवारिक जीवन में महत्वपूर्ण होता है | जब धैर्य के फायदे

इतने अधिक है तो क्यों न आप भी अब धैर्य को अपनी जिंदगी में शामिल करें और चाहें जो हो जाए सब काम धैर्य के साथ करें | यदि आपनें ऐसा किया तो इसका फर्क आपकी जिंदगी में जहाँ सकारात्मक पड़ेगा वहीं आप वो गलतियाँ करनें से बचेगे जो ज्यादातर लोग करतें है और सफलता से दूर रह जाते है |

चरित्र (Character)

यह चरित्र ही है जो विपत्तियों में अभेद्द दीवारों में भी मार्ग बना लेता है | - स्वामी विवेकानंद

चरित्र वृक्षवत है और यश उसकी छायावत | हम किसी विषय में जो सोचते हैं, वह तो छाया है, वास्तविक वस्तु तो वृक्ष है | - अब्राहम लिंकन

हमारा चरित्र कैसा होना चाहिए या चरित्र का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इस पर लोगो की राय हमेशा अलग - अलग रही है लेकिन एक बात पर सभी लोग सहमत रहे है और वो है कि- *चरित्र कुछ ऐसा होना चाहिए जो पानी की तरह निर्मल हो |*

इंसान का चरित्र इंसान का दर्पण होता है जैसा उसका चरित्र होगा वैसा ही वो इंसान होगा | आप क्या सोचते है ? जैसा इसका महत्व है, वैसे ही आप क्यों ऐसा सोचते है वो आपके चरित्र पर निर्भर करता है | आपके विचार कैसे होगे- अच्छे या बुरे, यह सब आपके चरित्र पर ही निर्भर करता है |

एक अच्छे चरित्र का व्यक्ति अच्छे विचारों का स्वामी होता है उसके दिमाग में हमेशा अच्छे विचारों का संचार होता है और वहीं उसके स्वभाव और व्यक्तित्व में झलकता है लेकिन बुरे चरित्र के व्यक्ति का दिमाग एक खुले नाले की तरह होता है जहाँ केवल गंदे विचार ही अपना घर बनाएं बैठे रहते है और जो जहाँ उसके लिए हानिकारक है वहीं समाज के लिए एवं जो उसके साथ मित्रता किए है उनके लिए वैसे ही हानिकारक है, जैसे- अच्छी सब्जियों के बीच रखीं एक सड़ी सब्जी, जिसकी संगति में अच्छी सब्जियां भी सड़ जाती है |

यदि आपका चरित्र अच्छा है तो वो ही आपको हर विपत्ति से बाहर निकालकर सफलता की राह पर ले आएगा और आपके अच्छे विचार विपत्ति रुपी दिवाल को पार करके आगे बड़ने का कोई न कोई रास्ता खोज लेगें |

चाहें विपत्ति कितनी भी बड़ी क्यों न हो आपका चरित्र और आपके विपत्ति को देखनें का नजरियाँ ही वो कुंजी होती है, जो आपको हर विपत्ति को दूर करनें की ताकत देती है |

चरित्र इंसान के लिए एक वृक्ष के समान है और विचार, सोच, नजरियाँ, आदि ये सब उसकी शाखाएं | जब आप केवल वृक्ष की शाखाओं से ही अपने आपकों सफल बना सकतें है तो जरा सोचिए यदि चरित्र रुपी वृक्ष आपका अच्छा है तो आप क्या नहीं कर सकतें |

मन की निर्मलता, सोच, विचार, लग्न, आदि आपके चरित्र पर ही निर्भर करतें है यदि आपका चरित्र अच्छा है एवं आप चरित्रवान व्यक्ति है तो ये चीजें भी आपको सकारात्मक रुप से आगे ले जानें में योगदान देगी, वहीं यदि आपका चरित्र निर्बल है तो यहीं सब आपके लिए पीछे खीचनें का काम करेंगी और इनका प्रभाव आप पर नकारात्मक ही पड़ेगा |

जैसा आपका चरित्र होगा, वैसा ही आपके चरित्र रुपी वृक्ष के फल होगे | यदि चरित्र अच्छा है तो फल भी बड़े स्वादिष्ट होगे, अगर चरित्र निर्बल है तो आप फलों को तो भूल जाओं क्योकि उस वृक्ष में फल नही सिर्फ कांटे ही होगे जो आपको और आपके अपनों के लिए ही चुभनें वाले है |

चाहें आपकी उपलब्धी जितनी भी अधिक हो और भलें ही आपका यश दूर - दूर तक क्यों न फैला हो लेकिन यदि आपका चरित्र निर्बल है तो कभी न कभी आपका यह यश जरुर मिट्टी में मिल जायेगा एवं आपकी उपलब्धी आपके चरित्र के विकार रुपी अँधेरे में हमेशा के लिए खो जायेंगी फिर आपको लोग इसलिए याद नहीं करेंगे कि आपने क्या नेक काम कियें, वो केवल आपके गलत कामों के कारण आपके माथे पर लगे कलंक को याद करेगें | जहाँ चरित्रवान व्यक्ति का यश दिन दूना, रात चौगना फैलता है, वहीं निर्बल चरित्र के व्यक्ति की चारों - ओर उसकी बुराईयों की चर्चा उसके वहां पहुचने से पहले ही पहुच जाती है |

जितना बलशाली आपका चरित्र होगा उतनी ही अच्छी आपकी सोच होगी और जितनी अच्छी सोच होगी उतना ही अच्छा आपका नजरियाँ होगा |

यदि वृक्ष बलशाली और सेहतमंद है तो उसकी शाखायें अवश्य ही सेहतमंद होगी एवं यदि वृक्ष ही निर्बल और रोगग्रस्त है तो उसकी शाखायें पक्का निर्बल होगी | ऐसा ही कुछ आपकी सोच, विचार, नजरियें के लिए कहाँ जा सकता है, चाहें आप अपनें नजरियें को जितना भी सकारात्मक करनें की कोशिश क्यों न कर लें यदि आपका चरित्र अच्छा नहीं है तो आप किसी भी कीमत पर अपने नजरिये और विचारों को सकारात्मक नहीं कर सकतें | यदि बाकई में आप

अपने नजरियें को बदलना चाहते है तो पहले अपने चरित्र को बदलियें | यदि वृक्ष निर्मल और सेहतमंद रहेगा तो उसकी डालियाँ अपने आप ही सेहतमंद हो जाएगीं |

बुरे चरित्र के व्यक्ति अपने छल - कपट के दम पर जल्दी सफलता तो पा सकतें है लेकिन उनकी यह सफलता क्षणिक मात्र होती है क्योकि आज नहीं तो कल उनको अपने कर्मो का फल तो जरुर मिलेगा और बिना योग्यता अर्जित किया गया राजपाठ जब राजाओं - महाराजाओं का नहीं चला तो आप समझ ही सकतें है ऐसे लोगो का कितना चलेगा | आपने अक्सर सुना होगा या अख़बार में पड़ा होगा कि कोई अरबपति इंसान जो पहले बहुत अमीर था जिसके यहाँ तरह - तरह के ऐशोआराम और सुविधायें थी लेकिन कुछ समय बाद उनकें या उनकें वंशजो के दिन गरीबी में निकलें ऐसा ही कुछ क्षणिक सफलता वाले इंसानों के साथ होता है |

यदि आपका चरित्र कमजोर है तो भी चिंता की कोई बात नहीं है क्योकि इस दुनिया में हर चीज में बदलाव संभव है तो आप भी अपने चरित्र में बदलाव कर सकतें है | भलें ही अभी तक आपका चरित्र कैसा भी रहा हो लेकिन यदि आप चाहें तो उसमें भी सकारात्मक बदलाव किए जा सकतें है बस अपने को और बेहतर इंसान बनाने की चाह होनी चाहिए यदि आपके दिल में अपने को और बेहतर इंसान बनाने की चाह है तो आप कुछ भी कर सकतें है |

कमजोर चरित्र के व्यक्ति सफलता तो पा सकते है लेकिन यह सफलता कब तक टिकेगी यह नहीं कहा जा सकता और कितनी सफलता मिलेगी इस पर भी संशय है | यदि आप सफलता का महल बनाना चाहतें है तो उसके लिए आपके चरित्र का बलबान होना आवश्यक है क्योकि जैसे घर की मजबूती उसकी नीव पर निर्भर करती है वैसे ही आपके सफलता रुपी महल की मजबूती आपके चरित्र की मजबूती पर निर्भर करती है | यदि छोटा मकान बनाना चाहते है तो जैसे छोटे मकान के लिए कमजोर नीव भी चल जाती है वैसे ही क्षणिक सफलता के लिए कमजोर चरित्र से भी काम चल जाता है लेकिन जितना अच्छा

चरित्र उतनी बड़ी सफलता और उतने अच्छे विचार एवं जितना कमजोर चरित्र उतने ही नकारात्मक विचार और गंदी सोच |

यदि आप गंदी सोच के साथ तंगी में अपनी जिंदगी बिताना चाहतें है तो अपने चरित्र के लिए कुछ मत करियें | मैं तो कहता हूँ और अपने चरित्र को कमजोर बना लीजिए लेकिन यदि आप ऐसा नहीं चाहतें तो अभी से अपने चरित्र को ताकतवर बनाने के लिए लग जाइये |

चाहें बुराई कोई भी हो हमें अच्छाई से ज्यादा आकर्षित करती है, वैसे ही अपने आपकों बेहतर करनें के लिए थोड़ी मेहनत से कुछ नहीं होने वाला क्योकि जब तक अटल विश्वास नहीं रहेगा तब तक कुछ नहीं होगा इसलिए यदि कुछ बनना चाहतें हो एवं किसी चीज को पाना चाहते हो तो उससे पहलें उस चीज को पाने लायक बनना पड़ेगा | भलें ही आपको अभी यह समझ न आयें कि क्यों में आपको अपनी अंदर की खामियों को दूर करनें के लिए प्रेरित कर रहा हूँ लेकिन यदि आप कोशिश करेंगे अपनें को और बेहतर करनें की तो यकीनन आपका नजरियाँ इस पुस्तक के खत्म होनें तक बदल चुका होगा और आप एक नई शुरुआत करनें के लिए कमर कस चुकें होगे |

हम गरीब या आम या असफल इसलिए नहीं होते कि हम योग्यता नहीं रखतें बल्कि इसलिए है क्योकि हम जिंदगी में बार - बार वहीं गलतियाँ करतें रहतें है जो हमें आगे बड़ने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | ज्यादातर गलतियाँ इतनी छोटी होती है जिन्हें हम चाहकर भी नहीं देखते और यदि देख भी लिया तो उन्हें नजरअंदाज कर देते है इसलिए यदि अमीर बनना है तो उससे पहले अमीर बनने के लिए तैयारी करना जरुरी है तभी अमीरी की शुरुआत की जा सकती है |

दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जिसे बदला न जा सके चाहे असफलता को सफलता में बदलना हो या अपने चरित्र को बुरे से अच्छा बनाना हो या गरीबी से अमीरी की ओर कदम बडाना हो या अपनी किस्मत को बदलना

हो इस दुनिया में हर चीज को बदला जा सकता है बस चाहिए बदलने का हौसला और अपने पर विश्वास |

भगवान ने अपने लिए चुनाव के मौके हमें ही दिए है और हम क्या चुनते है उसका ही फल हम भुगतते है | आप चाहें तो अपनी इसी तंग हाली वाली स्थिति को चुन सकतें है या अपनी किस्मत खुद लिख सकतें है, अब सोचना एवं करना बस आपको है | आप आज जो करेंगे वैसा ही कल आपका होगा | जरा सोचिए- दो पल की ख़ुशी फिर कांटो की सेज या थोड़ी कठिनाई फिर सुनहरें दिन ? चुनाव आपका है, आप क्या चुनते है यह सिर्फ आप पर निर्भर है लेकिन जो आप चुनेंगे उसका ही फल आप पाएंगे |

जब फल आपकों ही पाना है तो अपने बारे में फैसलें लेने का अधिकार भी आपका ही होना चाहिए तो क्यों आप अपने बारे में फैसले दूसरों की बातों में आकर लेते है ?

जरा सोचिए- यदि आप अड़ोसी - पडोसी, रिश्तेदार, दोस्तों, आदि की बातों में आकर वो काम नहीं करते जो आप करना चाहतें थे या रास्तें में ही अपने लक्ष्य को इसलिए छोड़ देते है कि पापा नौकरी के लिए कह रहें है तो अब समय नहीं रहेगा अपने सपनें पूरे करनें के लिए या लोगो के ताने सुनकर- *तेरे बस का कुछ नहीं है* | ऐसे बहुत से कारण है जो आपको अपने सपनों को छोड़ने पर मजबूर करते है और आप उन कारणों के कारण पीछे भी हट जाते है लेकिन क्या आपने सोचा है, भलें ही आपके पास पीछे हटने के लिए लाख कारण थे फिर भी आपके पास कोई न कोई एक कारण तो जरुर रहा होगा आगे बड़ने के लिए, तभी तो आपने आगें बड़ने के लिए कदम बडाये, नहीं तो न करनें के कारण आगे बड़ने से पहलें भी रहें होगे तो तब आप आगे बड़ने का ठान सकते है, तो अब क्यों अपने सपने को पूरा करनें से पहलें लौट रहें है ?

वो इसलिए तो नहीं अब आप भी उन लोगों की बातों में आकर जिन्होंने आज तक अपनी जिंदगी में कुछ नहीं किया लेकिन राय ऐसे देते है जैसे सर्वज्ञाता हो, ऐसे लोगो की राय मानकर अपने जीवन का फैसला कर रहें है |

किसी की राय मानकर या दबाव में आकर फैसला करनें से पहले आपको यह अच्छे से सोच लेना चाहिए, जीवन आपका है आप जो फैसले करेंगे उसका असर आप पर ही होगा न कि मुफ्त की राय देने वाले लोगो पर या आपके परिवार या दोस्तों पर तो यदि आप दूसरों की बातों में आकर अपने सपनें को साकार करनें से बच रहें है तो तंग हाली और गिलानी भरी जिंदगी अपने लिए आप ही चुन रहें है क्योंकि आपके पास मौका था और रहेगा अपनी किस्मत खुद लिखनें का लेकिन यदि आप अपनी इसी हालत में खुश है तो रहिए | भलें ही आप कर सकतें थे लेकिन न करने की गिलानी में जिंदगी भर अंदर ही अंदर घुटते रहिए फिर देखिएगा जिन लोगों की राय में आकर आपने अपने अंदर की ताकत को कम आका अब वो ही आपको सड़े भटे के भाव नहीं पूछेगे और जब - जब आप आगे बड़ने का ठानेगे तब - तब आपको पीछे खीचनें के लिए आपके पास आ जायेगें |

सफलता के लिए मायनें यह नहीं रखता कि आपके बारे में लोग क्या सोचते है, मायने तो यह रखता है आप क्या सोचते है ?

आप अपने बारे में लोगो की सोच तब तक नहीं बदल सकते, जब तक आप उन्हें गलत साबित न कर दे और आप गलत साबित उन्हें तब ही कर सकतें है जब आप अपने सपनें को साकार करकें दिखाएँ | इसके लिए आपकों अपने पर विश्वास होना चाहिए, चाहें लोग आप पर विश्वास करें या न करें क्योकि लोगों के आप पर विश्वास करनें से जब तक कुछ नहीं होने वाला तब तक आपका अपने

पर विश्वास न हो इसलिए लोगों की आपके बारे में राय से आपको तब तक फर्क नहीं पड़ेगा, जब तक आपका अपने आप पर भरोसा कायम रहेंगा |

आसान शब्दों में कहा जाए तो वो आप ही है जो अपने सपनें को साकार कर सकतें है क्योकि जो सपना आपने देखा है उसको कैसे पूरा किया जाए, यह आपसे बेहतर कोई नहीं समझ सकता तो यदि आप सपनें देख सकतें है, तो उसे पूरा भी कर सकतें है | जब सपना आपका तो उसको पूरा करनें की जिम्मेदारी भी आपकी है क्योकि सपने भी उन्हीं लोगो को चुनते है, जो उन्हें पूरा कर सकतें है | जब सपनें ने आपको चुना है तो इसका यही मतलब है, आप उस सपनें को पूरा करनें का हौसला रखतें है बस शुरुआत करनें की देर है, चलतें - चलतें मंजिल खुद व खुद ही मिल जायेंगी |

अध्याय - 8

जीवन के दो महत्वपूर्ण स्तंभ

<u>समय एवं ज्ञान</u>

धन को बर्बाद करें तो आप केवल निर्धन होते हैं लेकिन समय बर्बाद करते हैं तो आप जीवन का एक हिस्सा गंवा देते हैं | - मिशेल लेबोएफ

मुझे लगता है समय का सदुपयोग करना सबसे कठिन काम है क्योकि हमारे आस - पास इतनी सारी चीजें है जो हमें अपनी ओर आकर्षित करती है और हम न चाहकर भी उन चीजों में अपना समय बर्बाद करतें रहतें है | समय जितना महत्वपूर्ण है उतना ही लोग इसकी कद्र कम करतें है और अपने समय को इधर - उधर की चीजों में बर्बाद करतें रहतें है |

मैंने समय के सदुपयोग के बारे में बहुत से महापुरुषों के विचार सुने और पढ़े है एवं काफी पुस्तको में भी समय के महत्व के बारे में पढ़ा है और चाहें सफल लोग हो या हमारें बुजुर्ग हमें समय के महत्व से रुबरु करातें रहें है लेकिन लाख कोशिशों के बाद भी समय का सदुपयोग कैसे किया जाएँ इसको समझपाना मुश्किल होता है और यदि मैं अपने बारे में कहूं तो मेरे लिए काफी मुश्किल रहा क्योकि हमें यह तो समझा दिया जाता है कि समय को बर्बाद नहीं करना है एवं इसका सदुपयोग करना है लेकिन यह नहीं बताया जाता यह आख़िरकार किया कैसे जाता है ? यदि हमें पहलें से पता होता कि समय का सदुपयोग कैसे करें तो हम तरह - तरह के समय के सदुपयोग के विचार नहीं पढ़ रहें होते |

समय का सदुपयोग कैसे किया जाए ? यही यदि हमें समझ आ जाए तो हम भी समय को बर्बाद न कर अच्छे कामों में लगा सकतें है लेकिन कैसे ? हमें कह तो दिया जाता है समय का सदुपयोग करनें के लिए पुस्तकें पढ़े, टीवी एवं मोबाइल में अपना समय जाया न करें लेकिन यह कहना आसान होता है करना कठिन क्योकि हम कुछ पुस्तकें पढ़ सकतें है अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए लेकिन ज्यादातर लोगों को यह पता ही नहीं होता उनको करना क्या है ? उनका ज्यादातर समय अपने व्यवसाय या नौकरी करनें में फिर मोबाइल पर बात करनें, वीडियो देखनें, गेम खेलनें और लोगों के साथ गप्पे लगानें में जाता है और बचा समय सोने में | यह उनकी रोज की दिनचर्या है, अब ऐसे लोग आख़िरकार समय का महत्व कैसे जानेगें क्योकि ज्यादातर लोग भले ही अपनी स्थिति से खुश नहीं है फिर भी वो अपनी आर्थिक तंगी की हालत को बदलनें के लिए कुछ नहीं करना चाहतें |

यदि लोग अपनी स्थिति को बदलना चाहतें तो, जो वो अपना समय लोगों के साथ बिना सिर - पैर की बाते करने, गेम खेलने एवं वीडियोज देखकर बर्बाद करतें है वो समय अपने आप को और बेहतर करनें में खर्च कर सकतें थे | मैं मानता हूँ जिंदगी केवल काम के लिए नहीं है, हमें मनोरंजन भी करना चाहिए

लेकिन मनोरंजन का समय भी निश्चित होना चाहिए और यदि नई - नई चीजों को सीखने में अपना समय लगाएं तो लोगों का यह बहाना ही ख़त्म हो जाएगा कि- *वो मैं नहीं कर सकता क्योकि वो मुझे नहीं आता |*

कोई चीज आपको इसलिए नहीं आती क्योकि आपने वो चीज सीखनें की कोशिश ही नहीं की और शायद आपका कहना होगा- *मैं व्यस्त था मेरे पास समय नहीं था इसलिए मैं सीख नहीं पाया* लेकिन आपके पास समय कैसे होता ? क्योकि आप अपना समय टुकडो में ही सही फिजूल कामों में खर्च कर रहें थे जिस कारण आपके पास कुछ नया सीखने का समय ही नहीं बचा |

समय बचानें का यह मतलब नहीं है कि केवल आप एक घडी की तरह बन जाओ और हर काम समय पर करना और जितना समय उस काम के लिए निश्चित किया है उतनें समय में ही करना यदि नहीं हुआ तो अब कैसे करें क्योकि अब आगे का समय किसी और काम के लिए तय किया है | ऐसा करनें पर आप जिंदगी के मजे लेना ही भूल जायेंगे क्योकि जिंदगी के खास पल अपना ही रूटीन फॉलो करतें है, न कि मेरा या आपका |

कौन कहता है ज्ञान केवल पुस्तकों और पढनें से ही मिलता है ? ऐसा किसनें कहा आप समय का सदुपयोग तब ही कर रहें होगे जब आप अपने खाली समय में पुस्तक पढ़ रहें होगे अन्यथा यह आपका समय बर्बाद करना कहलायेगा | समय का सदुपयोग तब ही नहीं होता जब आप कुछ नया सीख रहें होते है या काम कर रहें होते है या पुस्तक पढ़ रहें होते है, समय का उपयोग आप अपने आपकों और बेहतर बनाने और अच्छी - अच्छी यादों को सजोनें के लिए भी कर सकतें है |

यदि सबसे अच्छे शिक्षक की बात की जाए तो मेरे अनुसार सबसे अच्छी शिक्षक प्रकृति होती है, जो न आपसे सिखाने के पैसे लेती है और न ही कभी आपको सिखाना बंद करती है लेकिन इसके साथ एक समस्या यह होती है कि इससे सीखना जितना आसान है उसको समझना उतना ही कठिन क्योकि अपने

आस - पास की चीजें देखतें सब है लेकिन उनकें अंदर छुपी सीख को समझ नहीं पाते इसलिए ज्यादातर लोग ज्ञान और समय के उपयोग को लेकर यह मानते है कि घडी के अनुसार चलना और किताबों में छपे शब्दों को पड़ना ही ज्ञान और समय का उपयोग है लेकिन जो ज्यादातर आविष्कार हुए है यदि उन्हें देखा जाए तो उनके पीछे की सोच कहीं न कहीं प्रकृति से ही प्रेरित रहीं है |

बहुत से लोगों में ये दुविधा होती है जब उनका कुछ पक्का काम ही नहीं है या जैसे काम मिला तो कर लिया नहीं तो कुछ नहीं ऐसे में कैसे समय का सदुपयोग हो क्योकि उन्हें पता ही नहीं है उन्हें क्या करना है तो कैसे वो नई चीजें सीखें ? ऐसे लोग अपने समय को बैठे - बैठे या ग्राहक के इंतजार में या लोगों से फिजूल की बातों में काटते है और यदि इनको समझाया जाए की समय का उपयोग करें तो उनको यह समझापाना मुश्किल होता है कि आख़िरकार समय का उपयोग किया कैसे जाएं क्योकि एक तो वो अपनी स्थिति में खुश है और दूसरा वो कुछ करना नहीं चाहतें |जो कुछ करना नहीं चाहतें उनको समझाने का कोई मतलब नहीं है क्योकि जब तक हम अपनी स्थिति में खुश है तब तक हम कुछ अलग करनें से डरते है और वो इसलिए क्योकि हम अपने चारो - ओर एक ऐसा कम्फर्ट जोन बना लेते है जिसके बाहर निकलकर कुछ करनें की हम हिम्मत नहीं कर पाते | यदि आपको कुछ अलग करना है तो सबसे पहले इस कम्फर्ट जोन से बाहर आना पड़ेगा तभी ही आप कुछ अलग कर पायेगे |

समय का सदुपयोग या दुरपयोग इस बात पर निर्भर करता है कि आप उसको उपयोग कैसे कर रहें है क्योकि हर किसी के पास रोज 24 घंटे होते है और उसका हम अपनी - अपनी तरह से उपयोग करतें है चाहें दिन - रात पैसे कमाने में या सोने - खाने में या टीवी और मोबाइल पर लेकिन समय सबके पास रहता है और उसे खर्च भी सब करतें है |

दिन - रात पैसे कमाने में समय खर्च करना भी एक अच्छी बात नहीं है क्योकि इससे आप जिंदगी के वो खूबसूरत पल नहीं जी पाते जो आप अपनों के साथ बिता सकतें थे, वहीं कुछ नहीं करना सोते - सोते समय बिताना भी अच्छी

बात नहीं है क्योकि इससे आप जिंदगी के वो तमाम मौके छोड़ देगे जो आपको आपके सपनें की ओर ले जा सकतें थे |

वहीं दिनभर किताबों में घुसे रहना भी अच्छा नहीं है क्योकि इससे आपको ज्ञान तो मिलेगा लेकिन ज्ञान का महत्व तब सबसे ज्यादा होता है जब उसको हम वास्तविकता में उपयोग कर सकें और उपयोग आप तब ही कर सकते है जब किताबों से बाहर आकर उसे असल जिंदगी में आजमाने की कोशिश करेंगें | वहीं किताबों में दिनभर घुसे रहनें से जहाँ आप जिंदगी के सुनहरें पलों के मजे नहीं ले पायगे, वहीं असल जिंदगी की कठिनाईयों से रूबरू होकर जिंदगी को समझनें का मौका खो देंगे | वहीं आप फिजूल बातों, टीवी एवं मोबाइल में लगे रहनें से जहाँ समय ज्यादा बर्बाद करेंगे और उसका उपयोग कम |

यहाँ कहनें का मतलब ये है कि समय का सदुपयोग करनें का यह मतलब नहीं की आप अपने समय को केवल एक ही चीज में लगा दो या फिजूल उड़ा दो | इसका मतलब ये है कि जैसे खाने की प्लेट में जब तरह - तरह के व्यंजन होते है तभी भोजन करनें का आनंद आता है वैसे ही समय को जब हम तरह - तरह की चीजों में उपयोग करतें है तब ही जिंदगी का आनंद आता है और यह तरह - तरह की चीजें आख़िरकार है क्या ? यह आपको अपनें अनुसार निश्चित करना होगा तभी आप समय का सदुपयोग कर पायेंगे |

समय हमारें पास एक उपहार की तरह है | उसको हम चाहें अपने आपकों आगे बढानें और जिंदगी बेहतर करनें में खर्च करें या यहाँ - वहाँ के कामों में, निर्भर हम पर करता है | आपका समय आपको भगवान की तरफ से दिया गया एक उपहार है उसको आप कैसा लौटाना चाहतें है, कुछ अच्छा करकें या बर्बाद करके यह आप पर निर्भर है क्योकि फैसला आपका है और आप जो फैसला लेगे वो आप ही भुगतेंगे न मैं और न कोई और | चाहें आपने पहलें जो भी किया हो लेकिन आज से और अभी से आप समय को अपना मित्र बना सकतें है और उसका अच्छे तरीकें से उपयोग कर सकतें है या उसको ऐसे ही बर्बाद कर सकतें है |

मायनें यह नहीं रखता आपके पास समय कितना है. मायने यह रखता है आप उसे उपयोग कैसे करते है |

समय भलें ही सभी को समान रूप से मिला हो लेकिन एक बार समय निकल गया तो वो समय वापिस कभी नहीं आता | इससे हम सभी अवगत है फिर भी हम समय की कद्र नहीं करतें और जो लोग समय की कद्र नहीं करतें फिर समय उनकी कद्र नहीं करता | सही समय पर किया गया काम एक अलग फल लेकर आता है, वहीं गलत समय पर किया गया सहीं काम भी अर्थहीन होता है और चाहकर भी आप उस काम को अर्थपूर्ण नहीं बना सकतें |

आप अपने जीवन में अपने सपनों को पूरा कर सकेंगे या नहीं, वो इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने समय का उपयोग किस प्रकार करतें है | यदि आप समय का उपयोग सही तरीकें से करेंगे तो इसमें कोई संदेह नहीं है की आप सफलता की राह पर आगे बडेगे और सफलता प्राप्त करेंगे लेकिन अगर आप केवल सपने देखतें है और उनको पूरा करनें पर समय कम खर्च कर सपनें देखनें में समय ज्यादा खर्च कर रहें है तो वो सपनें केवल आपके दिमाग में ही सफल हो सकतें है लेकिन असल जिंदगी में नहीं और यदि आप चाहतें है कि आप भी अमीर बनें तो अपनें समय का सहीं उपयोग करें |

लोगों की आम धारणा है कि हर काम की उम्र होती है और एक बार उम्र निकल गई तो फिर आप वो काम नहीं कर सकतें जो आप करना चाहतें है लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता | यदि व्यक्ति ठान ले तो वो किसी भी उम्र में अपने सपनें को पूरा करनें के लिए शुरुआत कर सकता है और सफलता पा सकता है, बस सफलता पाने के लिए शुरुआत करना जरूरी है | अब वो गलती न करें जो आपने अब तक अपने समय को बर्बाद करके की है, अब से अपने समय का सही उपयोग करनें की ठान लें और समय का सही उपयोग करें |

समय भलें ही रोज सबको समान ही मिलता है लेकिन इसके साथ एक समस्या भी है कि आने वाले समय के बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता | कोई यह नहीं बता सकता अगले पल आपके साथ क्या होने वाला है तो आपको जब आने वाले समय का जरा भी अहसास नहीं है तो कैसे आप इस समय को जाया कर सकतें है ? हो सकता है आने वाला पल आपकी जिंदगी का आखिरी पल हो और जरा सी दुर्घटना आपको इस दुनिया से विदा कर दें या हो सकता है आप किसी बड़ी दुर्घटना के शिकार हो गए और अब आप काम - काज करनें लायक नहीं रहें तो कभी आपने सोचा है यदि ऐसा कुछ आपके साथ हुआ तो आपके बिना आपके अपनों का क्या होगा ? यदि आपके बच्चे है तो उनका क्या होगा ? बिना पैसो के उनकी परवरिश कैसी होगी ? क्या बिना आपके उनको अच्छा भविष्य मिल सकता है ? कुछ कहा नहीं जा सकता |

यदि आप समय की कद्र करतें है तो आपकों भविष्य के लिए योजना रखने की कोई जरूरत नहीं भलें ही कोई भी दिन आपका आखिरी दिन क्यों न हो या कोई भी अच्छा दिन आपके लिए दुर्घटना का दिन क्यों न हो | भविष्य की योजना तभी संभव है जब आप आज को बेहतर बनाएं | यदि आप ऐसा करनें में सफल रहें तो आपका भविष्य अवश्य ही आज से बहुत अच्छा होगा क्योकि आने वाला समय तभी बेहतर हो सकता है जब आप आज के समय का सही उपयोग करें |

जो लोग काम को टालने की आदत रखतें है उन्हें इससे से कुछ सीख लेना चाहिए और जरा सोचना चाहिए यदि आपको पता चलें आने वाला समय आपकी जिंदगी का आखिरी समय है तो आप क्या करेंगे जब आपके पास कुछ ही समय शेष है ?

अपने बच्चो से अच्छी बातें करेंगे या अपने पेंडिग कामों को करेंगे जिससे आपके परिवार को परेशान न होना पड़े या अपने दोस्तों के साथ गप्पे मारेगे या मोबाइल पर गेम खेलेगें या हो सकता है ऑनलाइन फनी वीडियोज देखेंगे या

आराम से सो जायेंगे, हो सकता है मरनें के बाद सोने मिले की नहीं या सोशल साइट्स में आखिरी पिक अपलोड करेंगे, नहीं तो क्या पता मरनें के बाद स्वर्ग में इंटरनेट मिला की नहीं | जरा सोचिए यदि आने वाला समय आपकी जिंदगी का आखिरी समय हो तो आप सबसे पहलें क्या करेंगे ?

मुझे नहीं लगता यदि आपको पता चले कि कुछ ही समय के बाद आप मर जायेगे और आपके पास बस थोडा ही समय है अपने सबसे पसंदीदा कामों को करनें का तो आप ऐसे अपना समय बर्बाद करेंगें या फिजूल के वीडियोज देखनें एवं फोटो लाइक्स करनें में अपना समय खर्च करेंगे | शायद आपके मन में सबसे पहला विचार ये ही आये की आपके बिना आपके परिवार और बच्चो का क्या होगा क्योकि आपने समय की कद्र तो की नहीं और यह भी नहीं कभी सोचा कि कोई भी दिन हो सकता है जो आपका इस दुनिया में आखिरी दिन हो तो अब आप इतने कम समय में क्या करेंगें ? जरा सोचिए, एक पल के लिए ही सही अपने आप को इस दुविधा में रखकर देखिए तब आपको समझ आएगा आपने अभी तक क्या किया और जो किया क्या वो पर्याप्त था, शायद नहीं |

मरना कोई नहीं चाहता लेकिन आने वाला वक्त आपके लिए क्या लेकर आने वाला है यह भी कोई नहीं जानता तो मुझे नहीं लगता आप अपने परिवार के लिए अधूरा काम छोड़कर जाना चाहेगे या मुसीबतों का भंडार छोड़कर जाना चाहेगे या आर्थिक तंगी छोड़कर जाना चाहेगे |

यदि आप अपने परिवार को आर्थिक तंगी में जीते नहीं देखना चाहतें तो अपने समय का उपयोग करें और काम टालने की आदत को छोड़ दे क्योकि काम को टालने की आदत से आपका कोई भला नहीं होने वाला उल्टा आपके ऊपर कामों का पहाड़ लग जायेंगा जिसे आज नहीं तो कल करना ही है तो आज अभी क्यों नहीं ?

मुझे समझ नहीं आता जब काम आपको ही करना है आज नहीं तो कल फिर इन कामों को किसके लिए टालते हो ? क्या कोई और आपका वो काम

करेंगा ? नहीं न, तो टालने की आदत क्यों ? जब आप काम को सही समय पर करतें है तो आपके पास पेंडिग कामों की लिस्ट नहीं होती क्योकि वो सारे काम आपने समय पर पूरे कर लिए है |

जो व्यक्ति कामों को टालते है वो व्यक्ति अपने पर भला नहीं कर रहें होते उल्टा अपने लिए काम बड़ा रहें होते है क्योकि यदि वो काम अभी किया होता तो कल पर उस काम को टालना नहीं पड़ता और आज का समय फिजूल या पेंडिग काम को करनें में खर्च नहीं करना पड़ता लेकिन आज का समय भी गया और कल का समय भी जाएगा उस पेंडिंग काम को करतें हुए | कुछ लोगों को तो तब तक अपने पेंडिग कामों की ध्यान ही नहीं आती जब तक उस काम को सबमिट करनें का आखिरी समय नहीं आ जाता और जब आखिरी समय आ गया तो उस काम को जल्दबाजी में गलत - सलत ही सही लग जाते है पूरा करनें में | यदि उसी काम को समय रहतें हुए किया होता तो आज जल्दबाजी में यह काम नहीं करना पड़ता लेकिन फिर भी इन लोगो की समझ में नहीं आता |

कल पर काम को टालना एक बहुत ही घातक आदत होती है क्योकि कल कभी आता नहीं और यदि आ गया तो फिर जल्दबाजी में किया गया काम कई बार ऐसा होता है जो हमसे अच्छे मौके को भी छीन लेता है इसलिए यदि यह आदत आपमें है तो आप अब तक कई बार इससे समस्या झेल चुके होगे और यदि नहीं तो यदि आपने यह आदत नहीं छोड़ी तो जल्द ही कोई न कोई समस्या आपके दरवाजें पर दस्तक देने के लिए डोर बेल बजाने का इंतजार कर रही होगी |

जब आपके पास समय होता है तो आप इसका उपयोग नहीं करतें और केवल अपने समय को ऐसी चीजों में बर्बाद करतें है जो लगभग महत्वहीन होती है और जब समय निकलने वाला होता है तो आपको कुछ करनें की ध्यान आती है फिर आप थोड़ी कोशिश करतें है लेकिन जब तक समय थोडा और निकल जाता है तो फिर निकलतें समय को देखकर आप अब जी - जान से कोशिश में लग जाते है और जब तक आप सफलता के मुकाम तक पहुचनें वाले ही होते है

तब तक समय काफी आगे निकल चुका होता है और जब समय निकल जाता है तो पछताने के अलावा आपके पास कोई रास्ता नहीं बचता | जो आपने मेहनत की थी अब वो बिना समय के कोई काम की नहीं रहतीं क्योकि *समय पर की गई मेहनत हमें सफलता तक पहुचाती है और समय निकल जाने पर सफलता भी असफलता के रूप में जानी जाती है |*

जब आप मेहनत करतें हो और आपकों यदि सफलता न मिलें तो इससे निराशा का जन्म होता है और निराशा कुछ नया करनें के उत्साह को ही ख़त्म कर देती है | एक निराश व्यक्ति किसी का कोई भला नहीं कर सकता वो केवल लोगों को गलत राय देकर और निराशा भरी बातें कर यह समझाने की कोशिश में रहता है कि मेहनत करनें से कुछ नहीं होता, यदि होता तो मैं भी सफल होता इसलिए इन चक्करों में न पड़ो मस्त नौकरी करों और खुश रहों |

निराशावादी इंसान ने यह तो समझा दिया कि यह काम तुम्हारें बस का नहीं है लेकिन यह नहीं बताया कि, खुद इसलिए असफल रहा क्योकि न ही खुदनें समय की कद्र की और न ही समय रहतें मेहनत कर काम को पूर्ण किया |

जरा सोचिए, आपकी परीक्षा फरवरी की 13 तारीख को है और आप उसकें लिए तैयारी परीक्षा के कुछ दिन पहलें ही शुरू करतें है तो क्या आप उस बच्चे से आगे निकल सकतें है जो उस परीक्षा के लिए पिछलें कई महीनों से तैयारी कर रहा है ? नहीं न, तो जब गलती आपकी है तो इसमें निराशा कैसी ?

कई बार हम किसी परीक्षा में इसलिए पास नहीं हो पाते क्योकि हमसें भी ज्यादा योग्य उम्मीदवार उस परीक्षा में होते है जिनकी तैयारी हमसें बेहतर है और हमारी तैयारी उनसे कम बेहतर तो हमें अपनी तैयारी पूरी करना चाहिए या निराश होकर सब काम छोड़ देने चाहिए ? बताईये ?

निराश होकर यदि सफलता मिलती तो मैं भी निराश होकर घर में बैठ जाता और आप सबसे भी यहीं कहता, आज से सब बंद, आज से हम सब कुछ नहीं करेंगे तो ऐसे में क्या होता ? ज्यादा कुछ नहीं मैं निराशा, नकारात्मक

विचारों, आलस, उदासी, आदि के चंगुल में फसकर रह जाता जो हमेशा इसी मौके में रहती है कि कैसे लोगों को हराया जाए ? इससे सफलता मुझे हकीकत में क्या सपनें में भी नहीं मिलती |

असफलता मिलनें का यह मतलब नहीं है कि, आप रोने बैठ जाओं | यह तो आपके लिए एक मौका है जिसमें आप अपनी असफलता से यह सीख सकें कि ऐसी आपने कौन सी गलती की है जिससे आप सफल नहीं सकें और उस गलती को ठीक कैसे किया जाए जिससे फिर से शुरुआत की जा सकें |

बिना शुरुआत किए सफलता क्या असफलता भी नहीं मिलती क्योकि असफलता भी उन्ही को मिलती है जो कुछ पानें के लिए शुरुआत करतें है | बिना कुछ किए यदि आप सफलता के सपनें देख रहें है तो सफलता को क्या असफलता को भी भूल जाइये | कुछ पाने के लिए की गई शुरुआत और काम को पूरा करनें की लग्न ही आपकी सफलता एवं असफलता का निर्धारण करतें है |

आप सबनें साइकिल को चलाया होगा और शुरुआत में कई बार साइकिल चलाते समय गिरे भी होगे और चोट भी लगी होगी फिर भी बार - बार गिरने के बाद भी साइकिल चलाने की कोशिश नहीं छोड़ी होगी और यहीं आपकी कोशिश एक दिन आपकों साइकिल का माहिर बना देती है | यदि आपनें एक - दो बार साइकिल से गिरने के बाद यदि साइकिल चलाना छोड़ दिया होता तो शायद ही आप फिर कभी साइकिल चलाना सीख पाते | ऐसा ही कुछ जिंदगी के साथ होता है जहाँ आप बार - बार गिरकर फिर खड़े होने की कोशिश करतें है और जो व्यक्ति बिना हार माने लगा रहता है वो ही सफल हो पाता है और जो हार मानके बैठ जाता है वो कभी भी सफलता का स्वाद नहीं चख पाता |

आप सभी ने मछली पकड़ने का जाला तो देखा होगा | कभी उस जालें पर यदि गौर किया हो तो वो जाला बड़ी ही मजबूती से अपने सभी धागों और

जालीदार संरचना से जुड़ा होता है जिससे मछलिया उस जालें से बाहर न निकल पाए | ऐसा ही कुछ जाला लग्न, मेहनत, समय, सोच, चरित्र, नजरियें, ज्ञान, आदि से मिलकर बना होता है जो हमें सफलता रुपी मछली को पकड़ने में मदद करता है | जैसे, छोटे कमजोर जालें से छोटी - छोटी मछलियाँ तो पकड़ी जा सकती है लेकिन बड़ी मछली पकडनें के लिए बड़े मजबूत जालें की जरुरत होती है वैसे ही आप कमजोर या छोटे जालें से छोटी - छोटी सफलताएँ तो पा सकतें है लेकिन बड़ी सफलता पाने के लिए जाला मजबूत होना आवश्यक है जो केवल तभी मजबूत हो सकता है जब आपके जाले को बनाने और आपस में जोड़ने वाली चीजें मजबूत हो और वो तभी संभव है जब आप एक - एक करकें उन चीजों को मजबूत करें | तभी आप सफलता रुपी मछली को पकडकर सफलता पा सकतें है |

यदि मछली पकड़ने वाले जालें का एक धागा भी निकल जाए तो मछलियां उस छेद से बाहर निकल जाती है, वैसे ही यदि आपके चरित्र रुपी जालें की एक भी शाखा- नजरियाँ, विश्वास, धैर्य, सोच, विचार, समय, ज्ञान, इच्छा, प्यार, आदि कमजोर रह गई तो आप केवल एक हद तक सफल हो सकतें है लेकिन बड़ी सफलता को संभालने के लिए जाला भी बड़ा और मजबूत होना चाहिए |

सफलता पाना उतनी बड़ी बात नहीं है जितनी बड़ी बात उसको संभाले रखना है।

लोग सफलता मिलनें का इंतजार करतें है और सफलता योग्य व्यक्ति के मिलनें का इंतजार करती है क्योकि उसे पता है यदि व्यक्ति उसकें लायक है तो ही वो उसे संभाल पायेगा अन्यथा अयोग्य को मिली सफलता भी असफलता के समान ही होती है |

ज्ञान (Knowledge)

लोगों को डिग्रियां हासिल करनें के बाद यह भ्रम हो जाता है कि उन्होंने अब स्नातक कर ली है या पीएचडी कर ली है तो अब वो उस विषय के बारे में सब जानने लगें और अब वो कुछ भी कर सकतें है लेकिन गलती उनकी भी नहीं है क्योकि हमें बचपन से ही शिक्षा पाने का महत्व समझाया जाता है और कैसे ज्यादा से ज्यादा परीक्षा में नंबर लाए जाए बस शिक्षक का और माता - पिता का इसी बात पर ध्यान रहता है | माता - पिता और शिक्षकों को केवल यही लगता है यदि बच्चा अच्छे नंबर नहीं लाएगा तो उसकों अच्छी नौकरी कैसी मिलेंगी और यदि अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी तो अच्छा जीवन साथी नहीं मिलेगा लेकिन किसी का ध्यान इस तरफ नहीं जाता कि नौकरी और रटने के अलावा भी कई विकल्प होते है जो हमें आगे ले जाने और ज्ञान हासिल करनें में महत्वपूर्ण भूमिका अपनाते है |

आज के समय में लोग केवल शिक्षित हो रहें है लेकिन ज्ञान बहुत ही कम लोग हासिल कर रहें है और जो लोग ज्ञान पानें के लिए मेहनत कर रहें है, शायद वो लोग पहलें से ही जानतें है कि स्कूलों एवं कालेजों के नंबर्स एवं रैंक केवल स्कूलों और कालेजों तक ही सीमित रहतें है असल जिंदगी में आपकी काबिलियत ही आपकों आगे बढानें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | अच्छे नंबरों की दम पर अच्छी नौकरी तो पाई जा सकती है लेकिन बिना नॉलेज के ना हीं आविष्कार किए जा सकतें है और न ही नौकरी देने वाला बना जा सकता है | आपने जितनें सबसे सफल लोगों के बारे में सुना होगा उनमें से ज्यादातर लोगों ने शून्य से उठकर अपनी काबिलियत की दम पर ही सफलता पाई है, न की अपनी कॉलेज डिग्री और न ही कॉलेज रैंक की दम पर |

जितने सफल लोग हुए है उन्होंने अपने ज्ञान को हासिल अपने दिमाग को खुला रख के किया है | उनकी असल शिक्षक प्रकृति, कुछ अलग करनें की लग्न और सफलता के मार्ग में आने वाली कठिनाइयाँ रही है जिन्होंने जहाँ उन्हें जिंदगी के कडवे सबकों से रुबरु कराया, वहीं आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया और रहीं बात उन टॉपर्स की जिन्होंने अच्छी रैंक हासिल कर अच्छे मार्क्स हासिल किये, उनमें से अधिकतर लोग आज उन लोगों के लिए काम कर रहें है जो उनसे कम शिक्षित है लेकिन फिर भी वो किसी से काम न मांगकर दूसरे लोगों को काम दे रहें है |

मैं आपसे यहाँ यह नहीं कह रहा कि आप स्कूल छोड़ दे या कॉलेज छोड़ दे | मेरे कहनें का मतलब है कि, आप केवल नंबरों के लिए न पढ़े | आप कुछ सीखनें के लिए पढ़े जिससे आप की सोच और दुनिया को देखनें का आपका नजरियाँ छोटे से बड़ा हो सकें | वहीं आपका ज्ञान आपकों कुछ नया करनें के लिए प्रेरित कर सकें, न कि वहीं काम करनें को प्रेरित करें जो अरबों लोग रोज कर रहें है | यदि आप आम लोगों में ही बना रहना चाहतें है तो जैसा चल रहा है वैसा चलनें दे लेकिन यदि आप चंद सफल लोगों की लाइन को और बड़ा कर उसमें अपनी जगह बनाना चाहतें है तो सीखनें के लिए दिमाग खुला रखें क्योकि अकेले क्लास रूम में बैठकर ही ज्ञान हासिल नहीं किया जा सकता | यदि आप सीखना चाहतें है तो आपकों चारो ओर सिखाने वाले मिल जायेंगे बस दिमाग के दरवाजें खुले रखनें की देरी है |

शिक्षित होने में और ज्ञान हासिल करनें में वहीं अंतर होता है जो पढ़े - लिखें गधे और एक काबिल इंसान में होता है क्योकि शिक्षित हर कोई हो सकता है लेकिन उस चीज में काबिलियत हासिल करनें में लोगों को सालों लग जाते है फिर भी कुछ लोग ही काबिल बन पाते है | ऐसा ही शिक्षा पाने और ज्ञान हासिल करनें में होता है क्योकि शिक्षा तो हमें हासिल हो जाती है आसानी से लेकिन किसी चीज के बारे में ज्ञान हासिल करना सबके बस की बात नहीं होती और जो ज्ञान के महत्व को समझता है वो कभी भी परीक्षा के नंबरों के

चक्कर में न पड़ के केवल ज्ञान पाने के लिए ही मेहनत करता है और यहीं ज्ञान उसकी सफलता की वो कुंजी होती है जिसे न कोई चोरी कर सकता है और न ही कोई छीन सकता है |

पैसों को चोरी किया जा सकता है, आप सफलता की ऊंचाईयों से असफलता के गर्त में गिर सकतें हो लेकिन आपके ज्ञान को कोई नहीं छीन सकता और आपके सीखनें की काबिलियत आपकों दोबारा फर्श से उठाकर आसमान की ऊंचाईयों में पहुंचा देगी |

हममें से ज्यादातर लोग पढाई इसलिए करते है क्योकि यह उनकें जीवन यापन के लिए जरूरी संसाधन एकत्रित करनें का एक साधन बन सकें या आसान शब्दों में कहा जाए कि लोग सिर्फ इसलिए पढ़ते है जिससे उन्हें अच्छी नौकरी मिल सकें और उनकी आने वाली जिंदगी सुकून से कट सकें लेकिन वो यह नहीं जानते कि यही उनकी सोच उनकें दुखो का कारण बनेंगी |

यदि आप पढाई सिर्फ इसलिए कर रहें हो की आपकों अच्छी नौकरी मिल जाए तो यह अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ करनें के अलावा कुछ नहीं है क्योकि आप अपना समय सिर्फ ऐसी चीज में बर्बाद कर रहें हो जो केवल आपकी सोच को एक दायरें में लाने की कोशिश कर रही है और यदि वो दायरा ख़त्म तो आप भी ख़त्म और ऐसा इसलिए होगा क्योकि आपने अपने जीवन के इतनें साल केवल अपने आपको एक दायरे में सीमित करनें के लिए ही खर्च किये है |

आपनें अपने चारों ओर एक बात पर यदि गौर की हो तो आप देखेंगे जो बहुत पढ़े लिखें लोग है जिन्हें हमारें समाज में एक अच्छा दर्जा प्राप्त होता है वो लोग ज्यादातर वो ही काम कर रहें होते है जिसकी उन्होंने डिग्री ली होती है | जैसे, डॉक्टरी की है तो वो डॉक्टर ही होगा या इंजीनियरिंग वाला छात्र इंजीनियर ही होगा या वकालत की पढाई करनें वाला इंसान वकील ही होगा, आदि | यदि इन लोगों से इनका यह काम छीन लिया जाए तो क्या होगा ?

मुझे लगता है, यह बात सुनकर की उनका काम अब जाने वाला है और वो यह काम नहीं कर सकतें तो हो सकता है उन्हें ऐसा लगेगा जैसे उनकें पैरो के नीचें से किसी ने जमीन ही खीच ली हो और वो अपना सब कुछ खोने के डर के कारण घबरा जायेगे | और वो ऐसा क्यों करेंगे ?

आपके मन में शायद यही सवाल आ रहा होगा और यह सवाल आना लाजमी भी है | वो लोग इसलिए डरेगें क्योकि उनकी सोच उनकी शिक्षा के कारण उनकें व्यवसाय या नौकरी के दायरे तक ही सिमट के रह गई है और जब उनकी नौकरी या व्यवसाय ही यदि उनसे छीन लिया जाएगा तो अब वो क्या करें उन्हें यह समझ नहीं आएगा और यहीं सब कुछ खोने का डर ही उनकी अशिक्षा को दर्शाता है | भलें ही वो बहुत ही शिक्षित है लेकिन उनकी यह शिक्षा उनके प्रोफेशन तक ही सीमित है और यदि उन्हें फिर से नई शुरुआत करना पड़े तो वो नई शुरुआत नहीं कर सकतें क्योकि उन्होंने शिक्षा हासिल की है, न की ज्ञान |

यही बात सफल व्यक्तियों को असफल लोगों से अलग बनाती है | आपने कई सफल व्यक्तियों के बारे में पढ़ा होगा लेकिन शायद ही कोई ऐसा सफल व्यक्ति होगा जिसे एक बार में या एक ही काम से सफलता मिल गई हो | चाहें किसी भी सफल व्यक्ति को आप उठाकर देख लों आपको कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसनें बिना असफलताओं का स्वाद चखें सफलता पाई हो लेकिन फिर भी उन्होंने बार - बार शुरुआत की और आख़िरकार सफलता पाई वो इसलिए क्योकि वो किसी एक दायरे तक सीमित ही नहीं रहें | उन्हें जहाँ संभावनाएं दिखी वहीं उन्होंने शुरुआत की और चाहें असफलता ही हाथ क्यों न लगी हो फिर भी उन्होंने नये तरीकें से ही सही बार - बार शुरुआत की और तब तक हार नहीं मानी जब तक सफलता हाथ नहीं लगी |

सफल व्यक्तियों ने काबिलियत और ज्ञान को महत्व दिया न की अपनें आपको एक सीमित दायरें में लाने का इसलिए वो बार - बार जमीन पर गिरने के बाद भी बिना डरें शुरुआत करतें रहें और आगे बढ़ते रहें |

मेरे अनुसार शिक्षा का सहीं अर्थ है, एक छोटे से दायरें को एक छोटी सी सोच को ज्ञान की सहायता से अनंत में बदलना | जहाँ सिर्फ आपका मानसिक विकास ही केवल न हो, बल्कि आपका चौतरफा विकास कर एक अच्छा इंसान बनाना लेकिन आज के युग में शिक्षा सिर्फ अच्छी नौकरी पाने के लिए महत्वपूर्ण हो गई है और यदि आपकें परीक्षा में नंबर अच्छे है तो आप होशियार या अच्छे विद्यार्थी है और नंबर कम है तो आप पर नालायक का ठप्पा लगा दिया जाता है | गौर करनें की बात तो यह है कि नालायक, किसी काम का नहीं, आदि वो लोग कह रहें है जो अपने सपनें पूरे तो कर नहीं पाए, अब आपकों यह बता रहें है कि आप क्या कर सकते है और क्या नहीं |

आप क्या कर सकतें है और कहाँ तक जा सकतें है, यह सिर्फ आप पर निर्भर करता है, न की किसी के कहनें से या मानने से और आप क्या सीख सकतें है और क्या नहीं वो भी इस बात पर निर्भर करता है कि किसी चीज को सीखनें के लिए आप कितनें जिज्ञासु है |

किसी चीज को जानने की जिज्ञासा ही हमें अपने ज्ञान को बढाने के लिए और कुछ नया जानने एवं सीखनें के लिए प्रेरित करती है | यदि आप अपने आप की सुने तो पायगे कि आपका दिल हमेशा कुछ नया सीखनें के लिए आपको प्रेरित करता है और आपका दिमाग इसी कोशिश में रहता है कि कैसे वो कुछ नया करें लेकिन हम अपनी इस जिज्ञासा को अपने आलस या समय न होनें का बहाना बनाकर दबा देते है |

यदि आपको नौकरी करनी है तो उतना ही सीखनें की कोशिश करिए जितना आपकों सिखाया जा सकता है और यदि आपकों नौकरी देने वाला बनना है तो खुद से सीखना सीखें क्योकि आपका शिक्षक आपकों उतना ही

सिखा सकता है, जितना उसको खुद आता है और उसनें केवल नौकरी मांगना ही सीखा है तो वो भी आपकों वो ही सिखाएगा जो उसनें खुद सीखा है इसलिए उन लोगों से सीखों जिन्होंने लाख मुसीबतों के बाद भी हार न मानके अपने सपनें पूरे कियें | चाहें, इसके लिए उनके बारे में पुस्तकें पढनी पढ़े या उनके जीवन पर आधारित मूवीज देखनी पड़े तो देखों क्योकि जहां उनके जीवन की सच्ची कहानी आपकों मोटिवेट करेंगी आगे बढ़ने के लिए, वहीं आप उनकी गलतियों के बारे में जान सकेंगे जो उन्होंने अपने जीवन में की, जिस कारण वो बार - बार असफल हुए | जिससे आप सीख ले सकें कि कैसे उन गलतियों से बचा जाए और कैसे उन सफल व्यक्तियों की लाइन में आया जाए |

यदि आप में कुछ नया सीखनें की जिज्ञासा है तो आपकों सिखानें वालों की कोई कमी नहीं रहेगी क्योंकि बस सीखनें का मन चाहिए, सिखानें वालें तो हमारे चारों ओर मिल जाएगे |

जैसे, सफल लोगों की, सफलता की कहानी हमें सफल होनें के लिए प्रेरित करती है, वैसे ही हमारा ज्ञान हमारी सफलता को सुनिश्चित करनें में हमारी सहायता करता है और हमें हर पल सफलता की तरफ ले जाने का कार्य करता है |

कुछ लोग, कुछ बार सफलता पाकर ज्ञान की उपयोगिता को भूल जातें है और अपने को सर्वज्ञाता मानने लगते है | उन्हें लगता है, जब मैनें इतनी पढाई की है तभी जाकर यहाँ तक पंहुचा हूँ, तो अब मुझे और कुछ नया सीखनें की क्या जरूरत ? मुझे तो वैसे ही सब पता है | ऐसे ही लोग जो अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए सीखना बंद कर देते है, वो ही वक्त के साथ अपने आप को अपडेट नहीं कर पाते और वक्त के साथ कदम से कदम मिलाकर न चल पाने के कारण ही वो पीछे छूट जातें है | यदि उन्होंने बदलते हुए वक्त पर गौर किया होता तो समझतें आज का दौर ऐसा दौर है जहाँ हर रोज कुछ नया आता है | यदि आप इन बदलावों पर ध्यान नहीं देगें तो यह आपकी बहुत बड़ी गलती होगी | अगर आप यह सोचते है कि किताबों को पढकर आप वक्त के साथ कदम से कदम

मिला सकतें है तो इन बदलावों के बारे में आप अपनी किताबों में भी नहीं पढ़ सकतें क्योकि दुनिया में जहाँ बदलाव बड़ी तेजी से हो रहें है, वहीं किताबों में बदलाव बहुत धीमें |

आज का दौर या आनें वाला दौर बदलावों का दौर है | यहाँ वो ही सफल हो सकता है जो अपनें ज्ञान को बढ़ाने के लिए रोज कुछ नया सीखें और पुरानें ज्ञान को आज के अनुरूप ढालें | अन्यथा चाहें पुरानीं चीजें हो या विचार, वक्त के साथ - साथ उनकी उपयोगिता भी कम होती जाती है |

आपने यह सुन रखा ही होगा- *सीखना ख़त्म तो जीतना ख़त्म |* यह कथन भलें ही छोटा है लेकिन एक सत्य की ओर इंगित कर यह बतानें का प्रयास करता है कि यदि आपकों हमेशा जीतना है तो उसकें लिए हमेशा सीखनें के लिए तैयार रहना पड़ेगा | यदि आप सीखना बंद कर देंगे तो आपका जीतना भी बंद हो जाएगा | आपने अपने ज्ञान की दम पर एक सफलता तो हासिल कर ली लेकिन नई सफलता पानें के लिए नये सिरे से शुरुआत तभी की जा सकतीं है, जब आप अपनें ज्ञान को लगातार बढ़ाते है | तभी आप यह समझ सकतें है कि आने वाले भविष्य में क्या होने की संभावनाएं है और उन संभावनाओं को कैसे अपनें लिए उपयोग किया जाए |

यदि आपका प्लान यह है कि, अभी की चीजों को देखकर या उनकें इर्द - गिर्द ही कुछ क्रिएट करना, तो यह प्लान कुछ समय के लिए तो आपकों शायद सफलता दिला दे लेकिन यदि आपने अपनें प्लान को आने वाले भविष्य के अनुरुप नहीं ढाला तो ऐसा प्लान जल्दी ही अपनी प्रासंगिकता खो देगा |

चाहें, फेसबुक हो या गूगल या माइक्रोसॉफ्ट या अमेजन जब इनकों लांच किया गया तो शायद ही उस समय इन्होंने कोई प्रॉफिट कमाया हो एवं जल्द ही सफलता पाई हो लेकिन इनके आविष्कारकों ने जहाँ उस समय की जरुरतों पर ध्यान दिया, वहीं भविष्य की संभावनाओं को देखतें हुए ऐसी चीज का जन्म

किया जो भलें ही उस समय इतनी महत्वपूर्ण न रही हो लेकिन अब उनकें बिना सोच पाना थोडा मुश्किल है |

कोई बिज़नेस या इनोवेशन वर्तमान की जरूरतों को ध्यान में रखकर तो किया जाता ही है लेकिन उससे ज्यादा ध्यान भविष्य की जरूरतों पर दिया जाता है क्योकि आपका इनोवेशन या बिज़नेस यदि वक्त के अनुरुप नहीं रहा तो भलें ही वो अभी कितना भी अच्छा हो लेकिन निकट भविष्य में बहुत ही जल्द अपनी प्रासंगिकता खो देंगा और आपकों जल्द ही कुछ नया करनें के लिए तैयार रहना होगा | यदि आप अपने ज्ञान को लगातर सीखकर नहीं बढ़ाएगे तो भलें ही आप सरकारी नौकरी में टिके रहें लेकिन चाहें प्राइवेट नौकरी हो या आपका बिज़नेस, यहाँ से आप बहुत ही जल्द बाहर हो जाएगे |

बिल गेट्स को अधिकतर लोग अपना आदर्श मानते है लेकिन यह कम ही लोगों को पता होगा कि बिल गेट्स इतना अमीर होने के बाद भी प्रतिदिन किताब पढ़ते है | भलें ही वो टॉप सफल बिजनेसमैनों में से एक है लेकिन वो आज भी इतनें व्यस्त रहनें के बाद भी रोज किताब पढना नहीं भूलतें | जब इतना अमीर आदमी भी अपनें लिए किताब पढने का समय निकाल सकता है तो हम लोग निकाल ही सकते है फिर भी हममें से अधिकतर लोग अपनें ज्ञान को बढ़ाने के लिए कुछ नहीं करना चाहतें और यहीं अंतर है सफल और असफल लोगों की सोच में क्योकि बिल गेट्स कुछ नया सीखनें की उपयोगिता को समझते है लेकिन हम लोग एक - दो डिग्री मिल जानें के बाद अपनें आपको बहुत ही ज्ञानी समझनें लगते है और इसी गलती का परिणाम हम असफलताओं के पहाड़ के रूप में भुगतते है |

कुछ ऐसा जीवन जियो जैसे की तुम कल मरने वाले हो. कुछ ऐसे सीखो जैसे कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो | - महात्मा गाँधी

सीखनें की कला इंसान को मिलें एक वरदान से कम नहीं है क्योकि आप जहाँ अपने को और बेहतर बना सकतें है वहीं अपनी गलतियों से सीख लेते हुए अपनी असफलता को सफलता में बदल सकतें है लेकिन सीखना इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप सीख क्या रहें है और उस ज्ञान का उपयोग कैसे कर रहें है | यदि आप अच्छा सीख रहें है और उसका उपयोग भी नेक कामों में कर रहें है तो वो ज्ञान आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा, वहीं आप गलत चीजों को सीखकर उस ज्ञान का उपयोग भी गलत कामों में कर रहें है तो वो ज्ञान आपके पतन का कारण सिद्ध होगा |

जैसे हर चीज के दो पहलू होते है वैसे ही ज्ञान की उपयोगिता उस के उपयोग पर निर्भर करती है क्योकि आपके द्वारा अपने ज्ञान का किया जाने वाला उपयोग ही यह सुनिश्चित करेगा कि आपका उदय होगा या पतन |

अपने ज्ञान पर जरूरत से अधिक यकीन करना मूर्खता हैं | यह याद दिलाना ठीक होगा कि सबसे मजबूत कमजोर हो सकता है और सबसे बुद्धिमान गलती कर सकता हैं | - महात्मा गाँधी

अध्याय - 9

बचपन की एक चिढ: अनुशासन

अनुशासन एक ऐसा शब्द है जिससे मुझे बचपन से ही चिढ रहीं है और मैंने कभी सोचा भी नहीं था की मैं कभी इसके बारें में चर्चा करूँगा लेकिन आज मुझे लगता है अनुशासन भी हमारें जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसकें बिना शायद हम अपने काम ठीक समय पर न कर पातें यदि हम उस काम को अनुशासित होकर न करतें |

जिंदगी में अनुशासन होना बहुत जरूरी है यदि आप कुछ करना चाहतें है तो क्योकि बिना अनुशासन के सफलता पाना कुछ - कुछ वैसा ही होता है, जैसा कि फूटे मटके को पानी से पूरा भरना |

अनुशासन आपके लिए कुछ - कुछ वैसा ही है जैसे, एक पतंग के लिए उसकी डोर | यदि पतंग में अनुशासन रूपी डोर न हो तो पतंग कभी भी ऊंची उडान नहीं भर सकती, वहीं पतंग की डोर बहुत ज्यादा खीचकर कर रखीं गई हो तो भी पतंग एक हद तक ही ऊपर जा सकती है उसके बाद या तो वो टूट जाएगी या तो वो नीचे गिर जाएगी, वहीं यदि पतंग को ज्यादा ढील दे दी जाए तो पतंग थोड़े ऊपर तो जाएगी लेकिन ऊपर जाकर गोल - गोल घूमते हुए जमीन पर आ गिरेगी |

ऐसा ही कुछ हमारें साथ होता है | यदि हमें ज्यादा अनुशासित रहनें के लिए जोर दिया जाए तो हम उन बच्चो की तरह गलतिया करकें कुछ नहीं सीख पाएगे जो दूसरें बच्चे खेलतें - खेलतें सीखते है क्योकि हमारे पास इतना वक्त ही नहीं रहेगा की हम कुछ अलग से कर सकें | हम वो ही करेंगे, जो हम करतें आ रहें है क्योकि हमारें अनुशासन के कारण हमारी दिनचर्या एक ऐसी दिनचर्या होगी जिसमें हम वहीं करेंगे जो हमें पहलें से बताया गया है | यदि हम अनुशासित नहीं रहेंगे तो हम एक ऐसे इंसान रहेंगे जो बहुत कुछ करनें की योग्यता रखता है लेकिन अपने आलस और यहाँ - वहां के कामों के चक्कर में उन चीजों पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता जो उसे आगे ले जाने में सहायक सिद्ध होते है |

आप सबनें नदी को देखा होगा और उसकें दोनों किनारों को भी | जरा सोचिए, यदि वो किनारें नहीं होते तो नदी कैसी होती ? मेरे ख्याल से बिना किनारों के नदी का पानी ऐसे एक धार में नहीं बह रहा होता, वो तो चारो - ओर फैला होता | जैसे- हम थोड़े से पानी को यदि जमीन पर डाल दे तो वो पानी जहाँ उसको जगह मिलती है वहां से बहनें लगता है वैसे ही नदी के साथ होता और वो नदी जो अभी कई किलोमीटर का सफर तय करती है, बिना किनारों के थोड़ी ही दूरी तय करनें के बाद अपना पानी खो देती और वहीं कही सूख जाती | जैसे- बिना किनारों के इतनी बड़ी नदी भी अपनी ताकत खो सकती है, वैसे ही बिना अनुशासन रूपी किनारों के हम अपनी योग्यता को यहा - वहा जाया कर देंते है जिसका फल हमें असफलता के रुप में मिलता है | भलें ही वो किनारें नदी को बांधने का काम कर रहें थे लेकिन वहीं किनारे उसके पानी को यहा - वहा बहनें से रोककर एक साथ बहनें को मजबूर भी कर रहे थे, इसी कारण से नदी बिना सूखें कई सौ किलोमीटरों का सफर तय कर पा रहीं थी | अनुशासन भी हमारें लिए वैसा ही काम करता है, जैसे नदी के किनारें | जो हमें अपनी सारी शक्तियों को एक साथ एकत्रित कर अपने लक्ष्य पर फोकस करनें के लिए प्रेरित करता है |

अनुशासन विहीन व्यक्ति कटी पतंग की तरह होता है जो की ना ज्यादा ऊंचाई पर जा सकती है और न ही एक लक्ष्य पा सकतीं है एवं इधर - उधर भटकते हुए पेड़ो - झाड़ियों में उलझकर फट जाती है |

अनुशासन मुझे कभी भी अच्छा नहीं लगा फिर भी अनुशासन ही मुझे अपने सारें कामों को वक्त पर करनें और अपने समय को फिजूल खर्च ना कर उस समय का सदुपयोग करनें में मदद करता है | यदि मैं अपने कामों में अनुशासन न रखूँ तो मैं यकीन से यह कह सकता हूँ कि, कभी भी मैं अपने सभी कामों को समय पर नहीं कर पाता या कहूं पूरा ही नहीं कर पाता |

मैं जीवन में अनुशासन रखनें के पक्ष में हूँ लेकिन अनुशासन इतना भी नहीं होना चाहिए जो आपके जीवन जीनें के नजरियें को ही बदलकर रख दें | जीवन छोटी - छोटी यादों का एक मेल है, जिसमें जहाँ सफलता का स्थान है वहीं असफलता भी उतनी ही महत्व रखतीं है जितनी की सफलता एवं जीवन में गलतियाँ भीं उतनी ही जरूरी होती है जितना की कुछ सीखना |

यदि आप अनुशासन का बहुत ही कड़कता से पालन करतें है तो आप अपने लक्ष्य बड़ी आसानी से हासिल कर लेंगे लेकिन अपने जीवन के छोटे - छोटे पल या छोटी - छोटी खुशियाँ खो देंगे इसलिए जीवन में अनुशासन जरूरी है लेकिन जैसे जीवन बहुत सी चीजों के आपसी सामंजस्य से बना है, वैसे ही अनुशासन का सामंजस्य आपके जीवन के साथ होना चाहिए |

व्यक्ति खुद ही अपना सबसे बड़ा रक्षक हो सकता है. और दूसरा कौन उसकी रक्षा कर सकता है ? अगर आपका स्वयं पर पूरा नियंत्रण है. तो आपको वह क्षमता हासिल होगी जिसे बहुत ही कम लोग हासिल कर पाते हैं | - गौतम बुद्ध

स्वतंत्रता ढूंढिए और अपनी इच्छाओं के कैदी बन जाईये लेकिन अनुशासन ढूंढिए और अपनी स्वतंत्रता पाईये | - फ्रैंक हर्बर्ट

अनुशासन का अर्थ ही होता है, खुद पर शासन | यदि आप अपनें आप पर नियंत्रण रखना सीख गए तो मुझे नहीं लगता आपके कोई काम कभी भी अधूरें रहेंगे और कोई काम आप कल पर टालेंगे | अनुशासन आपके जीवन के तमाम लक्ष्यों को हासिल करना बहुत ही आसान बना देता है लेकिन अपनें जीवन में अनुशासन स्थापित करना थोडा मेहनत का और धैर्य का काम है | यदि आपनें ऐसा कर लिया तो इसका फर्क आपकों किसी ओर से जानने की जरूरत नहीं है क्योकि वो फर्क सबसे पहलें आप ही महसूस कर लेंगे |

हमारें जीवन में हमें हमेशा हर चीज के लिए दो रास्तें मिलतें है, एक रास्ता बहुत ही खूबसूरत एवं सरल होता है जिसे अधिकतर लोग बिना सोचे ही चुन लेते है | वहीं दूसरा रास्ता भयंकर कठिन और डरावना प्रति होता है, जिसे बहुत ही कम लोग चुनने की हिम्मत करतें है और यदि चुन भी लिया तो भी बहुत ही कम लोग ऐसे होते है जो उस रास्तें को पार कर पातें है | ऐसा ही होता है, अनुशासन और आजादी के बीच | हममें से ज्यादातर लोग दो पल की आजादी को चुनकर जिंदगीभर आभावों और इच्छाओं के गुलाम बन जातें है, वहीं बहुत ही कम लोग अनुशासन को अपनाकर अपने कदम सफलता की ओर बढ़ाते है | हमें बर्बाद होना है या आबाद इसका चुनाव हमारें ही हाथ में होता है | आप क्या चुनते है यह सिर्फ आप पर निर्भर करता है- दो पल की ख़ुशी फिर तंगी भरा जीवन या कठिनाईयों का मायाजाल फिर सपनों भरा संसार |

मैं ज्यादा अनुशासित व्यक्ति नहीं हूँ फिर भी मैं अपनें काम के प्रति और सीखनें के प्रति अनुशासित रहने का महत्व भलीभांति देख चुका हूँ | यदि मैं जरा भी लापरवाही करता हूँ तो उसका खामियाजा मुझे घंटो लगातार मेहनत करकें

चुकाना पड़ता है और यदि वहीं लापरवाही मैंने ज्ञान हासिल करनें के दौरान की तो उसका खामियाजा तब मुझे भुगतना पड़ता है, जब मैं अपने काम को करनें के दौरान कठिनाई महसूस करता और सब कुछ छोड़कर मुझे दोबारा से बार - बार शुरुआत करनी पड़ती है | जरा से आलस के चक्कर में जहाँ मुझे नुकसान उठाना पड़ता है, वहीं ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है | यदि मैं अनुशासित रहता तो जहाँ बहुत कुछ सीखता, वहीं भलें ही असफलता क्यों न मिलें लेकिन दोबारा गिरकर उठनें में मुझे परेशानी नहीं होती और यही बार - बार गिरकर उठनें की आदत मुझे आगे बढने और सफलता प्राप्त करनें के लिए प्रेरित करती |

जीवन में अनुशासन जहाँ हमें अपनें लक्ष्य को पाने के लिए प्रेरित करता है, वहीं हमें लगातार आगे बढने के लिए ताकत देता है जिससे हम बिना थकें अपने सपनें को हकीकत में बदल सकें |

हमारें द्वारा देखे गए सपनें को पूरा करनें के लिए जिस सेतु की जरूरत होती है, उसे हम अनुशासन कह सकतें है क्योकि भलें ही हम कितनें भी योग्य क्यों न हो लेकिन बिना अनुशासन के योग्यता भी कुछ वैसी ही है, जैसा बहता पानी | जैसे- बहतें पानी को किसी भी दिशा में मोड़ा जा सकता है, वैसे ही ज्यादातर योग्य लोग अपनी योग्यता का सही इस्तेमाल न कर उसे जाया कर देतें है | हमारें लिए अनुशासन ही वो जरिया है जो हमें अपने लक्ष्य तक बिना भटकें पहुचनें में हमारी सहायता करता है, नहीं तो मंजिल तक पहुचनें के लिए बहुत से मुसाफ़िर चलतें है लेकिन मंजिल तक वो ही पहुच पाते है, जो लगातार बिना डरे, बिना थकें आगे बड़ते रहतें है और उनकी इस ताकत एवं उम्मीद को सजोने का काम करता है, उनका खुद पर विश्वास एवं अनुशासन |

हम सभी को दो चीजें बर्दाश्त करनी पड़ती है- अनुशासन का कष्ट या पछतावे और मायूसी की पीड़ा | - जिम रॉन

अनुशासन का कष्ट झेलना फिर भी आसान है लेकिन किसी चीज को न कर पानें का पछतावा और यदि आप उस काम को करनें की योग्यता रखतें हो तो मुझे नहीं लगता इस दुनिया में इससे बुरी चीज कोई होती है | जब तक आप जीतें है, तब तक यह पछतावा हमारा पीछा नहीं छोड़ता और ना हीं हमें जीनें देता है और न ही कभी भूलने देता है |

यदि आप अपनें लक्ष्य तक न भी पहुच पाओं तो भी कोई गम नहीं होता लेकिन यदि आप शुरुआत कर सकतें थे और सफलता पा सकतें थे फिर भी आपनें इसके लिए कोशिश नहीं की तो इसका पछतावा आपकों जिंदगीभर रहेंगा और चाहकर भी आप इसे भूल नहीं सकतें इसलिए पछतावें से तो अपने सपनें को पूरा करनें के लिए अनुशासन का कष्ट कहीं बेहतर है | जो भलें ही कुछ पल के लिए आपकों कष्ट दें लेकिन इस कष्ट के बाद अपनें सपनें पूरें होनें की जो ख़ुशी होती है, उसके लिए तो ऐसे तमाम कष्ट निछावर कर दो तो कोई बात नहीं |

उठो और जी - जान लगा दो अपनें सपनें को पूरा करनें के लिए और फिर देखों जब सपनें सच होते है तो पूरी कायनाथ आपके लिए खुश होती है |

बस सपनें पूरें करनें का हौसला होना चाहिए, सपनें तो अपनें आप पूरे होते है | मुकद्दर के चक्कर में तो सिर्फ वो रहतें है, जिनमें अपनें सपनें साकार करनें के हौसलें नहीं होते | यदि तुझमें हे हौसला तो उठ खड़ा हो अपने सपनें साकार करनें के लिए, मुकद्दर भी उठ खड़ा होगा तेरे सपनें साकार करनें के लिए |

10

बिना मंजिल का सफर

लक्ष्यविहीन जीवन

एक लक्ष्य एक समय सीमा के साथ देखा गया एक सपना है | - नेपोलियन हिल

बिना लक्ष्य की जिंदगी एक बिना मंजिल के सफर जैसी है, जहाँ हम चलतें तो है लेकिन किसी मुकाम पर नहीं पहुचतें और चलतें - चलतें अपनी सारी ऊर्जा एवं सारा समय बर्बाद कर देते है |

जब हम किसी नई जगह के लिए निकलते है तो निकलनें से पहलें जरुर यह सोचतें है कि, हमें जाना कहाँ है या हमारी मंजिल कौन सी है ? तभी हम सडक पर चलना प्रारंभ करतें है और कई मोड़ो एवं गड्ढों के बाद हम अपनी मंजिल तक बिना रुके पहुच जाते है और वो इसलिए क्योंकि हमें अपनी मंजिल

का पहलें से पता होता है | हम जानतें है कि, हमें जाना कहाँ है और हम क्यों वहां जा रहें है |

जरा सोचिए, यदि आपने बिना मंजिल या बिना शहर का पक्का किए, यदि सडक पर चलना प्रारंभ कर दिया तो क्या आप अपनी मंजिल तक पहुच पायगे ?

मुझे तो नहीं लगता कि आप कभी भी अपनी मजिल तक पहुच सकतें है क्योकि सड़कें अनंत है, जहाँ एक सडक खत्म होने वाली होती है उससे पहलें ही अनेक नई सड़कें आपको आगे ले जाने के लिए तैयार खड़ी होती है | अगर आपकों पता है आपको जाना कहाँ है तो आप उस सडक पर चल सकतें है लेकिन यदि आप सडक के सहारें ही बिना मंजिल के चल रहें है तो जहाँ - जहाँ सडक जाएगी, वहां - वहां आप जाएगे | ऐसे में आप सडक की ही तरह यहाँ - वहां घूमते - घूमते थक जाएगे और लौटकर वापिस आने के लिए भी यदि आपकों अपना रास्ता नहीं पता तो भी आप सड़कों के फेर में कही खो जाएगे और थककर हार मानकर बैठ जाएगे |

सडक केवल हमें अपनी मंजिल तक ले जाने का एक पथ होती है, उस पर चलकर ही हमें यह निश्चित करना होता है कि आख़िरकार हमें जाना कहाँ है क्योकि बिना मंजिल भटकने से तो अच्छा है, अपने घर पर बैठकर अपने काम किए जाए |अन्यथा, बिना लक्ष्य के आप तीर तो चला सकतें है लेकिन वो तीर जाकें कहाँ लगेगा और लगेगा की नहीं, जैसे यह निश्चित नहीं होता वैसे बिना लक्ष्य के जीवन में भी कोई निश्चित नहीं होता कि आपकों वांछित सफलता मिलेगी की नहीं या आप भी बिना लक्ष्य के तीर के भांति यहाँ - वहां भटकतें रहेंगे और एक छोटी सी सफलता के लिए भी तरसते रहेंगे |

यह कहना बड़ा ही आसान है कि, हर किसी को अपने जीवन में कम से कम एक लक्ष्य अवश्य ही बनाना चाहिए लेकिन लक्ष्य बनाएं कैसे ? यह

बतलाना जहाँ थोडा कठिन है, वहीं अपने लिए लक्ष्य बनाना उससे भी कठिन है |

अधिकतर लोगों को यह भी नहीं पता होता है कि, उन्हें अपने जीवन में करना क्या है ? नहीं तो पापा ने बोला गणित ले लो तो गणित ले लिया, तभी पता चला कुछ दोस्त विज्ञानं ले रहें है तो हमनें भी विज्ञानं ले लिया | जैसे - तैसे बारहवी पूरी हुई तो देखा विज्ञानं वालें डाक्टरी की तैयारी कर रहें है और गणित वालें इंजीनियरिंग की तो हमनें भी डिग्री कर ली | डिग्री तो हो गई अब बारी नौकरी की तो देखा ज्यादातर लोग सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहें है तो हम भी सरकारी नौकरी की तैयारी में लग गए | सरकारी नौकरी में सिलेक्शन नहीं हुआ तो सोचा प्राइवेट नौकरी की जाए लेकिन प्राइवेट नौकरी में काम ज्यादा लगा तो सोचा मैंने गलत डिग्री कर ली थी इसलिए अब नई मास्टर डिग्री करेंगे तो कुछ न कुछ इसका फायदा होगा | अब डिग्री भी हो गई, उसके बाद भी हम लोगों एवं दोस्तों के रुझानों, पड़ोसियों - रिश्तेदारों की राय के अनुसार ही चल रहें है और बिना लक्ष्य इतनें साल निकाल दिए फिर भी अभी तक हम यह समझ ही नहीं पाए की हम करना क्या चाहतें है ? हमारा लक्ष्य क्या है ? ऐसे में यदि कोई आपसें कहें की अपनें जीवन में कम से कम एक लक्ष्य जरुर होना चाहिए और आपको भी एक लक्ष्य अवश्य बनाना चाहिए तो क्या आप हजारों चीजों में से अपने लिए एक लक्ष्य चुन सकतें है ?

मुझें तो नहीं लगता, ऐसा आप कर सकतें है | आप क्या सोचतें है, क्या आप अपने जीवन के लिए कोई लक्ष्य तय कर सकतें है ?

यदि हाँ तो बहुत अच्छी बात है और यदि नहीं तो आराम से बैठकर सोचिए कि, आपके लिए क्या करना सबसे जरुरी है और आप उसे कब तक करना चाहतें है एवं उसे कैसे कर सकतें है ?

यदि आपनें यह पता कर लिया तो आपकों अपने लक्ष्य तय करनें और उन तक पहुचनें में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी लेकिन लक्ष्य वो होनें चाहिए,

जो आपकों सफलता की राह पर आगें ले जानें के लिए हो, न कि पीछे खीचनें के लिए | नहीं तो ऐसे लक्ष्यों से आपके लिए सिर्फ नुकसान ही होगा, फायदा नहीं |

हर कोई अपने जीवन में एक सफल व्यक्ति बनना चाहता है और अपना एवं अपने परिवार का नाम रोशन करना चाहता है लेकिन उसे यह नहीं पता होता कि, वो इसके लिए शुरुआत कैसे करें और सफलता तक कैसे पहुचें ?

यदि आप सफलता पाना चाहतें है तो उसके लिए सबसे पहलें एक लक्ष्य निर्धारित करें कि आप करना क्या चाहतें है या आप पाना क्या चाहतें है ? जब आप यह तय कर लें की आपका लक्ष्य क्या है, तो अब बारी आती है हम कैसे उस लक्ष्य तक पहुच सकतें है और उसके लिए हमें क्या करना पड़ेगा ? किन - किन चीजों की जरूरत होगी ? समय कितना लगेगा और <u>हम क्यों ये करना चाहते है ?</u>

जो ये <u>क्यों</u> है, बहुत ही महत्वपूर्ण है हमारें लक्ष्य को पाने के लिए और वो इसलिए यदि आपकों पता होगा कि आप क्यों अपना लक्ष्य पाना चाहतें है तो यह बात आपको आपके लक्ष्य के रास्तें में आने वाली तमाम कठिनाईयों को दूर करनें की जहाँ ताकत देंगी, वहीं आपकों असफलता मिलनें पर भी अपनी गलतियों से सीखकर बार- बार आगे बड़ने के लिए प्रेरित करेगीं |

ज्यादातर लोग इसलिए असफल नहीं होते क्योकि उन्होंने शुरूआत नहीं की होती है, वो तो इसलिए असफल होते है क्योकि उन्होंने तब अपने कदम पीछे खीच लिए होते है, जब उनका लक्ष्य बस उनसे थोड़ी ही दूरी पर उनका इंतजार कर रहा होता है लेकिन वो सफलता के पहलें का अंधकार तो देखतें है लेकिन उस अंधकार के पीछे छिपी अपनी सफलता को पानें की ख़ुशी उन्हें दिखाई नहीं देती |

यदि आपका अपनें लक्ष्य को पाने का कारण इतना ताकतवर है कि वो लक्ष्य के रास्तें में आने वाली तमाम मुसीबतों के बावजूद आपकों आगे बड़ने के

लिए ताकत दे सकता है तो आपकों अपने लक्ष्य तक पहुचनें से सिर्फ एक ही इंसान रोक सकता है और वो कोई और नहीं सिर्फ आप खुद हो | यदि आपने हार मान ली तो अन्यथा आपकों जीतनें से कोई नहीं रोक सकता |

जीवन में यदि आप कुछ करना चाहतें है तो एक न एक लक्ष्य होना आवश्यक है और जितना बड़ा लक्ष्य उतनी बड़ी सफलता एवं उतने ही बड़े सफलता के मार्ग में अवरोध |

कुछ लोग अपने लिए लक्ष्य तो बनातें है लेकिन वो लक्ष्य इतनें बड़े बना लेते है कि कई बार खुद ही उन लक्ष्यों को पाने के लिए शुरूआत करनें से पहलें वो डर जातें है और कुछ लोग शुरुआत तो करतें है लेकिन यह भूल जातें है कि ,जितना बड़ा लक्ष्य, उतना ही लंबा रास्ता और उतना ही लंबा इंतजार फिर भी वो उस रास्तें पर चलतें है लेकिन रास्ता लंबा होनें के कारण बीच रास्तें तक पहुचते - पहुचते अपने मनोबल को खो देते है और हार मानकर बैठ जाते है | ऐसे में वो यह भूल जातें है कि, जितना वो अभी चलें है अपने लक्ष्य तक, उतना ही उन्हें वापिस लौटना होगा | यदि वो वापिस न लौटकर उतनी ही दूरी यदि अपनें लक्ष्य तक तय कर लें, जितनी दूरी वो वापिस लौटने में तय करनें वाले है तो वो उस लक्ष्य को, या तो पा लेंगे या फिर उस लक्ष्य के करीब पहुच जाएगे लेकिन लोगों को लक्ष्य पानें से ज्यादा अच्छा अपनी हार को पाना लगनें लगता है और वो बिना आगे बड़े पीछे लौट आते है |

यहाँ लोगों की यह गलती नहीं है की उन्होंने लक्ष्य बहुत ही बड़ा चुना है लेकिन गलती यह है कि, यदि वो उस बड़े लक्ष्य तक पहुचनें से पहले कुछ छोटे - छोटे लक्ष्य अपने लिए स्थापित करतें जाते तो उन छोटे - छोटे लक्ष्यों को पाने की ख़ुशी जहाँ उनके मनोबल को बढाती, वहीं उनकें इस सफर को और ही रोमांचक बनाती |

आप सब सीढियों से जरुर वाकिफ होगे और उन पर चढ़कर ऊंचाईयों तक पहुचें भी होगे लेकिन यदि आपनें गौर किया होगा तो सीढियों पर चढ़ने से पहलें

आपका लक्ष्य होता है- सीढी के सबसे ऊपर वाले भाग पर पहुचना | फिर आप उस सीढ़ी की एक - एक सीढ़ी पर पैर रखतें हुए ऊपर चढ़ते जाते है और थोड़ी ही देर में अपने लक्ष्य तक पहुच जाते है |

यदि आप सीधे ही ऊपर जाने की कोशिश करतें तो न ही ऊपर जा पातें, वहीं यदि गिर जाते तो हाथ - पैर भी टूट जाते | ऐसा ही कुछ हमारें लक्ष्य के साथ होता है | यदि आप एक ही बड़ा लक्ष्य बनातें है तो उस लक्ष्य तक पहुचतें - पहुचतें आप अपने लक्ष्य के रास्तें में आने वाली कठिनाईयों से टकराते - टकराते अपना मनोबल खो बैठते है | वहीं सीढ़ी जैसे यदि आप अपनें बड़े लक्ष्य को छोटे - छोटे लक्ष्यों में बाँट दो तो जहाँ लक्ष्य पाना आसान हो जाता है, वहीं लक्ष्य तक पहुचने का मजा उसकें बीच आने वाली कठिनाईयों के डर से भी बड़ा हो जाता है |

जब आप एक छोटा लक्ष्य पातें हो तो आपको लगता है, जैसे आपनें इसे पाया है, वैसे ही आप तमाम लक्ष्यों को पा लेगें | वहीं यदि आप लक्ष्य पाने से रह जातें हो तो आपको लगता है कि यह तो एक छोटी सी असफलता है, जिसे आप जल्द ही दूर कर आगे बड जायगे और आने वाले अपनें सभी लक्ष्यों को पा लेगें |

मेहनत तो सभी लोग करतें है लेकिन लक्ष्य विहीन व्यक्ति जहाँ मेहनत दूसरें के अनुसार करता है और दूसरें के लिए करता है, वहीं अपने लिए लक्ष्य बनाने वाला व्यक्ति मेहनत अपने लक्ष्य को पाने के लिए करता है | जब आपकों मेहनत करना ही पड़ेगी, तो वो मेहनत अपने सपनों को, अपने लक्ष्य को पूरा करनें के लिए क्यों न की जाए ?

यदि आपकें जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है, तो आप जिंदगी जी नहीं रहें है सिर्फ काट रहें है|

जिंदगी जीनें में और काटने में बहुत ही बड़ा फर्क होता है क्योकि जिंदगी जीते सब है लेकिन कुछ अपनें सपनों के लिए, तो कुछ दूसरों के सपनों को पूरा करनें के लिए | आप क्या कर रहें हो- जिंदगी जी रहें हो या सिर्फ मरनें का इतंजार कर रहें हो ?

लोगों के साथ भी बड़ी दुविधा होती है, जब हम छोटे होते है तो सपनें देखतें है और उन्हें पूरा करना चाहतें है लेकिन जैसे ही थोड़े बड़े होते है तो वो सपनें जो अभी तक हमारें थे अब वो हमारें न रहकर, किसी और के हो जातें है | अब हम अपने माता - पिता के सपनें पूरे करनें के लिए मेहनत करने लगतें है, जो अपनें सपनें इसलिए पूरें नही कर पाए जिससे वो हमारें सपनें पूरे कर सकें और अब बच्चों की जिम्मेदारी बनती है कि, वो अपनें माता - पिता के सपनें पूरे करें | कुछ समय बाद हम भी व्यवसाय या नौकरी करनें लगतें है और हमारें भी बच्चे हो जातें है तो उनकें बेहतर भविष्य के लिए हम ज्यादा मेहनत करनें लगतें है जिससे हमारें बच्चे हमारी तरह न रहें और अपने सपनें पूरें कर सकें लेकिन बड़े होते - होते उनकें साथ भी वैसा ही होता है, जैसा कि आपके साथ | जैसे आप अपनें सपनें इसलिए पूरें नहीं कर पाए जिससे आप अपने माता - पिता के सपनें पूरे कर सकें, वैसे ही आपके बच्चे अपने सपनें पूरें न कर, आपके सपनें पूरें करनें में लग जातें है |

यदि जब आपकों एक - दूजे के सपनें पूरे करनें ही है तो उससे अच्छा आप अपनें सपनें खुद पूरें कर उस पछतावे और मायूसी को क्यों नहीं दूर फेक देते जो आपकों अंदर ही अंदर इसलिए खाए जा रही है क्योकि आप बहुत कुछ कर सकतें थे लेकिन आप कर नहीं पाए | यदि आप कर पातें तो आपकी स्थिति ऐसी न होकर और बेहतर होती | फिर आप दूसरों को यह सोचकर कोसते है कि, फलाने के चक्कर में या अपने माता - पिता के कारण या अपनी जल्दी शादी होने के कारण, आप वैसा नहीं कर पाए या आप वो नहीं बन पाए जो आप बनना चाहतें थे |

क्या सच में ऐसा ही था, कभी आपनें सोचा है ?

मुझे तो ऐसा नहीं लगता | आप जो चाहतें थे वो इसलिए नहीं कर पाए क्योकि आपनें अपनें सपनों को पाने के लिए कभी भी, न ही शुरुआत की और न ही वो हिम्मत जुटा पाएं जो अपनें सपनों को पूरा करनें के लिए जरूरी थी इसलिए भलें ही अपने मन को बहलाने के लिए आप किसी को भी कोसते रहें लेकिन कोसना है तो अपने आपको कोसे क्योकि सिर्फ गलती आपकी थी और आप ही अपनी इस स्थिति के जिम्मेदार है, न की कोई और |

यदि आप अपने लक्ष्य को नहीं पा पाए तो उसका ये मतलब नहीं है कि आपका चुनाव गलत था | यदि चुनाव गलत भी था, तो भी आप अपनी मेहनत से अपने गलत लक्ष्य के चुनाव को एक सही चुनाव साबित कर सकतें थे लेकिन फिर भी अगर आप अपना लक्ष्य नहीं पा पाए तो इसका यही कारण है कि आपने अपने लक्ष्य तक पहुचनें के लिए उतनी मेहनत नहीं की, जितनी आवश्यक थी |

आप सफलता पा सकतें है या नहीं, वो इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आपका लक्ष्य कितना बड़ा है या कितना छोटा है | वो तो इस बात पर निर्भर करता है कि उस लक्ष्य तक पहुचनें के लिए आपकी तैयारी कितनी है और आप कितनी तैयारी कर सकतें है |

चाहें आप जितना अच्छा प्लान क्यों न बना ले लेकिन जब वो प्लान जमीन पर आता है तो उसमें सुधार की संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता और सुधार तभी संभव है, जब आप अपनें लक्ष्य को पाने के लिए कुछ भी कर सकनें का हौसला रखतें हो | ऐसे में चाहें जितनी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, आप उन कठिनाईयों को दूर कर अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाते जाएगे और अपनी सफलता को सुनिश्चित करतें जायेंगे |

जीवन में लक्ष्य को पाना कुछ - कुछ रोटी की तरह है | जैसे आप एक पूरी रोटी को पूरा का पूरा खा नहीं सकते, वैसे ही आप अपनें लक्ष्य को एक साथ नहीं पा सकतें | यदि आपको रोटी को खाना है तो उसको एक - एक करके टुकडो में तोड़ कर खाना होगा जिससे उसे खाना भी आसान हो जाता है और पचाना भी | ऐसे ही लक्ष्य को छोटे - छोटे लक्ष्यों में तोड़कर उसे पाना वैसे ही आसान हो जाता है, जैसे रोटी को छोटे - छोटे टुकडो में खाना |

लक्ष्य हमेशा अपनी योग्यता के आधार पर ही निर्धारित करना चाहिए न कि दूसरों को देखकर | नहीं तो ऐसे में आप अपनें लक्ष्यों को पाने में जहाँ कठिनाइयाँ महसूस करेंगे, वहीं हो सकता है आप अपनें लक्ष्य को पाने से वंचित रह जाए |

लक्ष्य को पानें के लिए आप योग्य है या नहीं, यह तब तक महत्व नहीं रखता, जब तक आप अपने लक्ष्य के अनुसार ही अपनें आपको और बेहतर बनाने के लिए जी - जान से मेहनत करतें रहे | भलें ही आप किसी काम को करनें के लिए पर्याप्त योग्यता नहीं रखतें हो लेकिन यदि आप उस काम को करना शुरु कर दें तो मैं यकीन से कह सकता हूँ कि जब तक आप लक्ष्य तक पहुचेंगे, तब तक आप उस काम को बेहतर तरीकें से करना सीख जाएगे |

मुझे लगता है कि,

> *इंसान किसी चीज के बारे में तब नहीं सीखता, जब वो उस बारे में पढता है | वो तो तब बेहतर सीखता है, जब वो उस काम को करता है |*

यदि आप कुछ पाना चाहतें है तो उस लक्ष्य को पाने के लिए शुरुआत कर दीजिए और दिल से लगे रहिए एवं रही बात उस चीज के बारे में सीखनें की तो उस लक्ष्य के रास्तें में आने वाली कठिनाईयों से ज्यादा अच्छा शिक्षक मुझे नहीं

लगता कोई और होता होगा इसलिए यदि आप कुछ पाना चाहतें है तो कल का इंतजार न कर, आज ही अपनें लक्ष्य को बनाकर उसे पाने की कोशिशों में लग जाए और आप पाएगें कि आपका लक्ष्य भी आप तक आने के लिए कोशिशो में वैसे ही लगा होगा, जैसे कि आप अपनें लक्ष्य को पाने के लिए |

जैसे हम मंजिल पाने के लिए उतावले होते है, वैसे ही मंजिल हमें पाने के लिए उतावली होती है लेकिन जैसे हम बिना काम के किसी को एक रुपया नहीं देते, वैसे ही मंजिल हमें तब तक नहीं मिलती जब तक वह यह पक्का न कर लें की सामनें वाला बंदा उसके लायक है की नहीं | यदि आप लायक हो तो जल्द ही आपकों मंजिल मिल जाएगी और अगर आप लायक नहीं हो तो आपकों मंजिल तब तक नहीं मिलेंगी जब तक आप उसकें लायक न बन जाओं क्योकि आप भी अपनी कोई कीमती चीज उस व्यक्ति को नहीं देना चाहेंगे जो उसे संभाल न सकें, वैसे ही सफलता उसे नहीं मिल सकती है जो उसे संभाल न सकें इसलिए लक्ष्य बनाएं और उसे पाने के लिए उसके लायक बनें | फिर आप आगें - आगें और सफलता आपके पीछे - पीछे भागेगी |

अध्याय - 11

सोच एवं स्वभाव का प्रभाव

आप अपने बारे में जैसा सोचतें है वैसे ही आप बन जाते है | यह तो आपनें बहुत बार सुना होगा लेकिन क्या वाकई में आपकी सोच इतनी मायनें रखती है कि जो आप सोचतें है, वैसा ही आपका दिमाग बर्ताव करता है, यदि आप अच्छा सोचेगे तो आपका दिमाग भी अच्छा बर्ताव करेंगा और यदि आप बुरा सोचेगें तो आपका दिमाग भी वैसा ही बर्ताव करेंगा ?

आपकी सफलता और असफलता आपकी सोच पर निर्भर करती है यह कहना गलत नहीं होगा क्योंकि किसी काम के बारे में यदि आप ज्यादा सोचतें है तो आपके दिमाग को लगनें लगता है कि वह काम कठिन है इसलिए वह उस काम को करनें में कठिनाई महसूस करता है और काम न करनें के बहाने खोजने लगता है | वहीं अगर आप किसी काम को आसान समझतें है तो आपका दिमाग भी उस काम को वैसा ही मानेगा और उसे उस काम को करनें में कोई भी कठिनाई नहीं होगी |

आप क्या सोचते है ? कैसा सोचतें है ? आपके विचार कैसे है ? इन बातों का आपके जीवन में बहुत ही महत्व होता है और इन्हीं बातों पर निर्भर करता है कि, आपका स्वभाव कैसा होगा |

यदि किसी व्यक्ति का स्वभाव अच्छा है तो जरुरी नहीं की उसकी सोच भी अच्छी हो क्योकि एक अच्छी सोच वालें व्यक्ति का स्वभाव तो अच्छा हो सकता है लेकिन जरुरी नहीं कि एक अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति की सोच अच्छी हो | हम हमेशा मानकर चलतें है कि सामनें वाले व्यक्ति का यदि स्वभाव अच्छा है तो उसकी सोच एवं विचार भी अच्छे होगे लेकिन जब आप उस व्यक्ति को करीब से जानतें जाते है तो आपकों पता चलता है कि उसकी सोच उतनी अच्छी नहीं है, जितना की आप मानतें थे |

व्यक्ति अपने स्वभाव को अपनी जरूरत के हिसाब से बड़ी आसानी से बदल सकता है लेकिन उसकी अच्छी सोच उसके चरित्र की निर्मलता पर निर्भर करती है और अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति एक अच्छी सोच का मालिक होता है लेकिन एक बुरा चरित्र का व्यक्ति अच्छे स्वभाव का मालिक तो हो सकता है लेकिन उच्च विचारों का नहीं | उस व्यक्ति का आपके साथ अच्छा बर्ताव कई वजहों से हो सकता है | उनमें से एक वजह है, आपकी उसकों जरूरत | यदि जरूरत ख़त्म, तो उसका अच्छा बर्ताव ख़त्म |

लोग अपने आस - पास के लोगों को उनकें बर्ताव के आधार पर अच्छा - बुरा मानते है और यही वो हमेशा धोखा खातें है क्योकि ज्यादातर लोग अच्छी बातें करनें वाले व्यक्तियों को जो आपके सबसे बड़े हितैषी बनते है अपने करीब रखतें है और अक्सर यहीं लोग आपको धोखा देने से नहीं चूकते क्योकि भलें ही उनका बर्ताव अच्छा है लेकिन उनकी सोच बुरी है और बुरी सोच के व्यक्ति कभी भी, ना अपना और ना ही दूसरों का भला कर सकतें है और नहीं उनके बारे में भला बोल सकतें है |

यदि आपकी सोच नकारात्मक है तो आप जो सोचेंगे केवल बुरा ही सोचेगें और आपकें बुरें विचार आपकों बुरे कामों की ओर ले जाएंगे | जो जहाँ आपके कष्टों का कारण बनेंगे, वहीं आपके और आपके परिवार की खुशियों को भी निगल जाएगे |

यदि आप किसी काम के बारे में अच्छा सोचते है तो वो काम आपकों अच्छा लगता है और यदि बुरा सोचतें है तो वो काम करनें से आप हिचकिचाते है | इसका मतलब ये नहीं होता कि, वो काम बुरा है | कई बार उस काम के प्रति आपकी सोच गलत होती है और इसका ही खामियाजा आप उस काम को न करके भुगतते है |

आप जीवन में क्या करना चाहतें है और क्या कर सकतें है, वो आपकी सोच पर निर्भर करता है | यदि आपकी सोच अपने जीवन के प्रति सकारात्मक है तो उसका फल भी आपकों अच्छा ही मिलेगा लेकिन यदि आपकी सोच नकारात्मक है तो उसका फल आपकों नकारात्मक ही मिलेगा |

हमारा दिमाग बहुत ताकतवर होता है, न ही इसकी कोई सीमा होती है और न ही कोई कमजोरी | आप चाहें कुछ भी कर सकतें है, आपका दिमाग ख़ुशी - ख़ुशी आपकें सपनें को पूरा करनें में जी- जान से लग जाएगा लेकिन आपका दिमाग आपकी मदद तभी करेंगा, जब आप अपनें दिमाग को यह जरा भी अंदाजा न होनें दे कि, आप जो करनें जा रहें है वो आप नहीं कर सकतें | यदि आपनें यह सोचा की आप यह नहीं कर सकतें तो आपका दिमाग यह मान लेगा कि, यह काम उसकें बस की बात नहीं है और जो दिमाग आपकी अभी मदद करना चाहता था अब वो उस काम में कमियां निकालनें का काम करेंगा और आपकी नकारात्मक सोच आग में घी को डालनें जैसा काम करेंगी |

अक्सर हम किसी काम को करनें में इसलिए कठिनाई महसूस नहीं करतें क्योकि हम उसकों कर नहीं सकतें, बल्कि हम तो इसलिए कठिनाई महसूस करतें है क्योकि हमें यह सोचकर डर लगता है कि, अगर हम इस काम को करेंगें तो लोग हमारें बारे में क्या सोचेगें | यदि मैं इस काम को अच्छे से नहीं कर पाया तो लोग मुझ पर हंसेगे और तरह - तरह के ताने मारेंगे | जो ये लोग क्या कहेंगे का डर है, वो कई बार हमें अपने सपनें को पाने की शुरुआत करनें से रोकने का काम करता है और हम लोगों के कहनें के डर में आकर यह सोचनें में लग जातें है

कि, क्यों मैं उस काम को नहीं कर सकता और जब आप यह सोचतें है कि, क्यों आप ये नहीं कर सकतें | तभी आप अपनी असफलता को सुनिश्चित कर देते है |

आप क्यों नहीं कर सकतें ? यह सोचकर आप अपनें दिमाग को तरह - तरह के कारण देकर यही समझाने का प्रयास करतें है कि, यह मेरे बस का नहीं है और वहीं आपका दिमाग आपकों यह समझाने में लगा होता है कि- एक बार शुरुआत तो करों फिर बताता हूँ, मेरे बस का क्या है और क्या नहीं |

जिस दिमाग की सीमा जब भगवान ने भी नहीं रखीं तो आप कौन होते हो उसको एक सीमा में बांधने वाले ? भगवान ने आपको संभावनाओ से भरा यह शरीर और दिमाग दिया है जिसे आप जैसा चाहें वैसा ढाल सकतें हो और आप क्या करतें है ? अपने आलस, गलत सोच, लोग क्या कहेंगे का डर, आदि के कारण न ही अपनी योग्यता पर विश्वास करतें है और न ही अपनें आपको और बेहतर करनें का प्रयास करतें है |

मानता हूँ, हर व्यक्ति एक सा नहीं होता और न ही उसका दिमाग एक जैसा काम करता है लेकिन आप चाहें जैसे हो, इस दुनिया में अपने आपको बेहतर किया जा सकता है इसलिए जो लोग यह कहतें है कि मैं इतना लायक नहीं हूँ की अपने सपनें पूरें कर सकूं | ऐसे लोग केवल अपनें आप से झूठ बोलनें के अलावा कुछ नहीं करतें | माना वो लायक नहीं है लेकिन इसका ये मतलब नहीं की वो लायक बन नहीं सकतें और अपने को और बेहतर बना नहीं सकतें |

जब आप सोचतें है- मैं क्यों नहीं कर सकता ? तो आपके उस काम में सफल होनें के सारें रास्तें बंद हो जाते है और यदि आप सोचतें है- मैं क्यों कर सकता हूँ ? तो आप अपनी सफलता को सुनिश्चित करनें का काम करतें है | बात लगभग समान है लेकिन जहाँ एक वाक्य आपकी नकारात्मक सोच को जाहिर कर रहा है, वहीं दूसरा वाक्य आपकी सकारात्मक सोच को |

आप सोच रहें होगे कैसे ? क्योकि दोनों वाक्यों में ही अपनी योग्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाया गया है | फिर भी एक सही और एक गलत कैसे है ?

सोच 1 - मैं क्यों नहीं कर सकता ? - इस वाक्य में आप अपने दिमाग को यह समझानें का प्रयास कर रहें हो कि किन - किन कारणों के कारण यह काम आप नहीं कर सकतें |

सोच 2 - मैं क्यों कर सकता हूँ ? - यह वाक्य भी लगभग पहलें वाक्य जैसा ही समान है लेकिन अंतर बहुत बड़ा है | जहाँ पहलें वाक्य में आप अपनी सफलता के रास्तें को बंद करनें का काम कर रहें थे, वहीं इस वाक्य में आप अपनें दिमाग को यह बतलाने की कोशिश कर रहें है कि, क्यों आप इस काम को करना चाहतें है और क्यों आपकों यह करना चाहिए | अब आपका दिमाग यह नहीं सोच रहा कि, आप इस काम को नहीं कर सकतें बल्कि अब वो यह सोचने में लगा है कि इस काम को कैसे किया जाए जिससे इसे सफलतापूर्वक जल्द से जल्द पूरा किया जा सकें | अब आपका दिमाग उस काम को न करने के बहाने खोजने में समय न लगाकर आपकी सफलता को सुनिश्चित करनें के लिए क्या - क्या करना चाहिए और क्या जरुरी है, उसकी तैयारी करनें में आपकी मदद करने का काम करेंगा |

सोच का अंतर यही होता है कि जहाँ आपकी सोच बिगडती बात को बना भी सकती है, वहीं बनती बात को बिगाड़ भी सकती है | मैं बार - बार यही कह रहा हूँ और अब भी कहूगा- *आपकी सोच ही आपको बना सकती है या मिटा सकती है |* आप कैसा सोचतें है और क्या सोचतें है ? यही बात यह सुनिश्चित करती है कि आप इंसान कैसे है | लोग दो पल के झूठे बोल के कारण धोखा खा सकतें है लेकिन जरा उस इंसान से कोई जा के पूंछे जो जिंदगीभर से अपने मीठे बोलों के कारण ही अपनी कमजोरियों को छुपाकर अपनें आपको धोखा दे रहा है |

खेत हमारें लिए अनाज पैदा करनें का महत्वपूर्ण जरिया होतें है और हम सब खेतों के बारे में अच्छे से जानतें है और कुछ - कुछ लोग यह भी बड़े अच्छे से जानतें होगे कि खेतों में खेती कैसी की जाती है | सारी जमीन को हम खेत नहीं

बोल सकतें क्योकि खेत उन्हीं को कहा जाता है, जहाँ खेती की जाए या अनाज एवं सब्जियां पैदा की जाएं | जब हम खेत में अनाज लगातें है तो जितना अनाज बोया जाता है, हमेशा फसल उससे कई गुनी अधिक पैदा होती है और यदि किसी खेत या जमीन पर कुछ नहीं लगाया जाएं तो उस खाली जमीन पर कांटे, घास आदि उग आती है, जो न हमारें कुछ काम की होती है और वहीं हमारी जमीन की उर्वरता को नुकसान भी पहुचाती है | ऐसा ही कुछ हमारा दिमाग होता है, जहाँ काफी खाली जगह होती है जिसे आप या तो सकारात्मक सोच से भर सकतें है या तो नकारात्मक सोच से लेकिन जैसे खेतों में यदि आप एक बोरा गेहूं बोते है तो कई बोरे गेहूं पैदा होते है ऐसा ही हमारें दिमाग में होता है | यदि आप अच्छे विचारों को बोते है तो कई गुना अच्छे विचार ही पैदा होते है और वहीं यदि आप बुरे विचार बोते है तो भी कई गुना बुरे विचार ही पैदा होते है | जब एक बुरा विचार आपकी जिंदगी में उथल - पुथल मचा सकता है तो जरा सोचिए, तब क्या होगा जब आपके दिमाग में बुरे विचारों का ढेर लगा होगा ?

यदि आप अपनी सोच को बदलना चाहतें है तो सबसे पहलें उन बुरे विचारों को उखाड़ फेकिये जो आपके दिमाग में अपना डेरा जमाए बैठे है और फिर देखिए बदलाव |

सफलता का कोई मूल मंत्र नहीं होता वो तो आपके ऊपर निर्भर करता है कि, क्या आप सच में सफलता पाना चाहतें है की नहीं ? यदि हाँ तो उस सफलता तक पहुचनें के लिए थोड़ी मेहनत तो करनी ही पड़ेगी | यदि आप मेहनत कर सकतें हो एवं अपनें में बदलाव ला सकतें हो तो इसमें कोई शक नहीं आप सफलता भी पा सकतें हो |

जैसे हमारें लिए यदि कोई बीमारी हो जाती है तो हम उस बीमारी को दूर करनें के लिए दवाईयां लेते है, वैसे ही ऐसी बहुत सी रुकावटें होती है जिन पर हम ध्यान भी नहीं देते और वो अपना काम करती रहती है | यदि उन रुकावटों को वक्त रहतें ठीक कर लिया जाएं तो आपकों अमीर बनने से एवं सफल होनें से कोई नहीं रोक सकता |

हमारी सोच, हमारी सफलता की राह में एक ऐसी रुकावट है, जिसे लोग समझ ही नहीं पाते और लगातार मौके खोते जाते है | आप आगे बड़ने के लिए कदम बढायेगे या नहीं, यह इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आपके पास कोई अच्छा मौका है कि नहीं अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि आप आगे बड़ने के लिए इच्छुक है की नहीं एवं उस मौके के बारे में आपकी सोच क्या है |

जीवन में लोग अपनी सोच के कारण ही हमेशा किसी न किसी फिजूल चीज में उलझे रहतें है और जब बात आती है एक नई शुरुआत कर अपने आपकों आगे बढ़ाने की तो अपनी पुरानीं घिसीपिटी सोच के कारण ही वो अपनें कदम आगे बढानें की हिम्मत नहीं करतें और न ही दूसरों को आगे बड़ने देते है |

एक बुरी सोच व्यक्तियों में कई विकारों को उत्पन्न करनें का काम करती है और जब यह विकार आपस में मिलतें है तो ये व्यक्ति को केवल बर्बाद और अकेला कर मायूसी एवं पछतावे के दलदल में फ़साने का काम करतें है |

जब आप अपने आपको दूसरों से बेहतर सोचतें है तब आप आपके अंदर घमंड का जन्म होता है और जब आप अपने आपकों दूसरों से कमतर आंकते है, तब आपकें अंदर जलन का जन्म होता है | जो जहाँ आपकों सुख से बैठनें नहीं देती, वहीं दूसरों को परेशान करनें का एक भी मौका नहीं छोडती |

जब आप किसी चीज को या अपने लक्ष्य को पाने में असफल हो जाते है, तब आपकी यह असफलता आपकी नकारात्मक सोच के साथ मिलकर निराशा का रुप ले लेती है और निराशा जहाँ आपको बीमार बना देती है, वहीं आपके आगे बड़ने के रास्तों को बंद करती जाती है |

जब आप सफलता को लेकर आशंकित रहतें है, तब आपकी सोच आपकी इस आशंका को आपकें हारने के डर में बदलकर आपकों अपनी सफलता के लिए कोशिश न करनें को बाध्य करती है | यदि आपनें ऐसा किया तो आपकी सफलता आपकी असफलता का रुप धारण कर आपकों तनाव या

निराशा के दलदल में फसा देती है, जहाँ से बाहर निकलपाना अंसभव तो नहीं लेकिन कठिन जरुर होता है |

भलें ही सोच हमकों महत्वहीन लगें लेकिन जहाँ अच्छी सोच आपकों आगे बड़ने के लिए प्रेरित करती है, वहीं बुरी सोच आपकों निराशा, मायूसी, क्रोध, जलन, आदि विकारों के ऐसे दलदल में फसा देती है जहाँ से निकलपाना आसान नहीं होता और आप जितना कोशिश करेंगे बाहर निकलनें की उतना ही दलदल में अंदर धसते चले जायेगे |

बुरी सोच के परिणाम कभी भी अच्छे नहीं हो सकतें | आज नहीं तो कल आपकों अपनी बुरी सोच के कारण इसका फल भुगतना ही पड़ेगा इसलिए कोशिश नहीं अपनें मन में यह बैठा लो यदि आपकों आगे बढना है तो आपकों अपनी सोच को बदलना ही पड़ेगा अन्यथा एक स्थिति तक आप भलें ही सफल हो जाएं लेकिन जितनी जल्दी आप सफल होगें, उससे कहीं तेजी से आपका पतन होगा |

नेक सोच, नेक फितरत की निशानी होती है | यदि नेक फितरत है बंदे की तो उसकी हर कठिनाई दूर होती है |

यदि आपकों अपनी सोच को बदलना है तो सबसे पहलें उन लोगों की संगती को छोड़े जिनकी सोच बुरी है एवं अच्छे लोगों की संगती में रहे | यदि अच्छी संगती नहीं मिल पा रही है तो बुरे लोगों की संगती से तो अच्छा है आराम से घर बैठकर कुछ किया जाए | यदि आप बुरी संगती में है तो दो चीजें ही संभव है, पहली चीज- उनकी संगती में रहकर आप उन जैसा बन जाए या दूसरी चीज- आपकी संगती में रहकर उनकी सोच बुरे से अच्छी हो जाए | यदि आपकों लगता है कि, आपकी संगती में रहकर दूसरें लोग बुरे से अच्छे हो जाएगे तो अच्छी बात है, कम से कम आपके कारण दूसरों की सोच में सकारात्मक

बदलाव तो आएगा लेकिन यदि उनकी संगती में आपकी सोच सकारात्मक से नकारात्मक हो रही है तो जितना शीघ्र हो सकें अपनी संगती को बदल लें अन्यथा बुरें से अच्छा होने में काफी समय लगता है लेकिन अच्छे से बुरे होने के लिए केवल एक बुरा विचार ही काफी है |

यदि ध्यान दिया जाए तो हमारी सोच ही हमारी दिशा को निर्धारित करनें वाला वो कारक है जो हमें असफलता के गर्त में धकेल भी सकता है एवं सफलता के शिखर पर पंहुचा भी सकता है | बस निर्भर इस बात पर करता है कि आपकी सोच है कैसी- नकारात्मक या सकारात्मक |

आपके साथ क्या हुआ उतना मायने नहीं रखता | जितना कि जो हुआ उसके बारे में आप कैसा सोचतें है, मायने रखता है | - एपिक्टेटस

आपके साथ क्या हुआ और क्यों हुआ ? आप इसे नहीं बदल सकतें लेकिन उस बारे में अपनी सोच को बदलकर जरुर आप उसकें प्रभाव को कम कर सकतें है |

जीवन में चीजों का होना भलें ही हमारें हाथ में न हो लेकिन उन चीजों के बारे में हम क्या प्रतिक्रिया देते है यह जरुर हमारें हाथ में होता है | या तो आप बिना सोचे हर चीज पर प्रतिक्रिया देकर अपना वक्त बर्बाद कर सकतें है या फिर अपनी सोच को अपने लक्ष्य पर केंद्रित कर, अपने लक्ष्य को पानें के लिए मेहनत कर सकतें है क्योकि जो बीत गया सो बीत गया, आप उसे नहीं बदल सकतें लेकिन जो आने वाला है उसे जरुर बदला जा सकता है |

हमारी ख़ुशी या गम इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हमारी परिस्थितियां कैसी है, वो तो इस बात बार निर्भर करता है कि हमारा स्वभाव कैसा है | हमारें जीवन में आने वाली ख़ुशी और गम अधिकतर हमारे स्वभाव पर ही निर्भर करते है | यदि आपका स्वभाव अच्छा है तो इस बात में कोई शक नहीं की आपका व्यवहार भी अच्छा होगा और यदि आपका स्वभाव बुरा है तो आपका व्यवहार

भी निश्चित ही बुरा होगा | यदि हमारा व्यवहार दूसरों के साथ अच्छा होता है तो उनका व्यवहार भी हमारें साथ अच्छा ही होता है और यदि हमारा व्यवहार दूसरों के साथ बुरा है तो हम उनसें अपने लिए अच्छे व्यवहार की उम्मीद सपनें में भी नहीं कर सकतें |

लोग इस बात से परेशान रहतें है कि दूसरें लोग मेरे बारे में क्या सोचेगें लेकिन वो इस बात पर थोडा भी ध्यान नहीं देते कि, क्यों लोग आपके बारे में बुरा सोचेगें यदि आपका स्वभाव उनकें प्रति अच्छा है तो | लोग तभी आपकें बारें में बुरा सोचेगें जब आपका स्वभाव उनकें प्रति बुरा होगा | यदि आपनें उनकें प्रति अपना स्वभाव बदल लिया तो उनकी आपकें प्रति सोच खुद व खुद बदल जाएगी |

ज्यादातर लोग दूसरों की नजरों में अच्छा बनना चाहतें है लेकिन अपने स्वभाव में बदलाव नहीं करना चाहतें तो कैसे वो किसी की नजरों में अच्छा बन सकतें है ? यदि आपको अच्छा बनना है तो सबसे पहलें अपने स्वभाव पर गौर कीजिए और जरा सोचिए, जो आपका व्यवहार है दूसरों के प्रति क्या वो ठीक है ? यदि आपके साथ कोई व्यक्ति ऐसे बर्ताव करे जैसे आप दूसरों के साथ करतें है तो कैसा लगेगा आपको- अच्छा या बुरा ? यदि इस सवाल का उत्तर, अच्छा है तो कोई बात नहीं लेकिन इस सवाल का उत्तर, बुरा आए तो आपकों अपने व्यवहार एवं स्वभाव में परिवर्तन करने की जरुरत है |

किसी की नजरों में अच्छा बनना अच्छी बात है लेकिन मेरे ख्याल से, किसी की नजरों में अच्छा या बुरा होनें का उतना महत्व नहीं होता जितना की अपनी नजरों में आप कैसे है उसका होता है | यदि आप अपनी नजरों में अच्छे है तो इसका कोई महत्व नहीं रह जाता की लोग आपके बारे में क्या सोचतें है |

हमारें मोहल्ले या गाँव या रिश्तेदारों में कई ऐसे लोग होते है जिनके साथ भलें ही आपका व्यवहार अच्छा है लेकिन वो आपकें साथ बुरा व्यवहार ही करतें है चाहें आप लाख कोशिश क्यों न करे लेकिन उनका व्यवहार आपके लिए वैसा

ही रहता है, जैसा पहलें था | जिससे हमारें मन में कभी - कभी आता है कि हम भी उनकें साथ अच्छा बर्ताव क्यों करें ? जब वो हमारें साथ बुरा बर्ताव करतें है लेकिन आपकों जरा सोचना चाहिए, आपके अच्छे बर्ताव के कारण भी जब सामनें वाले व्यक्ति के व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया तो आप क्यों उसकें चक्कर में अपनें अच्छे व्यवहार को बुरा बना रहें है | आज नहीं तो कल उसके व्यवहार में भी अंतर आएगा और यदि न भी आया तो हमें सिर्फ अपने आपकों अच्छा बनाने की कोशिश करना चाहिए क्योकि यदि वो अच्छा बनना चाहता है तो वो स्वयं इसकें लिए कदम बढाएगा और यदि वो बदलना नहीं चाहता तो चाहें आप कुछ भी कर लों वो बदल नहीं सकता इसलिए ऐसी जगह समय बर्बाद करनें का कोई मतलब नहीं जहाँ व्यक्ति अपने लिए कोशिश न करें |

चुंबक से तो आप सभी बचपन में जरुर खेलें होगे और उसकें लोहें को अपनी ओर खीचनें की काबिलियत से भी बाकिफ होगें | जैसे- एक चुंबक हजारों चीजों में से भी सिर्फ लोहें को खीच सकतीं है, वैसा ही कुछ हमारें स्वभाव के साथ होता है | हमारा स्वभाव भी अपने जैसे स्वभाव के लोगों को हमारी ओर बड़ी आसानी से आकर्षित कर लेता है लेकिन फर्क सिर्फ इतना होता है कि, यदि आपका स्वभाव अच्छा है तो आपके पास अच्छे लोग ही आकर्षित होगे एवं आपका स्वभाव बुरा है तो जैसे बुरी चीजों के पास बुरी चीजें ही अपना घर बनाती है वैसे ही आपका बुरा स्वभाव भी अच्छे लोगों को आकर्षित न कर केवल बुरे लोगों को ही आकर्षित करेंगा | जब आपकों अपने गलत स्वभाव के कारण इतनी तकलीफ उठानी पड़ती है तो जरा सोचिए, तब क्या होगा, जब आपके चारो - ओर केवल बुरे लोगों का अंबार लगा होगा ?

प्रकृति ने हमें चुनाव का मौका दिया है और हम अपने बारे में सही - गलत चुन सकतें है तो आप क्या चुनेगें- एक अच्छा स्वभाव या एक बुरा स्वभाव ? फैसला हर बार की तरह इस बार भी आपको ही लेना है क्योकि आप जो फैसला लेंगे उसका परिणाम भुगतना भी तो आप ही को है |

मुझे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के जीवन की एक बात याद आ रहीं है-

एक बार की बात है, स्वामी रामकृष्ण अपनें शिष्यों के साथ बैठे थे तभी न जानें एक बिच्छू कहाँ से आ जाता है और स्वामी रामकृष्ण के पैर पर काट लेता है। यह देखकर उनकें शिष्य गण उस बिच्छू को मारनें के लिए दौड़ पड़ते है तो स्वामी रामकृष्ण उनकों रोकते हुए उस बिच्छू को दूर छोडनें के लिए अपनें हाथ में उठाने की कोशिश करतें है, जैसे ही स्वामी रामकृष्ण उस बिच्छू को अपने हाथ की हथेली पर रखतें है, वैसे ही वो बिच्छू उनकी हथेली पर अपना डंक मार देता है जिस कारण से स्वामी रामकृष्ण के हाथ से वो बिच्छू नीचे जमीन पर गिर जाता है।

स्वामी रामकृष्ण दोबारा उसे उठाने की कोशिश करतें है और बिच्छू फिर से उन्हें डंक मार देता है जिस कारण उनकें हाथ से बिच्छू जमीन पर फिर गिर जाता है। ऐसा कई बार हुआ, जैसे ही स्वामी रामकृष्ण उस बिच्छु को उठाते वैसे ही वो बिच्छु स्वामी रामकृष्ण को डंक मार देता। जब बार - बार ऐसा हुआ तो उनकें एक शिष्य ने स्वामी रामकृष्ण से पूंछा, जब यह बिच्छू आपकों बार - बार डंक मार रहा है तो क्यों आप इतनी पीड़ा के बाद भी उसे उठाकर दूर छोड़ने का प्रयास कर रहें है यही क्यों नहीं पड़े रहनें देते ?

स्वामी रामकृष्ण मुस्कुराते हुए कहतें है, यदि मैं इस बिच्छू को यही छोड़ दूंगा तो हो सकता है यह किसी शिष्य के पैर के नीचे आकर मर जाए या यह भी हो सकता है कि, यह किसी शिष्य को काट लें इसलिए मैं इसे यहाँ से दूर छोड़ने का प्रयास कर रहा हूँ और रही बात इसके डंक मारनें के कारण होने वाली पीड़ा की तो जब यह नन्हा सा जीव अपनें स्वभाव के अनुरूप काम कर रहा है तो मैं कैसे इस जीव के कारण अपना स्वभाव छोड़ सकता हूँ।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के जीवन की इस घटना से हमें यह सीख मिलती है कि, प्रकृति ने सभी प्राणियों के लिए अलग - अलग रूप - रंग,

योग्यताएं एवं स्वभाव को निश्चित किया है, तो क्यों हम अपनी प्रकृति के अनुरुप आचरण न कर ऐसा आचरण अपनाएं जो केवल हमारें पतन में सहायक होगा न की हमारें उदय में |

यदि आप अपनें आने वाले जीवन को सुधारना चाहतें है तो अभी भी देर नहीं हुई है, अभी से ही आप अपनें स्वभाव में परिवर्तन लानें की ठाने और जो बीत गया उसकें बारे में न सोच आज को बेहतर बनाने का प्रयास करें क्योकि यदि आपनें आज में जीना सीख लिया तो कल अपनें आप ही आज से बेहतर हो जाएगा |

दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जो अपने भविष्य को बदल सकें लेकिन यदि आप अपने भविष्य को बदलना चाहतें है तो भविष्य को बदलनें के चक्कर में न पड़ आज को बेहतर करनें की कोशिश करें | यदि आपनें अपनें आज को बेहतर कर लिया तो आपके कल को बेहतर होनें से कोई नहीं रोक सकता |

वो लोग मूर्ख होते है जो भविष्य बदलनें की बात करतें है क्योकि बिना आज को बदलें, कल को बदलनें का प्रयास बिल्कुल वैसा ही है, जैसे बिना मेहनत के सफलता पानें का ख्वाब देखना |

यदि आप फल खाना चाहतें हो तो उसकें लिए आपकों पहलें उस फल का बीज बोना होगा, फिर उस बीज को लगाने से लेकर एक अच्छे वृक्ष बनने तक जहाँ आपकों इंतजार करना होगा, वहीं उसकी देखभाल एवं उसकी सारी जरूरतों का ख्याल रखना होगा, तभी जाकर आप स्वादिष्ट पकें फल खा सकतें है |

ऐसा ही कुछ सफलता पाने के लिए आपकों करना होगा, तभी आप सफलता पा सकतें है अन्यथा आप सफलता पानें के सपनें देखना छोड़ दे और पछतावे के साथ अपना जीवन काट दें |

12

जीवन का सबसे कठिन चुनाव

कर्म या भाग्य

कर्म या भाग्य ? सुनने में बहुत ही आसान सवाल लेकिन उत्तर देना उतना ही मुश्किल | आपकें लिए क्या महत्वपूर्ण है- कर्म या भाग्य ? यदि दोनों में से आपकों किसी एक को चुनना पड़े तो आप किसे चुनेगें- कर्म को या अपनी किस्मत को ? ज्यादातर लोगों के हिसाब से यह एक आसान चुनाव है और वह अपनी किस्मत को ही चुनेगें एवं वहीं कुछ लोग जो अपनी किस्मत अपनें हाथ से लिखनें में यकीन रखतें है, वो कर्म को चुनना पसंद करेंगे |

ऐसा क्यों, एक पक्ष किस्मत पर यकीन रखता है और कुछ लोग अपने कर्म पर ? मैं यहाँ एक पक्ष न कहकर कुछ लोग इसलिए कह रहा हूँ क्योकि कर्म पर यकीन रखनें वालो की तादार किस्मत पर यकीन रखनें वालों की तादार से हमेशा कम ही रहती है इसलिए असफल लोगों की संख्या सफल लोगों से हमेशा ज्यादा रहती है |

जो लोग कर्म पर यकीन रखतें है वो लोग मेहनत कर अपनी किस्मत खुद लिखते है, वहीं किस्मत पर यकीन रखनें वाले लोग मेहनत न कर जितना उनकों मिलता है उसको ही अपनी किस्मत मानकर रख लेते है | यदि उनकों असफलता मिलती है तो वो उस असफलता को सफलता में बदलनें का प्रयास करनें की कोशिश तो करतें है लेकिन कुछ बार असफल होनें के बाद ही ऐसे लोग यह सोचकर आराम से बैठ जाते है कि यदि किस्मत में होगा तो मिलेगा और यदि किस्मत में नहीं है तो नहीं मिलेगा |

इन लोगों से मेरा एक सवाल है- कैसे आप लोगों को यह पता चलता है कि आपकी किस्मत में क्या है और क्या नहीं ?

क्या भगवान आपकों चिट्ठी भेजतें है या मेल करतें है लिस्ट बनाकर कि बेटा या बेटी आपकी किस्मत में मैनें ये...ये... तय किया है तो तुम्हें यहीं करना है अगर इनकें अलावा अपनें सपनें पूरें करनें की कोशिश करोंगे तो तुम कभी भी सफल नहीं होगे | ऐसा ही कुछ है क्या ? जिससे आपकों पता चल जाता है कि भगवान ने आपकी किस्मत में या आपके बारे में क्या सोच रखा है | नहीं तो आप इतनें यकीन से अपनी किस्मत के भरोसे कैसे बैठ सकतें है, जिस किस्मत के बारे में आपकों पता ही नहीं है कि, क्या लिखा है और क्या नहीं ?

किस्मत पर विश्वास करना अच्छी बात है लेकिन अपने कर्म को न करना बुरी बात है | हो सकता है जिस किस्मत के भरोसे आप बैठे हो उसी किस्मत में भगवान ने यह लिखा हो, यदि आप अपनें कर्मो को पूरा करेंगे तो ही आपकों सफलता मिलेंगी अन्यथा नहीं मिलेगी | फिर आप क्या करेंगे ? क्योकि आपकों अपनी किस्मत का पता नहीं और आप अपनी किस्मत के चक्कर में बैठे है, जिससे आपकों सफलता मिल जाए, तो ऐसे में ना ही आपकों सफलता मिलेगी और ना ही आप बिना कर्म किए आगे बड पाएगे |

यदि धोखे से आपकी किस्मत चमक गई और आपकों सफलता मिल भी गई तो इसकी क्या गारंटी है कि, दूसरी बार आपकी किस्मत चमकेगी या

आपकी किस्मत जल्द ही चमकेगी ? आपके पास कोई गारंटी नहीं होगी जिससे यह पक्का किया जा सकें कि आपकी किस्मत फिर आपकों सफलता दिलाएगी | तो क्यों आप अपनें इस कीमती समय को अपनी किस्मत के भरोसे बर्बाद कर रहें है ?

यदि भगवान यही चाहतें कि, आप कुछ न करें, अपनी किस्मत के भरोसे ही बैठे रहें तो वो आपकों काम करनें के लिए ना ही हाथ देते और ना ही पैर, ना ही कुछ सीखनें के लिए आपको दिमाग देते और सुनने के लिए कान | यदि भगवान ने आपकों शरीर दिया है तो इसका मतलब यही है कि, वो भी चाहता है की आप आगे बड़े और अपनी किस्मत खुद लिखें |

किस्मत बहुत से लोगों को जरूर रातों - रातों सफलता दिला देती है लेकिन ऐसे लोग लाखों में कुछ ही होते है और उनमें से भी बहुत ही कम लोग ऐसे होते है जो इस सफलता को संभाल पातें है क्योकि सफलता पानें से ज्यादा महत्वपूर्ण सफलता को संभालें रखना होता है | यदि आपकों सफलता मिल भी गई लेकिन आप उस सफलता को संभालने लायक नहीं है तो वो सफलता जल्द ही आपकी असफलता में बदल जाएगी | अगर ऐसी क्षणिक सफलता मिल भी गई, तो ऐसी सफलता मिलनें का मतलब भी, सफलता न मिलनें के बराबर है |

मैं भी किस्मत पर भरोसा करता हूँ लेकिन मेरा मानना है कि, किस्मत हमें सही रास्ता दिखाने का काम करती है लेकिन उस रास्तें पर चलकर सफलता पाना हमारे कर्मों पर निर्भर करता है |

जैसे बिना सही रास्तें के सहीं मंजिल को नहीं पाया जा सकता, वैसे ही रास्तें पर चलें बिना मंजिल को नहीं पाया जा सकता |

मेरा मतलब है कि, भलें ही किस्मत हमें बार - बार सही रास्तें के सामने लाकर खड़ा कर दे लेकिन उस रास्तें पर चलकर हमें ही मंजिल को पाना होगा | अगर हम रास्तें पर चल नहीं सकतें तो बिना चले हम मंजिल पा भी नहीं सकतें |

हमारे कर्म ही हमारी सफलता एवं असफलता को सुनिश्चित करतें है | यदि अपनी सफलता के लिए पर्याप्त मेहनत की जाए तो आपकी किस्मत चाहें जो भी हो आपके कर्म आपकी किस्मत को बदलनें पर मजबूर कर देंगे |

श्रीमद्भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं- *कर्म करनें, फल की इच्छा न करनें* का उपदेश दिया है | फिर भी यदि आप किस्मत के भरोसे बिना कुछ किए फल की आशा करतें है तो ये जान लीजिए- हमेशा इंतजार करनें वालों को उतना ही मिलता है, जितना कि मेहनत करने वाले छोड़ देते है |

यदि आपकों बचे - खुचे में गुजारा करना है तो आराम से करिए लेकिन यदि आप अपना मुकाम खुद हासिल करना चाहतें है तो अपनी कमर कस मैदान में बाजी मारनें के लिए छलांग लगाईये | फिर देखिए जो मजा अपने सपनों के लिए मेहनत करनें में आता है, वो मजा इंतजार में कहा |

कर्मयोगी भाग्य का निर्माण स्वयं करते है |
कर्महीन ही भाग्य को कोसते हैं | - अज्ञात

भाग्य क्या है ? जरा सोचिए |

मुझे लगता है, कर्म ही भाग्य है | जब आप निस्वार्थ रूप से अपना कर्म करतें है तो उसी कर्म के फल को लोग भाग्य का नाम दे देते है |

बिना कर्म किए आप सफलता नहीं पा सकतें और यदि सफलता पानें के लिए कर्म किया जाए तो भी आप सफलता पा सकेंगे या नहीं, यह कहा नहीं जा सकता | मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ ? मैं इसलिए ऐसा कह रहा हूँ, यदि आप वो

काम करतें है जो आपको करना पसंद हो या आप जिस काम को करना चाहतें है, तो उस काम को आप बड़े प्यार से एवं मन लगाकर करतें है | जब तक वो काम अच्छे से पूरा न हो जाए, तब तक आप उस काम को करनें से ना ही थकते है और ना ही रुकते है | ऐसे ही काम का फल आपकों सफलता के रूप में मिलता है लेकिन यदि आपकों कुछ बार सफलता न भी मिलें तो भी आप ना ही मायूस होगें और ना ही कोशिश करना छोड़ेगे और वो इसलिए क्योकि आप वो काम कर रहें है जो आप करना चाहतें थे | आपकी यही लग्न, सफलता को आप तक आनें के लिए मजबूर कर देती है |

जो काम हम दिल से करतें है उस काम को पूरा करनें में हम जी - जान लगा देते है लेकिन जो काम हम सफलता पानें के लिए करतें है, उस काम में यदि हमें सफलता न मिलें तो जो सफलता पानें का जोश होता है, वो मायूसी एवं तनाव में बदल जाता है एवं यहीं मायूसी हमें जहां असफलता दिलाती है, वहीं हमें पछतावे एवं गिलानी के दलदल में फसा देती है, जिसका ही परिणाम होता है- चिंता एवं तनाव |

मैं यहाँ सफल होनें के सपनें देखनें एवं अपने लक्ष्यों को बनाने के लिए मना नहीं कर रहा | मैं तो आपकों यह समझानें की कोशिश कर रहा हूँ कि, हमारें हाथ में सिर्फ अपनें लक्ष्य को पाने के लिए मेहनत करना होता है लेकिन उस मेहनत का फल क्या होगा, यह हम निर्धारित नहीं कर सकतें | यदि आपकों अपनें लक्ष्य को पाने में असफलता मिली है तो इसका यही मतलब है कि, आपकी मेहनत में कुछ न कुछ कमी रह गई थी, जिसे आपकों जल्दी से जल्दी दूर करने की कोशिश करना चाहिए, तभी आप अपने लक्ष्य को पा कर अपनी असफलता को सफलता में बदल सकतें है |

एक चीज आपकों हमेशा याद रखना चाहिए और वो है-

जितना बड़ा लक्ष्य, उतनी ज्यादा मेहनत, जितनी ज्यादा मेहनत, उतनी बड़ी सफलता एवं जितनी

बड़ी सफलता, उतनी ज्यादा असफलताए, जितनी ज्यादा असफलताए, उतनें ही बड़े काम और उतना ही बड़ा नाम |

ये आसान सा नियम है, यदि आपनें इस नियम को माना तो मुझे नहीं लगता कि, आप कभी भी अपनी असफलता को लेकर डरोगे और न ही आप तनाव के माया जाल में फसोगें |

आजकल बड़ी ही आम बात हो गई है कि, लोग छोटी - छोटी बातों एवं असफलताओं के कारण मायूसी में आ जातें है और यही उनकी मायूसी धीरे - धीरे हारने के डर एवं तनाव में बदल जाती है और लोग इस तनाव से न ही बाहर आनें की कोशिश करतें है और न ही अपनी असफलता को सफलता में बदलनें की | ऐसे लोग उन लोगों के बारे में सोचकर चिंतित होते है जिन्हें क्या पता सफलता - असफलता के बारे में क्योकि उन्होंने तो कभी कोशिश भी नहीं की होती अपनें आपको सफल बनाने की | ऐसे लोगों से आप लाख गुना बेहतर हो, कम से कम आपनें कुछ करनें की शुरूआत तो की, भलें ही कई बार हम सफल नहीं हो पाते लेकिन इसका यह मतलब नहीं होता कि, हम कभी सफल ही नहीं हो पाएगें | यदि आप अपनी असफलता से सीख लेतें हुए, अपनी गलतियों को ठीक करतें हुए फिर से शुरूआत करेंगे तो आपकी असफलता, आपकी सफलता में बदल जाएंगी | असफलता तब तक ही असफलता बनी रहती है जब तक आप दोबारा शुरूआत नहीं करतें क्योकि जैसे ही आप दोबारा शुरूआत कर आगे बडेगे, वैसे ही आपकें पास मौका होगा अपनी असफलता को सफलता में बदलनें का |

लोग क्या मानतें है आपके बारे में, आपके सपनों के बारे में, इसका तब तक महत्व नहीं होता जब तक आपकों अपनें आप पर एवं अपने सपनो पर विश्वास होता है | लोग आपके बारे में क्या कहतें है या क्या सोचतें है यह सब

सोचना आपका काम नहीं है | यदि आप उनका काम करनें लगेगे तो कभी आपनें सोचा है फिर वो लोग क्या करेंगे ? क्यों यह सोच - सोचकर अपना समय ख़राब किया जाए कि, लोग क्या सोचतें है आपके बारे में क्योकि जो फालतू होगा वो आपका यह काम कर लेंगा और काम करनें के बाद बकायदा आपकों बतानें भी आ जाएगा |

आप लोगों की न राय बदल सकतें है और न ही सोच तो उससे अच्छा है अपना काम किया जाए क्योकि जैसे ही आप सफल होगे, वैसे ही वो लोग जो आपकों अभी तानें मार रहें थे, वो ही अब अपनें बच्चों को आपका उदाहारण देके और जिंदगी में आपकें जैसा बनने के लिए प्रोत्साहित करेंगे |

अगर आप लोगों के तानें या लोग आपकें बारे में क्या कहेंगे इस डर से अपनें सपनों को पूरा किए बिना बीच में ही छोड़ते है, तो मेरी नजरों में आप मूर्ख से ज्यादा कुछ नहीं हो क्योकि यदि आप लोगों के कहनें के कारण पीछे हटें है तो इसका मतलब है कि, आप खुद पर विश्वास न कर उन लोगों पर विश्वास कर रहें है, जिन्हें खुद पर अगर विश्वास होता तो वो आज इस आर्थिक तंगी एवं अभावों में अपना जीवन नहीं काट रहें होते | जब आप लोग क्या कहेंगे के डर के कारण अपनें सपनों की कुर्बानी देते हो तो उसका मतलब होता है कि, कहीं न कहीं आप भी यही सोचतें है अपनें बारें में जो लोग सोचतें है, आपके बारें में |

लोगों का तो समझ भी आता है लेकिन आप तो अपनें को सबसे बेहतर जानते है फिर कैसे अपनें सपनें के लिए कर्म न करकें वहीं राह चुनते है जिसकों चुनकर ज्यादातर लोग पछतावे की जिंदगी जी रहें है |

आपकें पास दो ही रास्तें है या तो आप किस्मत के भरोसें बैठकर किस्मत चमकनें का इंतजार करें या तो फिर अपनें कर्मो पर भरोसा कर अपनी किस्मत को खुद लिखें | फैसला आपको ही लेना है | चाहें आप कर्म पर विश्वास करें या किस्मत पर लेकिन मकसद एक ही होना चाहिए अपने कर्मो की दम पर अपनी किस्मत को भी बदलनें पर मजबूर कर देना |

चाहें जितना जोर लगा लें सफलता के राह में आने वाली कठिनाइयाँ उनकों उखाड़ फेक उनकी औकात बता देंगे | जिस सफलता को हमसे छीनने आई है ये कठिनाइयाँ, उस सफलता को उनसें छीन के उड़ा ले जाएंगे |

अध्याय - 13

अमीरों का सबसे बड़ा राज

यह हम सब जानतें है कि अमीर लोग अपने पैसो का निवेश करकें ही और अधिक पैसा बनाते है लेकिन यह बहुत कम लोग ही जानतें होगे कि, *अमीरों की आमदानी का सबसे बड़ा स्त्रोत क्या है ? ऐसा क्यों है जिससे वो औरों से आगे है ? ऐसा क्या है, जिसमें अमीर लोग निवेश करना सबसे अधिक पसंद करतें है ?* आप आगे ऐसे ही महत्वपूर्ण निवेश के बारे में जानेगें जिसकें कारण ही बड़ी से बड़ी एवं छोटी से छोटी कंपनियां एवं बिजनेसमैन पैसा कमाते है | यदि यह निवेश न किया जाए तो मुझे नहीं लगता, अमीर लोग इतना अमीर होते |

निवेश कई तरह के होते है, इसे केवल पैसों से जोडकर देखना निवेश के साथ नाइंसाफी है | यदि अमीरों पर ध्यान दिया जाए तो हमें एक और निवेश के बारें में पता चलता है, जिसका महत्व अमीर लोग बखूबी समझतें है लेकिन हम लोग नहीं | यह निवेश है- *लोगों में निवेश* |

पैसों का निवेश हमें जहाँ और पैसा दिलाता है, वहीं लोगों में किया गया निवेश हमें ऐसे लोगों के साथ काम करनें का मौका देता है जो बेहतर तरीकें से दिए गए काम को करनें में सक्षम होते एवं अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग कर हमें और अच्छे परिणाम लाकर देने के लिए लगातार प्रयत्नशील रहते है |

लोगों में उनकी योग्यताओं को निखारने के लिए किया गया निवेश हमारें लिए हमेशा लाभदायी होता है क्योकि एक योग्य व्यक्ति उन कई अयोग्य व्यक्तियों से अच्छा होता है जो अपनें काम को सहीं तरीकें से नहीं कर सकतें | आप भी यह नहीं चाहेगे कि आपका कोई प्रोजेक्ट या कोई प्रोडक्ट किसी लापरवाही का शिकार हो या समय पर पूरा न हो पाए | किसी काम को बेहतर तरीकें से करनें के लिए हमें कुशल लोगों की आवश्यकता होती है क्योकि बिना कुशल लोगों के हम काम में वह गुणवत्ता नहीं पा सकतें जो उस काम में या प्रोडक्ट में होनी चाहिए थी, जिसका परिणाम हमें अपने प्रोडक्ट की साख में कमी के रूप में मिलता है, जो जहाँ हमारी साख को नुकसान पहुचाता है वहीं हमारें लाभ को भी कम करता है |

लोगों में किया गया निवेश मेरे ख्याल से सबसे अच्छा निवेश होता है क्योकि वो वर्कर्स ही होते है जो किसी कंपनी को आगें बढानें में मदद करतें है अन्यथा बिना वर्कर्स की कंपनी सिर्फ दीवारों से बनी एक इमारत के अलावा कुछ नहीं है | यदि आपके लिए काम करनें वाले योग्य है तो आपकी कंपनी बड़ी तेजी से आगे बड़ेगी और यदि आपकें लिए काम करनें वाले आलसी है तो इसकी भरपाई आपकों अपनें लाभ में होनें वाले नुकसान के रूप में करनी पड़ेगी |

जैसे, किसी वाहन को भलें ही उसका ड्राइवर चलाता है लेकिन उसकें हर पुर्जे का महत्व होता है, यदि कोई एक पुर्जा भी ख़राब हो जाए तो वो वाहन की गति को धीमा कर देता है और हमें या तो उस पुर्जे को ठीक करना होता है या तो उस ख़राब पुर्जे को निकालकर उसकी जगह नया पुर्जा लगाना पड़ता है | ऐसा ही कुछ हमारी कंपनी या बिजनेस के साथ है, भलें ही हम उसकें ड्राइवर क्यों न हो लेकिन यदि हमारें वर्क्स अच्छे से काम नहीं कर रहें है तो उनको या तो ठीक करना होगा या तो उसे ख़राब पुर्जे की तरह निकालकर उसकी जगह किसी योग्य व्यक्ति को लगाना होगा |

यदि हमारें पास योग्य वर्कर्स है तो हमारें पास वो बहुमूल्य संपदा है जो हर हाल में अपनी योग्यता की दम पर हमारें लिए आने वाली कठिनाइयों को दूर कर आगे बढ़ने के लिए जी - जान से मेहनत करतें रहेंगे और उनकी एवं हमारी मेहनत का ही परिणाम होगा एक सफल बिजनेस |

कुछ लोगों के मन में यह विचार आ रहा होगा कि, उन बिजनेसमैनों की किस्मत बहुत ही अच्छी होती होगी जिन्हें काम करनें के लिए काबिल लोग मिल जाते है | मेरा मानना है कि, वो लोग ज्यादा खुशकिस्मत होते है जिन्हें ऐसे लोग मिलतें है जो उनकें अंदर छुपी प्रतिभा को न सिर्फ देखतें है बल्कि उसकों बाहर आनें का मौका देकर निखारने का काम करतें है |

किसी भी व्यवसाय में इस बात की कोई गारंटी नहीं होती की आपके यहाँ सिर्फ योग्य लोग ही काम करनें के लिए आएगे या सिर्फ योग्य लोग ही आपके यहाँ काम करतें होगे | वो निर्भर आप पर करता है कि, कैसे आप उनकें अंदर छुपी प्रतिभा को देखकर उनकों उनकी प्रतिभा के बारे में अवगत कराए एवं उस प्रतिभा को और निखारने में उनकी मदद करें क्योकि अधिकतर लोगों को अपनी प्रतिभा का पता ही नहीं होता | यदि कुछ को पता भी हो, तब भी बहुत कम लोग ही ऐसे होते है जो अपनी प्रतिभा को निखारने का काम करतें है, ऐसे लोगों को आपकों ही इस काबिल बनाना पड़ता है कि वो आपके लिए जरुरी संसाधन बन सकें | यदि आप अपनें मानव संसाधन को काबिल बनाने के लिए निवेश करतें है तो वो निवेश आपका एक बहुत ही बड़ा फायदे का सौदा साबित होगा और एक ऐसा सौदा जिसमें नुकसान होनें की संभावना आपकें लिए बिल्कुल भी ना के बराबर हो |

एक अकुशल व्यक्ति चाहें एक वर्ष काम करें फिर भी आपकों वो परिणाम नहीं दे सकता जो परिणाम एक कुशल व्यक्ति कुछ ही महीनों में दे सकता है | यदि आप अपनें मानव संसाधन की कुशलता बढानें में निवेश न कर पैसा बचाने की कोशिश करतें है तो न ही आप वो पैसा बचा सकतें है और न ही

अपना समय क्योकि अकुशल लोग आपकें काम को वैसा ही करेगें जैसा आप बिल्कुल भी नहीं चाहतें जिसका परिणाम होगा पैसे की बर्बादी |

आप चाहें किसी भी सफल कंपनी को देख सकतें है भलें ही वहां कुछ खास समानताएं न हो फिर भी आपकों एक चीज में जरुर समानता मिलेंगी और वो होगी अपनें कर्मचारियों को और बेहतर करनें में किया जाने वाला निवेश | ज्यादातर सफल लोग इस बात को अच्छे से जानतें है कि सैकड़ो अकुशल कर्मचारियों से कुछ ही कुशल कमर्चारी ज्यादा अच्छे होते है इसलिए वो कुशल कर्मचारियों को खोजनें में मेहनत न कर उनकों अपनें लिए तैयार करनें में मेहनत करना पसंद करतें है क्योकि करोड़ो की भीड़ में अपनें लिए योग्य कर्मचारी खोजनें में समय बर्बाद करनें से अच्छा है उतना समय अयोग्य कर्मचारियों पर खर्च कर उनकों वो कौशल सिखाया जाए जिसकी हमें जरूरत है |

भलें ही हमें कुछ समय खर्च करकें योग्य कर्मचारी मिल भी गए तो भी इसकी कोई गारंटी नहीं दी जा सकती कि वो कर्मचारी बिना सिखाएं उस कौशल को जानतें होगे जिसकी हमें जरूरत है | यदि हमें उन्हें भी सिखाना ही पड़ेगा तो उससे अच्छा है हम योग्य लोगों को खोजनें में समय जाया न कर ऐसे लोगों को खोजनें में समय लगाए जो नए - नए कौशल को सीखनें के इच्छुक हो एवं साथ ही अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए परिश्रम करनें को भी तैयार हो |

जैसे युद्ध के मैदान में हजार अकुशल सैनको के साथ युद्ध नहीं जीता जा सकता, वैसे ही सफलता के मैदान में अकुशल लोगों के साथ सफलता नहीं पाई जा सकतीं |

यदि आपकों युद्ध लड़ने के लिए सैनिकों का चुनाव करनें को कहा जाए तो आप किन सैनिकों को चुनेगे- हजार अकुशल सैनिकों को या पचास अपनें क्षेत्र में दक्ष सैनिको को ? जल्दी सोचिए आप क्या चुनेंगे, हजार सैनिक या पचास सैनिक ?

आपका तो पता नहीं लेकिन मैं जरुर पचास दक्ष सैनिकों को ही चुनूगा क्योकि मुझे यह तो नहीं पता कि मैं युद्ध जीतूंगा या हारूँगा लेकिन यह जरुर पता है कि, यदि बिना तैयारी के युद्ध में गया तो पक्का हारूँगा इसलिए शेर का शिकार करनें के लिए हजार गधों की फ़ौज से अच्छा है, मैं कुछ हाथी, कुछ बाघ, कुछ सियार, कुछ गैंडे, आदि का चुनाव कर शेर को हार मानने पर मजबूर कर दूं या भागनें पर मजबूर कर दूं |

ऐसा ही कुछ आपके कर्मचारियों एवं आपकी टीम के साथ है या तो आप उस में गधे भर सकतें है जिन्हें केवल एक ही काम दिया जा सकता हो या फिर अलग - अलग प्रतिभा के लोगो को ले सकतें है जिन्हें योग्यता अनुसार कभी भी, कही भी मैदान पर उतारा जा सकें |

जैसे- अच्छे हीरे की परख सिर्फ अच्छे जोहरी को होती है, वैसे ही आपकें लिए कौन सा हीरा अच्छा है और किस हीरे को निखारने की जरूरत है यह पता होना चाहिए तभी आप मिट्टी में से अपनें लिए वो हीरे निकाल सकेंगे जो हीरे सिर्फ आपके पास होने चाहिए और किसी के पास नहीं | यदि हीरे को अच्छे से तराशा न जाए तो वो चमक नहीं देता, वैसे ही आपकों यदि अपनी टीम को चमकाना है तो उनकी प्रतिभाओं को वैसे ही धैर्य के साथ तराशना होगा जैसे, एक पत्थर को तराश कर उसकों बहुमूल्य हीरा बनाया जाता है | जैसे- सभी पत्थर हीरा नहीं होते, वैसे ही आपकों यह सुनिश्चित करना होगा कि, कौन आपकें लिए हीरा है और कौन सिर्फ पत्थर का टुकड़ा | नहीं तो आपकी पत्थरों को तराशते - तराशते जिंदगी निकल जाएगी लेकिन वो पत्थर कभी भी वैसी चमक नहीं देगा जो चमक एक हीरा देता है |

इंसान की प्रतिभा भी एक बहुमूल्य पत्थर की ही तरह होती है | जैसे- बहुमूल्य पत्थर मिट्टी में कही दबा रहता है और तब तक उसकों वो महत्व नहीं मिलता जब तक उसकों मिट्टी से खोजकर बाहर न निकाला जाएं, वैसे ही हमारी प्रतिभा होती है जो कहीं हमारें अंदर दबी हुई पड़ी रहती है इस इंतजार में कि कब

हम उसकों खोजकर बाहर निकालेगे एवं कब हम उसे तराशकर एक बहुमूल्य पत्थर की भांति चमकाकर लोगों को सोचनें पर मजबूर कर देंगे- कास मेरे पास भी ऐसी प्रतिभा होती जो इसके पास है |

दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जिसमें कोई प्रतिभा ना हो, बस लाख कमियों के बावजूद भी हमें सिर्फ उस प्रतिभा को धैर्य के साथ खोजकर निखारने की जरूरत होती है जो हमारें लिए एवं स्वयं उस व्यक्ति के लिए लाभदायक हो | कमियां और प्रतिभाएं हर इंसान में होती है लेकिन यदि हमें आगे बढना है तो हमें कमियों पर ध्यान न देकर लोगों में निवेश करनें पर ध्यान देना होगा तभी हम उन्हें वो कौशल सिखा सकतें है जो कुशलतापूर्वक काम करनें के लिए आवश्यक है |

आप अकेले शुरुआत तो कर सकतें है लेकिन जैसे - जैसे आपका व्यवसाय बढता जाएगा, वैसे - वैसे आपकों कर्मचारियों की जरूरत पड़ेगी और यही वो पड़ाव होगा जहाँ आपकों यह सीखना अतिआवश्यक हो जाएगा कि लोगों से उनकी पूर्ण योग्यता के साथ काम कैसे लिया जाए ? अगर उनमें वो कौशल नहीं है तो उन्हें उस कौशल में दक्ष कैसे किया जाए ? इसलिए लोगों से काम लेना एवं लोगों में निवेश कैसे किया जाए, यह आपकों सीखना ही होगा अन्यथा आप एक हद तक आगे बढ़ सकतें है लेकिन उसके बाद नहीं |

आपको आज से ही आने वाले इस पड़ाव की तैयारी चालू करनी होगी | यदि आपको अपने पर विश्वास है कि, मैं हर हाल में जल्द ही इस पड़ाव तक पहुचूगा, तो ही आप तैयारी चालू करें | अन्यथा कोई जरूरत नहीं है, क्योकि अगर आपकों अपनें सफल होने पर थोडा भी शक है तो आप कभी भी सफलता नहीं पा सकतें |

सफलता पाना तब बिल्कुल आसान हो जाता है, जब आप उसको पाने लायक बन जाए | जब

तक आप उसकें लायक नहीं बनेंगे, तब तक आप सफलता का स्वाद भी नहीं चख पाएगें |

14

6 आदतें

कुछ ऐसी आदतें है जो सभी में होती है लेकिन उनकें प्रति हमारा नजरियाँ जहाँ हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है, वहीं हमें समस्याओं के भवर में उलझा भी सकता है | यहाँ सब आपके नजरियें एवं सोच का ही खेल है जो यह सुनिश्चित करेगा कि, आप जीतेंगे या हारेंगे | इस खेल में हमें अंत तक समझ नहीं आता कि हम जीत रहें है या हार रहें है क्योकि कभी - कभी जीतने वाला भी अपना सब कुछ गवाकर हार जाता है और उसे तनिक भी इस बात का आभास नहीं होता कि, वो जीता नहीं हकीकत में तो हारा है |

आपकी सफलता की राह के 6 सबसे बड़े रोडे -

1. साथ,

2. गलतियाँ,

3. डर,

4. गुस्सा,

5. जोखिम,

6. चिंता,

यदि इन आदतों का सहीं उपयोग नहीं कर पाए तो यह आदतें आपको ऐसे भवर में उलझा के रखेगी जिसका अंत करके बाहर निकलपाना सबके लिए आसान नहीं होता | इन आदतों को अपने काबू में करना जहाँ बहुत कठिन है, वहीं इनकें काबू में हो जाना बहुत आसान |

हम एक - एक करकें इन आदतों का अपने जीवन में प्रभाव जानने की कोशिश करेंगे जिससे आप समझ सकें कि कैसे ये छोटी - छोटी भावनाएं एवं आदतें आपके जीवन के हर फैसलें को प्रभावित करतीं है और धीरे - धीरे आपकी सोच एवं नजरियें को बदलनें का काम करती है | जिससे आप वो ही गलतियाँ बार - बार दोहराते है जिन गलितियों के कारण कई बार आप पहले नुकसान उठा चुके है | इन आदतों को हम दोस्त भी कह सकतें है एवं दुश्मन भी क्योकि इनका प्रभाव आपके ऊपर कैसा होगा- सकारात्मक या नकारात्मक | यह सब आपके ऊपर निर्भर करता है |

साथ

लोगों की भीड़ से घिरा रहना एवं लोगों के साथ रहना हम सभी को अच्छा लगता है | हममें से कोई भी अकेला रहना पसंद नहीं करता और यह कोई बुरी बात नहीं है लेकिन लोगों के साथ रहनें की आदत लग जाना एवं अकेले ना रह पाना एक बुरी बात है क्योकि भीड़ में रहनें की आदत लग जाने के कारण हमें हमेशा अकेले रह जाने का डर लगा रहता है जो हमें अपने दोस्तों एवं रिश्तेदारों को खुश करनें के लिए प्रेरित करता है जिससे वो लोग हमें छोड़कर न जाए |

एक बड़ा परिवार या सभी से अच्छे रिश्ते होना बहुत अच्छी बात है लेकिन उनको खुश करनें के चक्कर में अपनी ख़ुशी को, अपनें समय को दूसरों पर निछावर कर देना एक गलत बात है | जो लोग हर किसी को खुश करनें की कोशिश करतें है वो लोग अपने लिए, अपने सपनों एवं अपनी ख़ुशी के कामों

के लिए बिल्कुल भी समय नहीं दे पाते जिसका नतीजा होता है, खोने का डर एवं निराशा |

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि, आप आज से अकेला रहना चालू कर दे | मेरा कहने का मतलब है कि, कम से कम थोडा समय आप अपने लिए बचाए | जिसमें आप वो काम करे जो आपकों करना सबसे ज्यादा पसंद हो | जिस समय में आप औरो के साथ न होकर खुद के साथ हो, खुद के बारे में, खुद के सपनों के बारे में सोच सकें | अपनी प्यारी - प्यारी यादों को याद कर सकें |

कुछ ऐसे पल जो सिर्फ आपके हो, क्योकि यही पल वो पल होते है जो आपकों हर मुसीबत को दूर कर अपने सपनों को पाने एवं अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करनें के लिए प्रोत्साहित करतें है | जो आपको अकेलेपन में भी मुस्कुराने की वजह देते है | भलें ही दुनिया आपका साथ क्यों न छोड़ दे लेकिन अच्छी यादें आपका साथ कभी नहीं छोडती इसलिए थोडा ही सही अकेला रहना भी जरुरी है और अपने लिए ऐसे पल बनाना भी जरुरी है जो आपकी यादे बन सकें क्योकि बिना अच्छे पलों के, आप याद क्या करोंगे ?

कई बार सफलता की राह में ऐसे - ऐसे गड्ढे आते है जो आपकी इच्छाशक्ति, सोच एवं नजरियें को बदलकर रख देंते है और आपकों हार मारनें पर मजबूर करतें है, जिस कारण अधिकतर लोग निराश होकर लौट आते है | उस निराशा को दूरकर आगे बड़ने के लिए कई बार हमें पीछे मुडकर देखना पड़ता है और पीछे मुडकर देखनें पर हमें अपने वो हसीन पल दिखतें है, जो हमनें लाख मुसीबतों के बाद अपनी जिंदगी से चुराएं थे | जो हमें आगे बड़ने को प्रोत्साहित करते है और यह यकीन दिलाते है कि, लाख कठिनाईयों के बाद मैंने यह सब पाया है तो अब कैसे इतनी सी कठिनाई से हार मानकर बैठ जाऊँगा और आपका यही यकीन सफलता की राह में आने वाले तमाम गड्डों को पार करनें का हौसला देता है |

जिंदगी में कठिनाई आने पर सबसे पहले आपके साथी आपका साथ छोडकर भाग जाते है और ये वहीं लोग होते है, जिन पर आपने अपनी सारी खुशियों को लुटाया है लेकिन जब इनकी बारी आती है तो ये मुंह मोडकर ऐसे अंजान बनते है, जैसे ये आपको जानते ही नहीं |

आपको यह हमेशा सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि, आपकी संगति कैसी है क्योकि अच्छे लोगों का साथ जहाँ हमें और अच्छा बनने के लिए प्रेरित करता है, वहीं बुरे एवं मौका परस्त लोगों का साथ हमें बर्बादी की ओर ले जाता है इसलिए मौका परस्त एवं बुरे लोगों के साथ से अच्छा है, अकेले रहना |

साथ सब चाहतें है लेकिन आपके लिए कौन सही है और कौन गलत यह आपको सुनिश्चित करनें के बाद ही किसी के साथ दोस्ती करनी चाहिए और वो भी इतनी जितनी आवश्यक हो क्योकि अति हर चीज की बुरी ही होती है | ऐसा ही कुछ लोगों के साथ घनिष्ठता रखनें के बारे में भी कहा जा सकता है क्योकि जीवन मैं आप काफी लोगों से मिले होगे और काफी लोगों से मिलेंगे लेकिन किसके साथ कितनी दोस्ती रखनी है और किसकी कितनी जरूरत है, वो आपकों सोचना होगा |

गलतियाँ

जीवन में गलतियाँ कुछ नया करनें की निशानी होती है लेकिन हर गलती जरुरी नहीं कि कुछ नया करनें की निशानी हो |

गलतियाँ सब करतें है और आपनें भी कई बार गलतियाँ की होगी | कुछ गलतियाँ जानबूझकर की जाती है, तो कुछ गलतियाँ अनजाने में हो जाती है, तो कुछ गलतियाँ बिना सोचे - समझे हम कर बैठते है क्योकि गलतियाँ करना इंसान का स्वभाव है लेकिन की गई गलतियों को ठीक करना भी हमारा स्वभाव होना चाहिए |

यदि आपसे कोई गलती हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं लेकिन उस गलती को यदि सुधारा ना जाए तो इससे बड़ी कोई गलती नहीं होती |

गलती करना किसी को भी पसंद नहीं होता और अगर उस गलती के कारण आपका नुकसान हो जाए या आपको डांट सुन्नी पड़े तो बहुत बुरा लगता है लेकिन जरा सोचिए, यदि किसी गलती को वक्त रहतें ना सुधारा जाए तो क्या होगा ?

अगर आप अपनें टेस्ट की तैयारी को अच्छे से वक्त रहतें नहीं करेंगे तो आपकी यह गलती टेस्ट के कम नंबरों के रूप में आपके सामनें आएगी जिसका परिणाम होगा टेस्ट में औरो से पीछे रह जाना | भलें ही आपनें पर्याप्त समय दिया पढाई के लिए लेकिन थोडा और अच्छे से पढाई न करनें की गलती जहाँ आपका एग्जाम में औरों से पीछे रह जानें का कारण बनती है, वहीं अब आपकों दोबारा से शुरुआत करनी होगी | अगर आप वक्त रहतें इस गलती को सुधार लेते तो आपको दोबारा से शुरुआत नहीं करनी पड़ती | यदि अब भी इस गलती को आप बार - बार दोहराएगे तो उसका परिणाम भी आपको बार - बार असफलता के रूप में ही मिलेगा |

अधिकतर लोग अपनी जिंदगी में बार - बार गलतियों को दोहराते रहतें है और आशा करतें है कि उनको मिलनें वाला परिणाम बदलकर आएगा लेकिन मेरा सवाल है ऐसे लोगो से, जब आप बार - बार गेहूं बो रहे हो तो कैसे आपको चने की फसल प्राप्त होगी ? अगर आपको चने की फसल चाहिए तो आपकों अपने खेत में पहले चने को बोना होगा फिर उसकी देखभाल करनी होगी एवं समय - समय पर पानी, खाद देना होगा तभी जाकर आप एक अच्छी चने की पैदावार पा सकतें है | ऐसा ही कुछ किसी किए गए काम के परिणाम के बारे में कहाँ जा सकता है | जब आप अपने काम, पढाई, आदि में बार - बार उन्हीं गलतियों को दोहराएंगे जिनका परिणाम आपकों असफलता की ओर ले जाता

है तो बिना उन गलतियों एवं कमियों को दूर किए कैसे आप दूसरें परिणाम की आशा कर सकतें है ?

अधिकतर लोग अपनें जीवन में उन्हीं गलतियों को बार - बार करतें है जो गलतियाँ उनकी सफलता की राह में रुकावट बनी हुई है और फिर परिणाम आने के बाद बैठकर किस्मत को कोसतें है कि "हे भगवान ऐसी ख़राब किस्मत काय बनाई हमाई या किस्मत ही ख़राब है हमाई या किस्मत में जब लिखा ही नहीं था तो कैसे मिलती सफलता या जो किस्मत में होगा मिल जाएगा |" और यहाँ किस्मत एवं भगवान बैठकर सोच रहें होते है कि, गलती तुमनें की तो इसमें हम क्या करते ? क्या पेपर में गलती सुधारनें हम आते ? तुम तैयारी करकें इन्टरव्यू देने नहीं गए तो इसमें हम क्या करें ?

मेरा कहनें का मतलब है कि, गलती करना बुरी बात नहीं है | आप कम से कम उन लोगों से लाख गुना अच्छे हो जो कुछ नहीं करतें क्योकि गलतियाँ करना कुछ नया सीखनें या करनें की निशानी होती है | जो लोग कहतें है, मैंने कोई गलती नहीं की इसका सीधा - सीधा मतलब है उन्होनें कुछ नया करनें की कभी भी कोशिश नहीं की इसलिए उन्होंने अब तक कोई गलती नहीं की |

गलती करों लेकिन उस गलती को सुधारतें जाओं और दूसरों की गलतियों से सीख लेने की कोशिश करों | जिससे आप उन गलतियों से बच सकें जो गलतियाँ सफलता की राह में सफल होने वाले व्यक्तियों ने की है क्योंकि भलें ही उन लोगों ने अपनी गलतियों से सीखा हो लेकिन आप उन की गलतियों से सीखकर उन गलतियों को करने से जहाँ बच सकतें है, वहीं अपने समय को अपनी गलतियों को ठीक करनें में जाया न कर कुछ नया करनें में या आगे बड़ने में खर्च कर सकतें है |

मैं यहाँ उन लोगों से सीखनें की बात कर रहा हूँ जिन्होंने अपने जीवन में बहुत कुछ पाया है या जिसका तजुर्बा आप से ज्यादा हो या जिससे आप कुछ ऐसा सीख सकतें है जो आपके लिए लाभदायक हो लेकिन हर किसी से

सीखनें मत बैठ जाना क्योकि सीखनें को बहुत ज्यादा है लेकिन हमें उस चीज को सीखनें पर ध्यान देना है जो हमारे लिए उपयोगी हो | अन्यथा आप सीखतें - सीखतें थक जाओंगे लेकिन ज्ञान ख़त्म नहीं होने वाला इसलिए अपनी ऊर्जा व्यर्थ में जाया करनें से अच्छा है उसे उस काम में लगाया जाए जो हमारे लिए उपयोगी हो |

जो गलती आपकों अपने लक्ष्य से भटका रहीं है एवं किसी दूसरें परिणाम के लिए उत्तरदायी है उस गलती को रुककर वक्त रहतें ठीक करना अक्लमंदी की निशानी होती है | नहीं तो आपकी छोटी सी गलती कभी भी एक बड़े पछतावे के रुप में सामने आ सकती है जिसका परिणाम होगा असफलता एवं जिंदगीभर का पछतावा |

जिंदगीभर पछताने से अच्छा है थोडा समय रुककर देख लिया जाए कि वो कौन सा कारण था जिसकें कारण हमें वो परिणाम नहीं मिला जो हम चाहतें थे और ऐसा क्यों हुआ ? फिर उस कारण को दूर कर, फिर से पूरे जोश के साथ अपने लक्ष्य को पाने में जुट जाना चाहिए और आपकी यहीं आदत आपकों आपकें सपनें तक पहुंचा देगी |

डर

डरने की आदत शायद ही किसी में न हो, नहीं तो दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं होगा जो किसी न किसी चीज से डरता न हो | चाहें रात का अँधेरा हो या भूतो की बातें या हारने का डर या किसी अपने को खोने का डर या लोग क्या कहेंगे इसका डर या परीक्षा में फेल होने का डर या नौकरी न मिलने का डर या असफल होने का डर या कॉकरोच का डर, आदि | अनगिनित प्रकार के डर लोगों में पाए जाते है और जिनको अपने आप से दूर करना थोडा मुश्किल होता है |

हम यहाँ उस सबसे बड़े डर की बात करेंगे जो ज्यादातर लोगों को अपने लक्ष्य से भटकाकर असफलता के गर्त में गिराने का काम करता है | जिस डर

का शिकार आपकों अपने आस - पास बड़ी आसानी से दिख जाएगा और हो सकता है, आप भी इस डर के शिकार हो | यह डर कोई और नहीं- *"लोग क्या कहेंगे का डर है"*, जो अधिकतर या कहें सभी लोगों को सताता है | हम अपने बारे में सोचने से ज्यादा समय इस बात को सोचने में खर्च करते है कि, लोग हमारे बारे में क्या कहेंगे | यदि हमने ऐसा काम किया तो लोग क्या कहेंगे ? या मैं परीक्षा में फेल हो गया तो लोगो को क्या मुंह दिखाऊंगा ? या मैंने अच्छे कपडे नहीं पहनें तो लोग क्या सोचेगे मेरे बारे में ? या मैंने अच्छी टी.वी. नहीं ली तो रिश्तेदार एवं घर पर आने वाले मेहमान क्या सोचेगे मेरे बारे में ?, आदि |

लोग क्या कहेंगे के बारे में सोच - सोच कर हम हर काम को करनें से पहले कतराते है क्योकि अगर हमसें कोई गलती हो गई या काम का परिणाम अच्छा नहीं आया तो लोग क्या कहेंगे ? लोग क्या कहेंगे ? लोग क्या कहेंगे ? लोग क्या कहेंगे ?............................ लोग क्या कहेंगे ?

लोग क्या कहेंगे वाला यह डर कई बार हमें अपने लक्ष्य से भटका देता है और हम बिना अपने बारे में सोचे, दूसरें लोग क्या कहेंगे ? यह सोचकर भटक जाते है, फिर जिंदगीभर बैठकर पछताते है कि, काश... यदि मैंने ये कर लिया होता तो आज मेरी स्थिति कुछ और होती लेकिन अब पछतात होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत |

किसी काम को करनें से पहले उस काम के बारे में सोचना अच्छी बात है लेकिन जरूरत से ज्यादा सोचना एवं काम को करने से पहले ही उसके परिणाम को लेकर डर जाना केवल असफलता की निशानी है | सफलता पाने के लिए असफलता को दूर करना ही होगा तभी जाकर आप सफलता पा सकतें है लेकिन बिना कुछ करें पहले ही परिणाम का अंदाजा लगाकर डर जाना गलत बात है | आपकी यह आदत केवल पछतावे के अलावा कुछ नही देगी |

अगर आपको हकीकत में अमीर बनना है या सफलता पानी है तो वो करें जो आप करना चाहतें है भले ही लोग कुछ भी कहें क्योंकि जब तक आप सफल

नहीं तब तक आप जो कुछ करोगे आपको मुफ्त की सलाह एवं ताने मिलना तय है लेकिन जैसे ही आपने अपने लक्ष्य को पा लिया, वैसे ही ताने मारने वाले लोग आपसे मुंह छुपाते फिरेंगे |

लोग क्या कहेंगे ? इस डर के कारण यदि आप अपने सपनों को पाने के लिए मेहनत करना छोड़ देते है तो कहीं न कहीं आप भी आपके बारे में दूसरों की राय को सही साबित करनें का काम करतें है | आप भी वहीं सच मानते है जो लोग आपके बारे में सोचते है |

लोग आपके बारे में क्या सोचते है ? क्या बोलते है ? इसका कोई महत्व नहीं है अगर किसी चीज का महत्व है तो वो है कि, आप अपने बारे में क्या सोचते है ? क्या बोलते है ? और अपने आप पर कितना यकीन रखते है | जैसे- हाथी के आने पर गली के कुत्ते जोर - जोर से भौकना चालू कर देते है फिर भी उनके भौकने का हाथी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वैसे ही आप पर दूसरों की बातों का प्रभाव तब तक नहीं पड़ना चाहिए, जब तक आप गलत न हो | अगर आप सहीं हो और आपको यकीन है कि, आप कर सकतें हो तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको नहीं हरा सकती, सिर्फ आपके सपनों की राह में कुछ कठिनाइयाँ जरुर आएगी और वो इसलिए क्योकि आपके सपने भी यह जानने की कोशिश करतें है कि, क्या हकीकत में आप उन्हें पाने के लायक है ?

डरना अच्छा भी है और बुरा भी लेकिन हारने के डर से बिना कोशिश किए अपने रास्तें को बदल लेना या हार मानकर बैठ जाना बहुत बुरी बात है | अगर यह आदत आप में है तो अभी से ही इस आदत को आपको बदलना चाहिए क्योकि आपकी यह आदत जहाँ आपकी सफलता एवं खुशियों के बीच का सबसे बड़ा अवरोध है, वहीं न जाने अब तक आपने अपनी इस आदत के कारण कितना नुकसान उठाया होगा | यदि इसका अंदाजा लगाने बैठेगे तो आपको पता चलेगा कि, जितना नुकसान आपको असफलता मिलने के कारण नहीं होता उससे कही ज्यादा नुकसान आपकी हार मानने एवं परिणाम के बारे में सोचकर डर जाने की आदत के कारण हुआ होगा |

अधिकतर लोगों को यह डर तो सताता है कि अगर ऐसा नहीं हुआ तो हम असफल हो जाएगे लेकिन वो यह नहीं सोचते कि अगर सही तरीकें से वो कोशिश करेगें तो जो उनकी असफलता का डर है, वो सफलता की ख़ुशी के रूप में परिणाम स्वरूप उन्हें वापिस मिलेगा | जो हुआ नहीं उसके परिणाम को सोचकर डरने से लाख गुना अच्छा है कि अपनी मेहनत से उस काम का परिणाम ही बदल दिया जाए | जिससे आप अपनी मनवांछित सफलता पा सकें |

मेरे अनुसार हारने का डर भी कहीं न कहीं हमारे लिए अच्छा ही होता है क्योकि हारने के डर के कारण हम जहाँ अतिआत्मविश्वास में आकर गलतियाँ नहीं करतें, वहीं अपनी कमजोरियों एवं गलतियों को दूर कर अपनी जीत को सुनिश्चित करने की कोशिश करतें है | जरा सोचिए, अगर किसी काम में आपकी जीत सुनिश्चित है तो क्या आप उस काम को अच्छे तरीके से करने की पूरे मन से कोशिश करेगें ? मेरे ख्याल से नहीं | यदि हारने का डर ख़त्म हो जाए तो हम जीतने के लिए उतनी कोशिश नहीं करेगें जितनी उस काम को पूरा करनें के लिए आवश्यक थी |

डर जहाँ हमारा अच्छा दोस्त भी है, वहीँ एक ताकतवर शत्रु भी | बस फर्क इतना है कि इसे आप कैसे उपयोग करतें है- अपने पक्ष में या विपक्ष में |

गुस्सा

गुस्से को हम भावनाएं व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम मान सकते है | जिसका उपयोग सभी जीवित प्राणी करते है, चाहें वो पशु - पक्षी हों या फिर इंसान लेकिन भावना जाहिर करने का यह माध्यम अधिकतर हमारे लिए हानिकारक ही होता है क्योकि गुस्से में किया गया कोई भी कार्य जहाँ मन वांछित फल नहीं देता, वहीं गुस्सा हमारे विवेक एवं सोचने समझने की शक्ति को शून्य कर देता है जिससे गुस्से में लिया गया कोई भी फैसला या किया गया कोई भी कार्य केवल हमारे दुखो का कारण बनता है |

गुस्से से होने वाले नुकसान को हर कोई समझता है लेकिन फिर भी बात - बात पर भड़क उठने की अपनी आदत को लोग नियंत्रित नहीं कर पाते | यह सबको पता है कि, गुस्सा करना नुकसानदायक है फिर भी लोग छोटी - छोटी बातों पर भडक उठतें है | जिससे गुस्से के कारण वो वह कर जाते है जो उनको नहीं करना चाहिए था जिसका परिणाम सिर्फ क्लेश, मनमुटाव, दुःख, झगडा एवं पछतावा ही होता है फिर भी हम यह समझते हुए भी अपने गुस्से को नियंत्रित नहीं कर पाते |

अधिकतर लोग अपने गुस्से को अपने रौब से जोडकर देखते है और यह समझतें है कि उनके गुस्से के कारण लोग उनसे डरते है एवं उनकी इज्जत करतें है लेकिन वो यह नहीं समझ पाते कि यह इज्जत केवल तब तक है जब तक उन्हें उनसे डर लगता है या जब तक उनकी उन्हें जरूरत है या जब तक वो उनसे कमजोर है | डर के कारण मिलने वाली इज्जत को इज्जत करना नहीं कहतें क्योकि ऐसी इज्जत तब तक ही मिलती है जब तक वो आपसे डरते है और डर ख़त्म तो आप ख़त्म |

गुस्से करने की यह आदत जहाँ उसके लिए घातक होती है जिस पर गुस्सा किया गया उससे कही अधिक उसके लिए घातक होती है जो बात - बात पर गुस्सा करता है क्योकि उस इंसान का हाल कुछ - कुछ वैसा ही होता है जैसे आवारा कुत्तो का जिनका कोई नहीं होता | जो बिना वजह भौकतें रहतें है लेकिन लोग उन पर ध्यान न देकर आगे बड जाते है ऐसा ही कुछ गुस्सा करने वालों का होता है | उनके सगे संबंधी, दोस्त वगैरह, सभी उनसे दूरियां बना लेते है और यदि खैर - खबर पूछते भी है तो केवल अपने स्वार्थ के कारण |

गुस्से के समय लोगों की सोचने की ताकत बिल्कुल ख़त्म हो जाती है और वो गुस्से के बहाव में अपना भला - बुरा सोचे बिना कुछ भी कर सकतें है, भले ही इसका परिणाम कुछ भी हो | आपकी इस आदत का कोई भी अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए फायदा उठा सकता है, उसको केवल आपको भड़काना

है और फिर गुस्से के नशे में इंसान कुछ भी कर सकता है या इंसान से कुछ भी कराया जा सकता है |

कई बार गुस्सा अच्छा भी होता है क्योकि कई बार लोग गुस्से में आकर या किसी व्यक्ति के दुर्व्यवहार से गुस्सा होकर अपने को उनसे बेहतर बनाने या कुछ सीखने की ठान लेते है और उस व्यक्ति के प्रति उनका गुस्सा उन्हें जहाँ एक लक्ष्य देता है, वहीं वो ताकत देता है जिससे वो बिना थके, बिना भटके अपने लक्ष्य को पा सकें |

मेरे अनुसार गुस्सा होना या बुरा लगना कभी - कभी अच्छा होता है क्योकि जब किसी चीज का या किसी के बर्ताव के कारण हमें बुरा लगता है तो दिल में कुछ कर गुजरने एवं आगे बड़ने की आग जल उठती है और वो आग तब तक हमें चैन से नहीं बैठने देती जब तक हम अपने लक्ष्य को न पा लें | आप अपने लक्ष्य को बिना डरे, बिना हारे तभी पा सकतें है जब आपका लक्ष्य पाने का जूनून उन सभी भटकावों से बड़ा हो जो उस लक्ष्य के रास्तें में आपसे टकराएगे और ऐसा जूनून केवल आगे बड़ने की ललक से मिल सकता है या तो फिर गुस्से की ताकत को अपने लक्ष्य के लिए उपयोग करने से |

जो लोग कहतें है मुझे गुस्सा नहीं आता या गुस्सा करना बुरी बात है ऐसे लोगो ने शायद गुस्से को समझा ही नहीं है क्योकि कुछ नया करने या कुछ पाने के पीछे एक सबसे बड़ी वजह अपनी स्थिति के प्रति गुस्सा ही होता है जो हमें बार - बार आगे बड़ने को मजबूर करता है एवं हमें अपनी स्थिति को और बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है |

जो लोग कहते है, संतुष्ट रहना सीखों वो लोग अपनी स्थिति को स्वीकार्य कर चुके है इसलिए हार मानकर जितना है उतने में खुश है | मैं यह नहीं कहता कि खुश न रहो या आपके पास औरो जितना पैसा नहीं है तो उससे दुखी हो जाओं | मेरा मानना है कि, जितना है उतने में खुश रहना सीखों लेकिन संतुष्ट रहना नहीं क्योकि यदि आप संतुष्ट हो गए तो आप अपनी स्थिति को और बेहतर

करने के लिए प्रयत्न करना बंद कर देगे | यदि ऐसा सब लोग करने लगे तो दुनिया में आविष्कार, खोजे होना बंद हो जाएगी जिसका परिणाम होगा विकास का रुक जाना |

इंसान में अनगिनत क्षमताएं एवं भावनाएं होती है लेकिन उनका उपयोग कैसे करना है यह आप पर निर्भर करता है, ऐसा ही गुस्से के बारे में है | या तो आप इसे अपने पक्ष में उपयोग कर अपनी ताकत बना सकतें है या तो फिर इसके वश में होकर उसके गुलाम बन सकतें है | हमारा गुस्सा भी एक ऊर्जा का स्त्रोत है, जो जहाँ हमें ताकत देने का काम कर सकता है, वहीं हमारी कमजोरी भी बन सकता है |

बिना सोचे समझे गुस्से में लिया गया फैसला हमेशा ही पछतावे का कारण बनता है इसलिए जल्दबाजी या गुस्से में फैसला लेने से हमेशा बचे | गुस्सा एक अंगारे की तरह होता है जो जलकर जहाँ हमें उर्जा देता है, वहीं इस अंगारे को पकड़ने वाले के हाथो को जला देता है | जैसे जलता हुआ अंगारा जलकर खुद के खात्में का कारण बनता है, वैसे ही गुस्सा उस इंसान को अंदर ही अंदर जला देता है जो इसको धारण करता है | जैसे जलते हुए अंगारे के संपर्क में जो भी वस्तु आती है वो जलकर खाक हो जाती है, वैसे ही क्रोधी मनुष्य के संपर्क में आने वाले लोग भी वस्तुओं की ही भांति कब क्रोध रुपी अग्नि में जल जाए कोई कह नहीं सकता |

गुस्से को जड़ से ख़त्म नहीं किया जा सकता लेकिन इसका उपयोग कैसे किया जाए यह जरुर निश्चित किया जा सकता है और वो तभी संभव है जब आप एक प्रण ले, "जब मुझे गुस्सा आएगा तब चाहें जो भी हो जाए मैं कोई भी फैसला नहीं लूँगा एवं जितना जल्दी हो सकें उस जगह से या उन लोगों से थोड़े समय के लिए ही सहीं दूर चला जाऊँगा, जिनके कारण या जिन पर मुझे गुस्सा आया |"

किसी काम में आप बहुत अच्छे है एवं उस काम को आप कई बार कर चुकें है लेकिन यदि आपनें ध्यान दिया होगा तो जब आप उस काम को शांति पूर्वक करतें है तो उस काम को करनें में जहाँ आपकों मजा आता है वहीं उसका परिणाम भी आपके मन मुताबिक होता है | अब जरा सोचिए, यदि किसी कारणवश आप गुस्से में हो तभी आप से उसी काम को करनें का कहा जाए जिस काम में आप अच्छे है तो क्या आपका मन लगेगा उस काम को करनें में ? क्या आप उसी तरह वो काम कर सकतें है जिस तरह आपनें शांतिपूर्वक पहले किया था ? क्या आप सहीं समय पर उस काम को पूरा कर पाएगे ? क्या आपका ध्यान केंद्रित हो सकेगा ? ये सवाल अपने आप से पूंछिए और जवाब सोचिए | जब आप अपने आप से यह सवाल करेंगे तो शायद एक ही जवाब मिलेगा और वो है- नहीं कर सकता |

लोग बात - बात पर गुस्सा हो जाते है या थोड़ी ही सी बात पर लोगों का दिमाग गुस्से से फटने लगता है फिर उन्हें अपने अच्छे - बुरे का भी ध्यान नहीं रहता | अगर ऐसे में वो कोई काम करें तो शायद अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता कि ऐसे काम का क्या परिणाम होगा ? क्या वो काम पूरा हो भी पाएगा कि नहीं ? कुछ भी नहीं कहा जा सकता |

हमारी जिंदगी में समय सीमित होता है, जो ना ही रुकता है, ना ही आराम करता है निरंतर भागता रहता है | ऐसे सीमित समय को यदि आप बार - बार गुस्से करने एवं खुद को शांत करने और उसके बाद फिर जो रायता आपनें अपने गुस्से में फैलाया है उसको साफ करनें में बर्बाद करतें रहेंगे तो मुझे लगता है कि आपका पूरा कीमती समय केवल इसी में बर्बाद होने वाला है, तो कैसे आप अपनें लक्ष्य को पाने के लिए समय बचा सकेंगे ? अगर थोडा समय बच भी गया तो ज्यादा खुश होने की बात नहीं है क्योकि वो समय केवल पछतावे में ही जाने वाला है क्योकि जब लोग गुस्से में होते है तो उनकों यह पता ही नहीं होता कि वो कर क्या रहें है लेकिन जैसे ही गुस्सा शांत होता है वैसे ही उनको अपनी

गलती का अहसास होता है | जो पछतावे एवं आत्म गिलानी को जन्म देता है जिसका नतीजा होता है केवल मायूसी एवं अकेलापन |

गुस्से के बारे में इतनी चर्चा करनें का मतलब यहीं है कि, आप इस गुस्से को अपना मित्र बना सकें, न कि उसके गुलाम बन जाए | अपनी इस ऊर्जा को अपने लक्ष्य तक पहुचनें की सीढ़ी बना सकें, न कि इस ऊर्जा को व्यर्थ के कामों में खर्च करकें इसे जाया कर दें |

दुनिया में हर चीज को ताकत देने का काम ऊर्जा करती है और यहीं ऊर्जा इंसानों को भी ताकत देने का काम करती है | हमारा शरीर आवश्यक ऊर्जा को खर्च करता जाता है और जो ऊर्जा बचती है उसे भविष्य के लिए संभालकर रख लेता है लेकिन जब हम गुस्सा होते है तो हमारा दिमाग यह समझ ही नहीं पाता कि अब उसे क्या करना है ? जिससे अब तक की संभाल के रखीं गई सारी ऊर्जा को वो गुस्से में लगनी वाली ऊर्जा की पूर्ति के लिए खर्च कर देता है | जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक है क्योकि गुस्से में अत्यधिक ऊर्जा की आपूर्ति के कारण शरीर में ऊर्जा की कमी हो जाती है | जो हमारी कमजोरी का कारण बनती है | वहीं बिना सोच के ऊर्जा की अधिकता के कारण इंसान गुस्से में और भी खतरनाक हो जाता है |

आपनें कई लोगों को पछताते देखा होगा, जो गुस्से में बिना सोचे गलतियाँ कर बैठते है फिर जिंदगी भर पछताते रहतें है लेकिन पछताने से होता क्या है ? जो होना था वो हो गया और अब हम चाहकर भी उसे नहीं बदल सकतें |

मेरी एक ही सलाह है, या तो गुस्सा करना छोड़ दे नहीं तो अपने गुस्से पर काबू पाना सीख लें | तभी आप अपने गुस्सें को अपनी ताकत बनाकर अपनें लक्ष्य पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकेंगे अन्यथा नहीं |

जोखिम

कुछ जोखिम लेना पंसद करते है, तो कुछ जोखिम उठाने से कतराते है, तो कुछ बिना परिणाम की चिंता किए जोखिम लेने को तैयार रहतें है, तो कुछ बिना सोचे - समझे ऐसे जोखिम उठा लेते है जिसका परिणाम उनके लिए ही घातक सिद्ध होता है, तो कुछ जोखिम होने के डर के कारण अच्छे से अच्छे मौके को हाथ से जाने देते है, तो कुछ जोखिम की परवाह उसके मिलने वाले परिणाम से ज्यादा करते है, तो कुछ बिना परिणाम की परवाह किए आगे बड जाते है |

दुनिया में ऐसे तमाम किस्म के लोग होते है जिनकी जोखिम के प्रति राय में तो अंतर होता ही बल्कि उनकी सोच भी एक ऐसे संशय रुपी चक्र से घिरी रहती है जिससे बाहर निकलपाना सबके बस की बात नहीं होती | अधिकतर लोग किसी भी काम में जोखिम लेने से कतराते है | यदि उनके सामने कोई बस काम में जोखिम होने की चर्चा कर दें तो फिर वो उस काम से कोसो दूर भागने लगते है क्योकि ऐसे लोगों की एक ही राय होती है, भलें ही मुनाफा कम क्यों न मिले लेकिन नुकसान नहीं होना चाहिए |

यदि आपकों अमीर बनना है तो आपकों जोखिम लेना सीखना ही होगा अन्यथा आप उतना ही सफल हो सकेंगे जितना कि जोखिम लेने वाले लोग अपनें रास्तें में छोड़ देते है | मैंने अभी तक ऐसा कोई बड़ा मौका नहीं देखा जिसमें कोई जोखिम न हो | जितना बड़ा जोखिम, उतना बड़ा मौका | कोई भी मौका या कोई भी रास्ता शुरुआत में कठिनाईयों से भरा ही प्रतीत होता है जिससे अधिकतर लोग केवल उस रास्तें की कठिनाइयाँ ही देखतें है और बिना उस पर चलें ही लौट आते है लेकिन कुछ कर गुजरनें वाले, जोखिम उठाने वाले लोग रास्तें की कठिनाईयों पर ध्यान न देकर केवल उस मौके को देखकर, जहाँ उस मौके को पाने की कोशिश करतें है, वहीं जोखिम से कतराने वाले लोग केवल बहाने बनाकर बच निकलतें है |

जो लोग बोलतें है जोखिम लेना नहीं चाहिए वो ही लोग अपनी जिंदगी के सबसे बड़े जोखिम का बोझ उठाए फिर रहें होते है फिर भी उस जोखिम पर

ध्यान न देकर दूसरों को जोखिम न उठाने की सलाह देने का काम करतें है | आप अपने आप से एक सवाल पूंछिए- सफलता पाने के लिए कुछ न करना एवं आर्थिक तंगी में ही जीवन यापन करना क्या जोखिम लेने से ज्यादा घातक नहीं है ? यदि आप सफलता पाने के लिए, अमीर बनने के लिए जोखिम लेते है तो उस जोखिम का परिणाम आर्थिक रूप से आजादी के रूप में या अपने सपनें की तरफ कदम बढानें के रूप में प्राप्त होता है लेकिन जोखिम के डर से कुछ न करने का परिणाम केवल आर्थिक तंगी के रूप में ही प्राप्त होता है |

कुछ न करनें का जोखिम मेरे ख्याल से अपनें सपनें के लिए जोखिम लेने से कई गुना ज्यादा होता है क्योकि भलें ही अपने सपनों को पाने का रास्ता काँटों भरा क्यों न हो लेकिन उसका फल कुछ न करनें से कहीं अधिक ही होगा | यदि आप कुछ नहीं करेंगे या रास्तें पर खड़े होकर सहीं मौके का इंतजार करतें रहेंगे तो आप वहीं खडें रहेंगे जहाँ पहलें खडें थे | अगर आपको एक मौका मिल भी गया तो इसकी गारंटी कोई नहीं दे सकता की उस मौके से आप वो दूरी तय कर सकतें है जो आप करना चाहतें थे | यदि आप रास्तें पर खडें होकर इंतजार न कर चलना शुरु कर दे तो धीरे - धीरे ही सहीं चलकर कुछ दूरी तो तय कर ही सकतें है लेकिन यदि आप खड़े होकर इंतजार करतें रहेंगे तो आप वहीं के वहीं खडें रहेंगे, जहाँ पहलें खडें थे |

डरना, जोखिम लेने से कतराना तब तक सही है, जब तक वो आपकी तरक्की के रास्तें में न आए | यदि डर आपकों अपने लक्ष्य से भटकाने लगें तो ऐसे डर को ख़त्म कर आगे बढना ही एक मात्र रास्ता होता है | अगर आप डरकर बैठ जाते है तो हर बार आपकों अपने सपनों की कुरबानी देनी होगी तो इससे अच्छा है कि, सबसे पहलें अपनें डर से लड़कर अपने जीतने के हौसलों को दोबारा जिंदा किया जाए फिर पूरी ताकत से आगे बड़ा जाए |

जोखिम लेने से कतराने की आदत हम सभी में पाई जाती है और एक हद तक यह आदत सही भी होती है क्योकि यदि हारने का डर नहीं होगा तो हम जीतने के लिए उतनी तैयारी नहीं करेंगे जितनी करना चाहिए और जिसका एक

ही परिणाम होगा हार | जब हम किसी काम में जोखिम देखतें है तो उस काम की तैयारी भी अच्छे से करतें है एवं हर छोटी - बड़ी कठिनाईयों का ध्यान रखतें है लेकिन यदि हम बिना सोचे समझे जोखिम उठाते रहेंगे तो उसका परिणाम भी कई बार घातक ही होता है इसलिए बिना सोचे काम करनें का नतीजा कई बार हमें लक्ष्य से दूर कर देता है, वहीं जोखिम के बारें में अत्याधिक डर एवं किसी काम को लेकर ज्यादा सोचना भी उस काम की असफलता का कारण बनता है |

यह आपने कई बार सुना होगा, "अति हर चीज की बुरी होती है |" और यह सहीं भी है | किसी चीज को लेकर उत्सुकता एवं उत्साह होना अच्छी बात है लेकिन यहीं उत्सुकता एवं उत्साह जब अति का रूप धारण कर लें तो हमारी सोचनें - समझने की क्षमता को कम करनें का काम करती है जिसका परिणाम होता है, किसी काम पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाना और गलतियों एवं कमियों को नजरअंदाज करना |

आप यह जानते ही होगे, जब अधूरी तैयारी के परीक्षा देने जाया जाए तो क्या होगा ? ज्यादा कुछ नहीं आप परीक्षा में फेल हो जाएगे लेकिन जिंदगी में जो परीक्षाएं होती है उसमें दोबारा परीक्षा होने की गुंजाइश बहुत ही कम होती है | यहाँ जो होता है वो फाइनल ही होता है | अगर आप फेल होते है तो आपकों फिर से शुरूआत करनी होगी, तभी जाकर आप सफलता पा सकतें है लेकिन सफलता तभी मिलेंगी जब आप अपनी पहली गलतियों को न दोहराएं | अन्यथा आपको तब तक बार - बार शुरूआत करनी होगी, जब तक आप अपनी गलतियों को दोहराना बंद करकें सफलता न पा लें |

सफलताएँ अकेली गलतियों से सीख लेने पर निर्भर न कर आपकी मेहनत, लग्न, ज्ञान एवं समय के आपसी सामंजस्य पर निर्भर करती है | अगर एक भी स्तंभ कमजोर है तो चाहें आप लाख बार शुरूआत क्यों न कर लें लेकिन सफलता तब तक नहीं मिल सकती, जब तक आप इन सभी स्तंभों को ठीक न कर लें |

जोखिम, डर, गलतियाँ, चिंता एवं गुस्सा इन सबसे आपका सामना हर पल होता रहेंगा | जैसे - जैसे आप आगे बडेगे, वैसे - वैसे इनकें अनेको रूप आपके सामने आते रहेंगें | यह आप पर निर्भर करेंगा कि आपकों इनकें प्रति प्रतिक्रिया देनी है की नहीं या कैसे देनी है ? क्योकि ये आपके मित्र तभी तक बने रहेंगें जब तक आप इन्हें सही से काबू में रख सकें, अगर यह आपके मन में चलनें वाले संशय को भाप गए तो वो आपके सामनें वैसा ही रूप धारण करकें आएगे जिनसे आप डरतें हो और आपकों अपने लक्ष्य से भटकाने के लिए जितना हो सकें उतना जोर लगाएगे इसलिए मन में से जीतने के संशय को हटाकर जीतनें के हौसले भरें जिससे चाहें कितनी भी बाधाएं क्यों न आए राहों में, न वो आपकों हरा सकें और न ही डरा सकें |

चिंता

आज - कल जिस तरफ भी देखों, लोग किसी न किसी बात को लेकर चिंता में खोएं रहतें है | कोई काम को लेकर चिंतित है, तो कोई काम न मिलनें के कारण, तो कोई पैसो की तंगी के कारण, तो कोई समय की कमी के कारण, तो कोई परीक्षा में कम नंबर मिलने के कारण, तो कोई परीक्षा में फेल हो जाने के कारण, तो कोई मन का काम न मिलने के कारण, तो कोई अधिक काम करने के कारण, तो कोई बेटे की शादी न होने के कारण, तो कहीं बेटी को अच्छा रिश्ता न मिलनें के कारण, तो कोई कम पैसा मिलने के कारण, तो कोई व्यवसाय में घाटे के कारण, तो कोई अपनें प्यार के कारण, तो कोई ईर्ष्या के कारण, तो कोई लालच के कारण | जहाँ देखों वहां चिंता में डूबे लोग मिल जाएगे |

चारो - तरफ कही पीछे रह जाने की चिंता, तो कहीं आगे बने रहनें की चिंता में लोग इतना डूब गए है कि वो आज में जीना ही भूल गए है | जिसके कारण चाहें बच्चे हो या बड़े या बूढ़े सभी लोग निराशा, तनाव एवं चिंता के गर्त में डूबते जा रहें है फिर भी उनका इस ओर ध्यान ही नहीं जाता और जब ध्यान

जाता है तब तक वो इतना अंदर तक आ चुके होते है, जहां से निकलना असंभव तो नहीं लेकिन मुश्किल जरुर होता है |

किसी न किसी बात को लेकर चिंता सबमें होती है और कुछ समय के बात ख़त्म भी हो जाती है लेकिन यहीं चिंता जब धीरे - धीरे बढकर विराट रुप लेने लगती है तो हमारे लिए समस्या का कारण बन जाती है | यदि वक्त रहतें अपनी बात - बात पर चिंता लेने की आदत को नहीं बदला गया तो जहाँ आपकी यह आदत आपको अंदर ही अंदर परेशान करने का काम करती है, वहीं आपके सुख - चैन को भी ख़त्म कर देती है | जिसका नतीजा होता है केवल समस्या पर ही ध्यान केंद्रित होकर रह जाना | जिस कारण हम समस्या को देख पाते है लेकिन चिंता पर ही अपनें दिमाग को खर्च करने के कारण हम अपनी समस्या पर या कहें किसी भी काम पर ध्यान नहीं देते | जिससे जहाँ हमारी चिंता लगातार बढती जाती है, वहीँ उम्मीद की किरण न दिखनें के कारण मन में निराशा अपना घर बनाने लगती है | जो आपकी छोटी सी चिंता थी अब वो इतना बड़ा रुप धारण कर लेती है कि, जहाँ वो आपके दिमाग को उलझाने का काम करती है, वहीं तमाम बीमारियों को पालने का काम करती है इसलिए कहाँ जाता है, "चिंता करना अपने लिए चिता को तैयार करनें के समान है |"

चिंता एक दलदल के समान होती है | जैसे, दलदल से जितना बाहर निकलनें की कोशिश क्यों न की जाए फिर भी हम उतना ही उसमें धसते जातें है, जितना की बाहर निकलने की कोशिश करतें है | ऐसा ही चिंता में होता है, आप जितना चिंता या तनाव से बाहर आने की कोशिश करेंगे उतना ही आप उसकें चंगुल में फसते जाएगे | चिंता के बारे में सब जानते है कि, यह हमारें लिए और हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है फिर भी इससे बच नहीं पातें |

मेरे आसान से सवाल का जवाब दीजिए- जब हमारी किसी से दुश्मनी होती है तब हम उसकों बिल्कुल भी देखना नहीं चाहतें फिर भी उसकों दिन - रात अपने दोस्तों से ज्यादा याद करतें है एवं उसकी चर्चा करतें है | ऐसा क्यों ? जरा सोचिए |

ऐसा इसलिए होता है क्योकि हम जिससे नफरत करतें है उससे मिलना पसंद नहीं करतें इसी कारण से उस व्यक्ति से हम दूरियां बना लेते है | दूरियां तो हमनें बना ली लेकिन क्या हकीकत में हमनें उस इंसान से दूरी बनाई है ? मेरे ख्याल से नहीं क्योकि उस इंसान के बारे में दिन - रात सोच - सोचकर हमारा ध्यान उस इंसान पर पहलें से ज्यादा केंद्रित जाता है | पहलें तो दिन में एक या दो बार ही उस व्यक्ति से मुलाकात होती होगी फिर उसकें बाद हम उसकें बारे में सोचना बंद कर देते होगे लेकिन अब हम उसको अपनी सोच में पहलें से ज्यादा याद रखतें है और ऐसा ही कुछ चिंता के बारे में कहा जा सकता है | भलें हम चिंता नहीं करना चाहतें लेकिन चिंता के बारें में एवं चिंता के कारण के बारे में दिनभर सोचतें रहतें है जिस कारण हमें अपनी चिंता का कारण तो दिखता है लेकिन उसका उपाय नहीं और उपाय दिखे भी कैसे ? अगर हमारा ध्यान समस्या पर से उपाय पर जाएगा तभी तो उपाय दिखेगा लेकिन हम केवल चिंता के कारण के बारे में सोच - सोचकर परेशान होते रहतें है |

कुछ लोग चिंता के कारण इतना निराश हो जाते है कि वो तनाव में आ जाते है और उनकों महसूस होने लगता है कि, अब उनकें बस का कुछ नहीं, वो नालायक है | अब तो उन्हें मर जाना चाहिए तभी उनसे जुड़े लोगों का कुछ भला हो सकता है और ऐसे लोगों में से कुछ हार मानकर अपनें सपनों को छोडकर मजबूरी में दूसरें काम करनें लगते और बैठकर दूसरों को सलाह देने लगते है कि बड़े - बड़े सपनें देखनें से कुछ नहीं होता क्योकि वो सपनें पूरें तो होने नहीं वाले एवं जब टूटते है तो बहुत दुःख होता है, वहीं कुछ लोग आत्महत्या करनें की कोशिश करतें है इस उम्मीद में कि मरनें के बाद उनकें अपनें जिनसे वो बहुत प्यार करतें है, उनकी कुछ मुसीबतें कम हो जाएगी और अगला जन्म इस जन्म से अच्छा होगा |

मेरा सवाल है ऐसे लोगों से-

1. कैसे आपकें जाने के बाद आपकों प्यार करनें वाले लोग खुश रह पाएगे कभी आपनें ये सोचा है, क्योकि उनकी ख़ुशी तो आपमें थी | यदि आप ही नहीं रहोंगे तो कैसे वो ख़ुश रहेंगे ?

2. अगले जन्म जैसी कोई चीज होती भी है की नहीं, यह कैसे पता आपकों और क्या आप इस बात की कोई गारंटी दे सकतें है कि अगला जन्म आपका इस जिंदगी से बेहतर होगा ? नहीं न |

मुझे समझ नहीं आता लोगों के बारे में की, ये चाहतें क्या है ? जो इनकें पास होता है उसकी तो कद्र करतें नहीं फिर पूजा - पाठ कर कुछ अच्छे जन्म की कामना करतें है, तो कुछ मोक्ष का इंतजार, तो कुछ थोड़ी सी कठिनाई के कारण या छोटे से झगड़ें के कारण या ब्रेकअप होनें के कारण आत्महत्या कर लेते है इस कामना में कि अगले जन्म में वो फिर से नई शुरुआत करेंगे और इस जिंदगी से बेहतर जिंदगी जियेगे लेकिन जो उपहार मिला था उसकी क़द्र तो कर नहीं पायें और अब एक ऐसे ख्वाब पर यकीन कर अपना आज ख़राब कर रहे है जिसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता |

जिंदगी कठिनाईयों से मिलकर बनी है | यदि कठिनाइयाँ न हो तो जैसे आप बिना गाने एवं आवाज की टीवी देखना पसंद नहीं करेंगे, वैसे ही बिना कठिनाईयों के जिंदगी का मजा भी नहीं आएगा | जैसे आवाज, टीवी एवं मनोरंजन की जान होती है वैसे ही कठिनाइयाँ भी हमें अहसास दिलाती है कि, जिंदगी कितनी कीमती है एवं समय कितना सीमित |

हमारे पास कुछ करनें एवं अपनें सपनों को साकार करनें का मौका तभी तक है जब तक हम जिन्दा है उसकें बाद क्या पता लेकिन इसका यह मतलब नहीं की सब छोड़ - छाड़कर बैठ जाए मरनें का इंतजार करनें के लिए | इसका मतलब है कि, यदि आपकें पास इतना सीमित समय है जिसका पता नहीं कब ख़त्म हो जाए तो ऐसे कीमती समय को व्यर्थ की चिंताओं में जाया करना क्या

अच्छी बात है ? जरा सोचकर बताइये | नहीं न, तो आप क्यों अपनें समय को चिंता करनें में खर्च कर रहें है ?

जब आपके घर में कोई भिखारी मांगने आता है तब आप उसे पैसे देते है की नहीं और यदि देते है तो लगभग कितनें ? बताइए |

कुछ लोग भिखारी को पैसे दे देते होगे, तो कुछ नही, तो कुछ एक - दो बार मांगने पर पैसे दे भी देते होगे लेकिन उसकें बाद शायद नहीं | जरा सोचिए, चंद पैसों को जिन्हें दोबारा कमाया भी जा सकता है फिर भी हम किसी को देने से पहलें कई बार सोचतें है एवं किसी को नहीं देते तो कैसे आप अपनें समय को एक ऐसी चीज में खर्च कर सकतें है जो आपको ही नुकसान पहुंचा रहीं है ? यदि आप समस्या पर ध्यान न देकर या फिजूल की बातों को लेकर चिंता करना छोड़ देगे तो वो समय आप किसी और चीज में लगा सकतें है, जो आप समस्याओं के बारे में सोच - सोचकर अपनी चिंता को बढ़ाने में खर्च कर रहें थे |

मुझे अभी तक एक बात समझ में नहीं आई, लोग दिन - रात किसी न किसी चिंता में डूबे रहतें है तो इनकों इतना चिंता करनें के कारण फायदा क्या होता है ? क्या इनकों चिंता करनें के पैसे मिलतें है या चिंता करनें के कारण इनकी समस्याएँ सुलझ जाती है ? मुझे तो अभी तक यह बात समझ नहीं आई, अगर आपकों समझ आ गई हो तो मुझे भी बता दो | अगर चिंता करनें से समस्याएँ सुलझ जाती है या चिंता करनें से कुछ फायदा होता है तो मैं भी आज से चिंता करना चालू कर देता हूँ और आप लोगों से भी यही कहता हूँ कि, आप भी रोज दिन - रात चिंता करें | जो समस्याएं हो उनकें बारे में बैठकर चिंता करें, सोते हुए चिंता करें, खातें हुए चिंता करें, नींद में भी चिंता करें | फिर देखें शायद समस्याएं सुलझ जाएं |

अगर चिंता करनें से कोई फायदा होता तो सभी लोग दूसरों को चिंता न करनें की सलाह न देकर चिंता करनें की सलाह देते एवं डाक्टरों से चिंता करनें की दवाइयां मांगते | जब चिंता करनें से कोई फायदा नहीं सिर्फ नुकसान ही है

तो चिंता क्यों की जाए ? आपकों अब भी चिंता करना है तो करिए, भलें ही आप तनाव से घिर जाओं या कई बीमारियाँ आपकों जकड़ ले फिर भी आपकों चिंता करना है तो करों |

किसी चीज को लेकर थोडा चिंतित होने में कोई बुराई नहीं बल्कि यह हमें उस काम को और बेहतर करनें में सहायता करती है जिससे हम अपने काम की कमियों को समय रहतें दूर कर सकें एवं सफलता पा सकें लेकिन यदि यह चिंता जब सहयोगी की भूमिका से आगे बढकर आपकी सोच को प्रभावित करनें लगे तो इस चिंता को ख़त्म कर बाहर निकलना आवश्यक हो जाता है अन्यथा यह चिंता आपकों धीरे - धीरे अपनें जाल में फसा लेगी इसलिए जितना हो सकें चिंता से दूर रहें |

चिंता से बचाव का यदि सबसे अच्छा तरीका है तो वो है, "अपने लक्ष्य एवं अपनें सपनें पर हमेशा नजर बनाएं रखना और अपने सपनें को पाने के लिए पूरे जोश से कोशिश करतें रहना | आज नहीं तो कल जो आपका सपना है, वो हकीकत होगा |"

अध्याय - 15

ईमानदारी - अपने आप से और अपने काम से

ईमानदारी के बराबर और कोई भी गुण अभी तक संसार में खोजा नहीं जा सका | असंख्य लोग ईमानदारी के बजाय धोखे के नकली सिक्के को चलाने में अपने जीवन को बिगाड़ चुके है | - स्वेट मार्डेन

ईमानदारी को इस पुस्तक के आखिर में शामिल करनें का मतलब यहीं है कि मैं आपकों यह समझाना चाहता हूँ कि जैसे बड़े से बड़े मकान की नींव सबसे नीचें होती है एवं उसी की मजबूती पर निर्भर करता है कि मकान कितना टिक पायेगा, वैसे ही ईमानदारी इंसान की नींव होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि हम कितना ऊंचा महल बना सकेंगे और वो कितना टिकेगा | अगर मकान की नींव कमजोर है तो उस नींव पर बना मकान ज्यादा समय तक टिक नहीं सकता वैसे

ही बेईमानी से आप जल्दी सफलता तो पा सकतें है लेकिन यह सफलता रुपी मकान कब ढह जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता |

अमीर सब बनना चाहतें है लेकिन अमीर बनने से पहलें इस बात का महत्व कहीं अधिक होता है कि आप कौन सा रास्ता अपनी मंजिल तक पहुचने के लिए चुनते है क्योकि मंजिल तक आप पहुंचेगे या नहीं यह अधिकतर मंजिल तक पहुचने वाले रास्तें के चुनाव पर निर्भर करता है |

अधिकतर लोग जल्दी से जल्दी सफलता पाने की चाह में ईमानदारी से कोशिश न करकें बेईमानी का रास्ता अपनाते है | जिसकें कारण भलें ही वो सफल हो जाए लेकिन बेईमानी की नीव पर खड़ी सफलता की इमारत चंद मुश्किलों रुपी हवाओं के थपेड़ों से ही डगमगा कर गिर जाती है | जिसे दोबारा खड़ा करना बेईमान व्यक्ति के बस की बात नहीं होती क्योकि उसको यह तो पता है कि बेईमानी कैसे की जाए लेकिन यह नहीं की ईमानदारी से कोशिश कैसे की जाए |

मैंने अभी तक ईमानदारी के बारे में कुछ जाना है तो वह है कि, इंसान को अपने आप से और अपने काम से ईमानदार जरुर रहना चाहिए | अगर आप अपने आप से ईमानदार नहीं रहतें तो आपको बर्बाद करनें के लिए किसी बाहरी दुश्मन की कोई जरूरत ही नहीं होगी क्योकि आप स्वयं ही अपने आपको बर्बाद करनें का काम कर रहें है तो दुश्मन की क्या जरूरत | यदि आप अपने आप से बेईमानी करतें है तो आप अपनी सोच को एवं अपनी इच्छाशक्ति को जहाँ कमजोर करनें का काम करतें है, वहीं आप अपनी कमजोरियों को नजरअंदाज कर अतिआत्मविश्वास के शिकार हो जाते है और यहीं अतिआत्मविश्वास अक्सर जहाँ हमें सफलता से दूर करता है, वहीं हमारें नुकसान का कारण बनता है |

चाहें आप जो भी काम करतें हो, उस काम के प्रति ईमानदार रहना बहुत जरुरी है, अगर आप सफलता पाना चाहतें है तो | अन्यथा आप चाहें लाख

कोशिशे क्यों न कर लें, जब तक आप अपने काम के प्रति ईमानदार नहीं रहेंगे, तब तक आप सफलता भी नहीं पा सकेंगे |

चाहें कोई भी इंसान क्यों न हो काम सबको करना पड़ता है, चाहें वो सबसे अमीर इंसान हो या सबसे गरीब लेकिन काम सभी करतें है | चाहें किसी के लिए काम करना हो या अपने लिए काम कराना | भलें ही कामों में असमानताएं क्यों न हो लेकिन सभी कामों में हम एक समानता जरुर देख सकतें है और वो है कि काम करनें वाले लोगों में अपने काम के प्रति ईमानदारी की चाह |

ऐसा कोई इंसान नहीं होगा जो अपने लिए एक ईमानदार दोस्त, रिश्तेदार,एम्प्लोयी या बिज़नेस पार्टनर नहीं चाहता हो भलें ही खुद कितना भी बेईमान क्यों न हो लेकिन हमेशा चाह ईमानदार इंसान की होती है क्योंकि बेईमान लोग भी यह भलीभांति जानतें है कि, लाख बेईमानों से भला एक ईमानदार व्यक्ति होता है | जिसे न बार - बार देखनें की जरूरत होती है कि, वो अपना काम कर रहा है की नहीं और न ही धोखा खाने का डर इसलिए सभी लोग ईमानदार लोगों को अपनें पास रखना पसंद करतें है |

आपकों बड़े आराम से अपने आसपास ऐसे बहुत से लोग यह कहतें मिल जाएगे कि, दुनिया तो बेईमानों से भरी पड़ी है जहाँ देखो वहां बेईमान लोग ही नजर आतें है लेकिन यदि इन्हीं लोगों से पूँछ लिया जाए कि आप कितनें ईमानदार हो तो शायद ही कोई जवाब मिलें और जवाब मिलें भी कैसे क्योंकि ज्यादातर लोग न ही अपनें काम में ईमानदारी रखतें है और न ही अपने व्यवहार में | ऐसे लोग भलें ही आराम करनें में अपना समय बर्बाद क्यों न कर दें लेकिन अपनें काम में कामचोरी करना नहीं छोड़ते और फिर बैठकर खुद के अंदर झांके बिना ही दुनिया को कोसतें है कि, पूरी दुनिया बेईमान लोगों से भरी पड़ी है | अगर यहीं लोग दूसरों को कोसने से पहलें अपने आपकों ही थोडा सा बदल लें तो इनकें कोसने के पहलें ही दुनिया में से अधिकतर बेईमान लोग कम हो जाते |

मायने यह नहीं रखता कि दूसरें कितने बेईमान है, मायनें सिर्फ यह रखता है कि आप कितने ईमानदार है |

दूसरें ईमानदार है या बेईमान इसका हमारें लिए कोई महत्व नहीं, अगर महत्व है तो वो इस बात का कि आप ईमानदार है की नहीं |

आपकी सफलता केवल आपके कर्मो पर निर्भर करती है अगर आप ईमानदारी से अपने सपनों के लिए कर्म करेगें तभी आप सफलता पाएगें, अन्यथा नहीं | चाहें अमीर बनना हो या अपनें सपनें पूरें करना हो या सफलता पानी हो, सभी के लिए एक ही चीज की जरूरत होती है और वो है ईमानदारीपूर्वक अपनें कर्म को करतें रहना | यदि आप सफलता चाहतें है तो आपकों अपने काम के प्रति ईमानदार होना ही पड़ेगा अन्यथा आप सफलता तो पा लेंगे लेकिन वह सफलता कब तक टिकेगी यह नहीं कहा जा सकता |

जीवन का फलसफा

अभी थोडा चले है थोडा चलना बाकि है |

अपने लक्ष्य तक पहुचना बाकि है |

लाख रुकावटें आएगी रास्तें में उनको कुचलना बाकि है |

अभी थोडा चले है थोडा चलना बाकि है |

जिंदगी का फलसफा तय तो किया है लेकिन पूरा करना बाकि है |

चाहें आये रुकावटे लेकिन सपना पूरा करना बाकि है |

जिंदगी की जद-दो-जहत में जीना अभी बाकि है |

रुकने को तो है लाख बहाने लेकिन आगे बड़ने के लिए एक बहाना काफी है |

थोडा अपने लक्ष्य तक पहुंचे है थोडा पहुचना बाकि है |

खोने के डर से ज्यादा पाने की ललक जगाना बाकि है |

हारने के भूत को भगाकर उम्मीद का सागर भरना बाकि है |

कुछ खोया, कुछ पाया लेकिन जीत अभी पाना बाकि है |

कुछ अपने छूटे, कुछ सपने टूटे लेकिन दिल की आग जलाएं रखना बाकि है |

खाके ठोकर, गिरकर संभलकर आगे बढ़ना बाकि है |

चाहें आये लाख रुकावटे उनकों नतमस्तक करना बाकि है |

खोकर भी अपने सपने पूरा करना बाकि है |

चाहे छूट जाये अपने लेकिन सपने पूरा करना बाकि है |

सफलता की राह में चाहे आये लाख रुकावटे लेकिन साफलता अर्जित करना बाकि है |

खोने को तो कुछ नहीं है सिर्फ पाना ही बाकि है |

जीतने की राह में कठिनाईयों पर विजय पाना बाकि है |

चाहे रोके आलस या क्रोध का हो दबदबा लेकिन अब अपनी कमजोरियों पर विजय पाना बाकि है |

अब तो मन में ठान लिया है केवल जीतना बाकि |

बहुत रह लिया इन स्थितियों में अब तो इनकों बदलना बाकि है |

सर उठाकर सफलता की राह पर कदम बढाना बाकि है |

सफलता की राह में चाहे अपने आये या दुश्मन आये लेकिन सफलता पाना बाकि है |

ठान लिया है मन में बस अपने आगे बड़ने के ख्वाब को पूरा करना बाकि है |

थोडा चले है, थोडा चलना बाकि है |

आगे बड़ना फलसफा है जिंदगी का बस उडान भरना बाकि है |

ख्वाहिशों को मारकर तो बहुत जी लिए अब बस ख्वाहिशे पूरा करना बाकि है |

नौकरी के लिए तो सब पढ़ते है कुछ सीखने के लिए पढना बाकि है |

घुट - घुटकर मरने से अच्छा कुछ करके नाम करना बाकि है |

जमीन पर तो बहुत चल लिए बस उडान भरना बाकि है |

ख्वाबों को जमीन पर लाकर पूरा करना बाकि है |

दिन - रात किस्मत को कोसने से अच्छा किस्मत को बदलना बाकि है |

दूसरों के लिए बहुत कर लिया अब अपना साम्राज्य बनाना बाकि है |

ईश्वर के दिए इस जीवन को उपयोगी बनाना बाकि है |

शिकायतें तो बहुत कर ली अब उनको दूर करना बाकि है |

थोडा चले है थोडा चलना बाकि है | सफलता को अब सिर्फ पाना बाकि है |

मेरी 1st बुक

होप्स एंड मिस्टेक्स (*Hopes and Mistakes*)

यह कहानी 18 की उम्र मैं होने वाले प्यार, दोस्ती एवं

गलतियों की है जिससे प्राय: हम सभी गुजरे है |

लेखक के बारे में

Hi, मेरा नाम अंकित सिंह राजपूत है | मुझे आप इंटरप्रेन्योर, लेखक, छात्र, शिक्षक, डेवलपर, वेबसाइट, गेम एवं एजुकेशन एप ऑनर, आदि कुछ भी कह सकतें है | यह मेरी दूसरी बुक है |

अगर आप वो ही गलतियाँ नहीं दोहराना चाहतें जो अधिकतर लोग दोहराते है तो आपका स्वागत है, एक ऐसे सुनहरें भविष्य में जो आपकें आज से बेहतर होगा लेकिन आप इसे तभी बेहतर बना सकतें है, जब आप आज से और अभी से इसकी शुरूआत करें |

उम्मीद है कि बुक आप सभी को पसंद आएगी | यदि आपको बुक पसंद आयी तो *Please Review* देना न भूले |

Follow me on facebook - AnkitRajpoot9755

Thanks for reading! Please add a short review on Amazon and let me know what you thought!

Thanks and good luck!

Ankit Singh Rajpoot